प्रकाशक—
आर० आर० बेरी,
२०१ हरिसन रोड, कलकत्ता।

निवेदन

कोई सज्जन इस नाटकको विना हमारी आज्ञाके अभिनीत करनेका प्रयत्न न करें

मुद्रक—गोविन्दराम हा
"वैदिक प्रेस"
२० कार्नवालिस स्ट्रीट,

पात्र परिचय
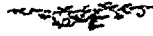
पुरुष ।

स्वतन्त्र भगवान—एक प्रधान ईश्वरीय शक्ति ।

देश ···	··भारतवर्ष ।
अभिमान ··	···भयङ्करभूत ।
सत्य, धर्म, प्रेम ···	···देवता विशेष ।
उग्रसेन ···	·· उग्रनगरका राजा ।
रूपसेन ···	...उग्रसेनका पुत्र ।
बुद्धिसेन ···	···मन्त्री ।
शान्तिसेन ···	···शांतिनगरका राजा ।
सेनापति ···	· प्रधान सेनाध्यक्ष ।
स्वार्थावलम्बन ···	...उग्रनगरका पुरोहित तथा रूपसेनका मित्र ।
ज़मानिशाह ···	···यहूदियोंका सरदार ।
नइअरे आलम ··	···इसलामियां देशका राजा ।
सोलारजंग ···	···प्रधान सेनापति ।
मि०सी०आर०गुप्ता—	—आधुनिक समयका एक चलता पुर्जा व्यक्ति ।

॥ श्रीहरिः ॥

भूमिका ।

कोटिशः धन्यवाद है! उस सर्व-शक्तिमान, समदर्शी, सगुण, साकार स्वरूप-सच्चिदानन्द, सर्वात्मा, परब्रह्म परमात्माको, जिसने सांसारिक रङ्ग-स्थल पर समस्त सचराचरोंको पात्रोंकी पंक्तिमें परिणत करनेकी असीम कला-कौशलता दिखाई है और यह उसीकी अनिवार्य चेष्टाका फल है कि इस भौगोलिक रङ्गमञ्च पर प्रति दिन प्राय: कितनेही मनोहर दृश्योंसे परिपूर्ण अभिनय महामतो माया देवीकी कार्य-पटुतासे अभिनीत होते हैं और पलक मारते ही उनकी इतिश्री भी हो जाती है। अतएव इस महा अभिनयकी समालोचना मेरे लिये वैसो ही है जैसे कि धरातल से सुधाकरका मुख मण्डल-स्पर्श, परन्तु केवल "भयङ्कर-भूत" का दिग्दर्शन मात्र कराना मेरा कर्तव्य है। इसलिये मैं इसी विषय पर दो एक शब्द लिखता हूं।

भारतवर्षमें आज ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं है जो, वैमनस्य व्यवहारके प्रधान नेता अभिमानका नाम न जानता हो। इस अभिमानकी कितनी प्रबल-शक्ति देशके घर-घर तथा समाजके प्रत्येक व्यक्तियोंकी नस नसमें व्याप रही है, यही दिखलानेका उद्योग भयङ्कर-भूतमें किया गया है। यद्यपि यह अभिनय मेरी तुच्छ कल्पनाओंका केवल संग्रह मात्र है, किन्तु दर्शकों तथा

ज़मानिशाह रूपसेनके हाथमें पिस्तौल मारता है रूपसेन गिरता है ज़मानिशाह भागता है। देखिये [पृष्ठ संख्या ७८

पाठकोंका मनोरञ्जन करनाही इस नाटकका कर्त्तव्य नहीं है, बल्कि जनताको उपदेश देनेके लियेही "भयङ्कर-भूल" की कल्पित मूर्त्ति खड़ीकी गई है।

पाठक तथा दर्शक वृन्द उग्रसेनकी दशासे ही विचार सकते हैं कि इस भूतके सेवकोंकी कितनी शोचनीय अवस्था होती है। इसके अतिरिक्त अन्य पात्रोंका कर्त्तव्य आपको स्वयं विदित हो जायगा, मुझे बतलानेकी कोई आवश्यकता नहीं है। अस्तु, एक विषय इस नाटकमें ऐसा है कि जिसके लिये हिन्दीके प्रधान पण्डित लोग पूर्ण आक्षेप कर सकते हैं। वह बात केवल भाषाकी मीमांसा मात्र है। मैं विश्वास करता हूं कि हिन्दीके पूर्ण विद्वानों का यह प्रश्न सर्वथोचित है कि हिन्दीके नाटकमें उर्दूका आधिपत्य क्यों है? अभिमतमें हमारे मित्रवर श्रीयुक्त बाबू बल्देव प्रसादजी खरेने इस विषय पर अपना मन्तव्य भी प्रकट किया हैं किन्तु मैं इसका उत्तर यही दे सकता हूं, कि आज कल उर्दू कम्पनियोंने उर्दू-ड्रामा खेलकर जनताकी रुचि उर्दू भाषाकी तरफ़ फेर दी है और यही कारण है कि हिन्दुस्तानके अधिक प्रान्तोंमें उर्दू शब्दों का प्रचार है। अतएव ऐसे भाषा-रोगियोंको हिन्दीकीही क्लिष्ट औषधि सेवन कराना जरा टेढ़ी खीर है। इसीलिये मैंने उर्दू वासनीकी सहायतासे हिन्दीका चस्का डालनेका प्रयत्न किया है। सम्भव है कि उर्दूके साथ साथ हिन्दी पढ़नेसे जनता कुछ दिनों में केवल हिन्दीका ही सम्मान करने लगे। विशेषतः उर्दूके रहते हुए भी इसमें हिन्दी भाषाके गौरवका पूरा ध्यान रखा गया है

शांतिसेन, राना और रती वृक्षमें बंधे हैं उग्रसेन तलवार मारता है रूपसेन जाकर बचाता है। देखिये [पृष्ठ सख्या १००

यदि इतने पर भी कुछ सज्जनोंको सन्तोष न हो तो मैं खरेजीकी ही बात मान लेता हूं, यानी आज कल जब कि वेश्या-विवाह, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, विधवा-विवाह ये सभी विवाह-प्रचलित हैं तो इस ब्राह्मण शरीरने उर्दू बीवीसे सम्बन्ध कर कौनसा अनर्थ कर डाला। अस्तु मेरा दोष क्षम्य है!

बजरङ्ग परिषद्
२०१ हरिसन रोड, कलकत्ता।
२७-२-२५

भवदीय—
सरयू प्रसाद 'विन्दु'

अभिमत।

इस भूमण्डल पर नाटकसे बढ़कर सच्चे आनन्दका दूसरा स्थान नहीं है। इस आनन्दका अनुभव और स्थानका पता सबको नहीं है। इसके जाननेवाले विरले ही योगी होते हैं, किन्तु ऐसे महान योगियोंकी संख्या अत्यन्त न्यून है। यही कारण है कि नाटक जैसे पवित्र सम्प्रदायका जोरदार प्रचार नहीं होता। इसके कुछ और भी कारण हैं। जैसे प्रत्येक नाट्य-मन्दिरके महन्तका स्वयं कर्त्तव्य-पथसे पृथक रहना, दूसरे उस मन्दिरमें योग्य अभ्यागतों या पात्रोंको सम्मिलित न कर, उस सम्प्रदायका आदर्श घटाना, किन्तु यह कमी पैसेकी लालचसे आज तक ज्योंकी त्यों बनी है। हमे दुःखके साथ लिखना पड़ता है कि ऐसे पवित्र और उन्नत पथके प्रदर्शक नाट्य-मन्दिरोंमें वेश्याओं और विधर्मियोंकी खासी पैठ है।

इन मन्दिरोंके रंग-स्थल पर विशेष चमत्कारके साथ प्रतिदिन धार्मिक, ऐतिहासिक सामाजिक लीलायें हुआ करती हैं। योरोपमें भी ऐसे मन्दिरोंकी संख्या अधिक है और वहाँके महन्त व्यास और अभ्यागत मिलकर समयानुसार राज्य-परिवर्तनकी लीलायें भी करते रहते हैं, तब भी उनका कोई बाल बाँका नहीं कर सकता। लेकिन भारतमें इस सम्प्रदायके भक्तोंको एक भी ऐसी लीला करनेका अधिकार नहीं।

इन लीलाओंका मूल दायित्व व्यासके ऊपर जिसे आजकल नाटककार और नाट्याध्यक्ष-कहते हैं, रहता है। वही एक सच्चा मदारी है, जिसके इशारे पर समस्त पात्र नाचते कूदते हैं। ऐसी दशामें नाटककारमें कैसी योग्यता होनी चाहिये, पाठकवृन्द स्वयं समझ सकते हैं।

प्रस्तुत नाटक "भयङ्कर-भूत" श्रीयुत पण्डित सरयू प्रसादजी शर्म्मा "बिन्दु"की सुलेखनीका लिखा हुआ है। आप मेरे विशेष मित्रोंमेंसे एक हैं। आपके नाटकोचित समस्त गुणोंसे हमे भली भांति परिचित हैं। अस्तु, आपके गुणोंकी जितनी आलोचना समालोचना हम कर सकते हैं दूसरा नहीं। आप गायनकलाके जितने अपूर्व ज्ञाता हैं, उतने ही हारमोनियम बजानेमें विशेष कुशल हैं। आप रंग-मंचके जितने अधिक अनुभवी हैं उतना ही अधिक नवीन भावोंके योग्य आविष्कारक हैं। इतना ही नहीं, आपको कई एक नाट्य-मन्दिरोंके व्यास पदपर रहनेका सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। आप धुरपद धम्मारसे लेकर छोटीसी छोटी चीज़ तक बड़े मजेसे गाते हैं। जनता चित्रवत रह जाती है। अन्तमें सब यही कहते हैं कि वाह, वाह। और हारमोनियम भी आप इतनी उत्तम बजाते हैं कि वाह! "भयङ्कर-भूत" आपकी नयी भावनाओंका अद्भुत नमूना है। इसे भी पढ़कर हम फिर कहते हैं वाह, वाह, चूमने लायक भावोंको ठूंस-ठूंसकर भर दिया गया है। पढ़ते पढ़ते कभी हृदय आनन्दके मारे उछल पड़ता है, कभी क्रोधकी प्रचण्ड-ज्वाला धधक उठती है, कभी प्रेमके प्रशांत

सागरमें प्रवाहित होना पड़ता है। वास्तवमें "यथा नामः तथा गुणः"के अनुसार यह "भूत" जिसके सरपर सवार हो जायगा या जिस नाट्य-मन्दिरमें आसन जमायगा, वहांके महन्त और अभ्यागतों की नस-नस ढीली कर देगा।

मुझे आश्चर्य है कि इसके रचयिता शर्माजीने, हमसे पृथक होते ही "उर्दू बीवी"से क्यों नाता जोड़ लिया? जान पड़ता है कि, उर्दू की थियेट्रिकल कम्पनियों मे रहनेके कारण 'उर्दू बीवी'से प्रेम करनेका "नया भूत" सवार हो गया है। अच्छी बात है, तो इसका दण्ड भी यही है कि शीघ्राति शीघ्र शुद्ध हिन्दी भाषामें एक दूसरा आदर्श नाटक लिखकर हमे प्रसन्न कर दें।

हम इस भूतके सम्बन्धमें जो कुछ लिख चुके हैं सम्भव है इससे पाठकवर यही समझें कि मित्रताके कारण ऐसा लिखा गया है, किन्तु बात ऐसी नहीं है। मुझे विश्वास है कि इस नाटकका हिन्दी संसारमे खासा सम्मान होगा। इसका प्रत्येक दृश्य उपदेश से परिपूर्ण है देश-भक्तिकी खासी झलक झलकाई गई है। ऐसे उपयोगी और शिक्षाप्रद नाटक लिखनेके उपलक्षमें हम शर्माजीको हृदयसे बधाई देते हैं और उर्दू बीवी सम्बन्धी प्रार्थना पर ध्यान देनेके लिये पुनः आग्रह कर अपना वक्तव्य समाप्त करते हैं।

फाल्गुन वदी ५
कलकत्ता।

नाटक प्रेमियोंका सेवक,
बलदेव प्रसाद खरे

प्रोप्राइटर — —मैनचेस्टर क्लाथ एजेन्सीका मालिक।

जड़बुनियाद — —मिस नैनीका नौकर।

बशीर, नसीर, मुनीर — —इसलामियांके धूर्त नागरिक

सिपाही, चौपदार, द्वारपाल, दूत इत्यादि।

—:※:—

स्त्रियां।

रानी — —शान्तिसेनकी स्त्री।

रती — —कन्या।

चम्पा, चमेली, नवेली — —रतीकी सहेलियां।

नैनी — स्वार्थावलम्बकी स्त्री।

सहेलियां दासियां प्रभृति।

स्थान।

उग्रनगर, शान्तिनगर, इसलामियां।

भयंकर भूत

विशेष दृश्य

(सहेलियोंकी वन्दना)

गाना

नमन करो लाज रखइया श्री कृष्ण कन्हइयाको
गोकुल वारे नन्द दुलारे, पालन हारे जगके प्यारे
मुरली धरन दुःख हरइयाको ॥ नमन० ॥

दोहा—सहित राधिकाके प्रभो, दीजै यह बरदान।
"बिन्दु" हिन्दके हृदयसे, हर लीजै अज्ञान ॥

विपदहरण, सुभगवरण, मंगलकरण, युगल चरण,
करुण सुनावो करुणाकी कथा सुनइयाको ॥

(सहेलियोंका गाते हुए प्रस्थान)

———:———

प्रथम दृश्य

स्थान—जंगल।

(वृद्धावस्थामें देशका दीन वेशमें प्रवेश)

देश पर आघात असमयका भयंकर हो गया।
आब थी हीरेकी जिसमें आज पत्थर हो गया॥
हाय इस दुर्दैवका विपरीत चक्कर हो गया।
जिसको समझे थे सपोला नाग विषधर होगया॥
जो कि थे आदर्श सच्चे एक ज़मानेके लिये।
आज वह मुहताज हैं भारतमें दानेके लिये॥

(आवाज़ का होना अभिमानका रूपसे निकलना)

अभि०—किस लिये सोचा न था पहिले इसी अञ्जामको।
क्यों बनाया था स्वतन्त्र एक नीच तुच्छ गुलामको॥

[illegible]—

यों मिटे संसारसे बाकी न रखा नामको।
और भी होता है क्या वह देखना परिणामको॥
फिरने वाली है दुहाई देशमें अभिमानकी।
सारी शक्ति पीस डालूंगा मैं हिन्दोस्तानकी॥

देश—कौन? नारकी नराधम, नरपिशाच अभिमान? हा, भगवान! कैसा अमानुषिक व्यवहार!! कैसा कठोर प्रहार!!! अरे निर्दयी! कुछ तो दया कर ज़रा भी अनीति और अधर्मसे डर। मैं तेरेही अत्याचारोंसे बूढ़ा हो गया। तूने ही मेरे सहायकोंको भिखारी बना दिया। तूने ही मेरी सारी शक्तियां नष्ट कर डालीं। अरे, अब तो मुझे छोड़ दे। मैं अपनी जनताके लिये एकही पूजनीय देवता हूं। मैं वृद्धोंकी लाठी, जवानोंकी तलवार और बच्चोंका खिलौना हूं। नरोंमें गौहर और स्त्रियोंमें चमकता हुआ सोना हूं। मुझे न सता! मुझे न जला!! मुझे मिट्टीमें न मिला।

बहुत कुछ ज़ुल्म तूने कर लिया हैं बे गुनाहों पर।
मगर अब तो रहम कर दे हमारे ग़मकी आहोंपर॥
पड़े पर्दे हैं आंसुके हमारी इन निगाहों पर।
न करना चाहिये इतनी हुकूमत बादशाहों पर॥
बदलना छोड़कर कुछ तो संभाल अपनेको आपेमें।
मुझे बरबाद क्यों करता है ऐ ज़ालिम बुढ़ापेमें॥

अभि०—करूंगा और ज़रूर करूंगा। जबतक तुम्हें अच्छी तरह बरबाद न कर लूंगा तब तक दम न लूंगा। उन

दिनोंको याद करो कि जिन दिनोंमे तुमने रावण, कंस, कालयवन आदि मेरे अनन्य भक्तोंको इस निर्दयतासे मारा था कि अन्त समय उनको जलदान देनेवाला भी कोई न रहा। क्या वह दिन भूल गये जो आज मुझसे रहमकी भीख मांगते हो ?

अपना ख़ूनी अपना क़ातिल अपने दुश्मनपर रहम।
अपने घरके चोर, डाकू और रहज़न पर रहम॥
मेरी मिट्टी ज़ुल्मकी है मैं करूं क्यों कर रहम।
क़ायरों के हृदयमें होता ही है अक्सर रहम॥
मेरी ख़ाहिश है कि सब पर ज़ुल्मका फ़रमान हो।
क्या ग़रज़ हमको कोई बूढ़ा हो या नादान हो॥

देश—अरे नही, नहीं; ऐसा न कर वरना मै मर जाऊंगा। मेरे बच्चे तबाह हो जायेंगे, मेरी शक्तियां वेश्या बनकर अन्य देशोंसे सम्बन्ध कर लेंगी। मेरा ताज गुलामोंकी ठोकरोंका खिलौना बन जायगा।

हमारी ही बदौलत तुमने यह रुतबा चढ़ाया है।
हमारी जानसे ही तुमने यह आराम पाया है।
हमारा घर बिगाड़ा और अपना घर बनाया है।
उसीपर ज़ुल्म करते हो कि जिसका नमक खाया है॥
करेगा दिल जलोंका पक्ष वो जो खुद जला होगा।
हमारा तुम भला करदो तुम्हारा भी भला होगा॥

अभि०—यह भिखारियोंका तराना वहां जाकर सुनाना जहां

धर्मकी टट्टी लगाकर व्याध लोग जनताका शिकार करते हों। जहांके गुरु उपदेशक एक मन्त्र देकर ही भक्तोंका बेड़ा पार करते हों।

ये माना तुम हमारे बादशाहे मुल्क भारत हो।
समझ यह भी है तुझको तुम दुखी हो दीन आरत हो॥
मगर मेरी है ये ख़ाहिश जहा मेरी विजारत हो।
वहाँ कौमी हमीयत जिस कदर हो जल्द गारत हो॥
हमारे ज़ुलमका सिक्का जहांमे नामजद होगा।
हजारों नेकियां कर लो पवज़ नेकीका बद होगा॥

देश—ओफ! जुल्म और इतना कड़ा जुल्म!
अभि०—तुम्हारे जैसे बेकारोंके लिये!
देश—बेरहमी और इतनी सख्त बेरहमी?
अभि०—तुम्हारे जैसे लाचारोंके लिये।
देश—क्या आश्रय देनेका यही परिणाम है?
अभि०—पुरुषार्थ करना वीरोंका काम है॥
देश—तो क्या मैं तुमसे कोई आशा न रखूं?
अभि०—न रखो, न रखो—जिस तरह एक गरीब गाय अपने ही दूधसे पाले हुए कसाईकी तलवारके नीचे गर्दन झुकानेके वक्त कोई आशा नहीं रखती, उसी तरह तुम भी मुझसे कोई आशा न रखो—

मुझसे रखते हो भला उम्मीद किस दिनके लिये?
मैं हूं वो दुश्मन कि जिसने बदले गिन २ लिये॥

मेरी आदत एक है बूढ़े व कमसिनके लिये।
बादशाहे जुल्म हूं मैं अब तो कुछ दिनके लिये ॥
दिल जलोंको खाक करनेके लिये मैं आग हूं।
दिलमें छिपकर काटता हूं मैं काला नाग हूं ॥

देश—तू कुछ भी हो परन्तु मेरी निराश प्रार्थनापर ध्यान कर।
मुझे इस दीन दशामें जीवित रहने दे, केवल इतना ही कर।
मैं हूं तेरी गाय तू मेरे लिये उपकार कर।
गो बुरा हूं या भला हूं फिर भी मुझको प्यार कर ॥
देख फिर कहता हूं इसको सोच समझ विचार कर।
मांगता हूं भीख इस बूढ़ेका बेडा पार कर ॥

अभी—खैर, तुझे अपनी जिन्दगीपर इतना प्रेम है तो मेरी एक शर्त स्वीकार कर।

देश—वह क्या ?

अभि०—सिर्फ यही कि तेरे सच्चे साथी जो सत्य, प्रेम और धर्म हैं, उन्हें मेरा बन्दी बना दे।

देश—बस चुप चाण्डाल। क्या तू यह चाहता है कि मेरी मौत ऐसी नीच दशासे हो कि जिस तरह एक शेरको लोहेके पींजड़ेमें जकड़ कर शिकारी लोग उसे तलवारसे नहीं बल्कि उपवास करा कर मार डालते हैं। मैं नष्ट हो जाऊंगा—पातालमे समा जाऊगा मगर अपने उन मित्रोंको तेरा बन्दी कभी न बनाऊंगा।

अभि०—क्या मेरे कैदियोंको दे देना तुझे स्वीकार नहीं ?

देश—एक वार क्या हज़ार बार नहीं।

अभि०—देखो पछताओगे।

देश—सम्भव है।

अभि०—अच्छा न होगा।

देश—बुरा क्या होगा?

अभि०—पनाहे न मिलेगी।

देश—उसको जो इस कद्र ज़ुल्म पर आमादा है।

अभि०—मगर तेरी जिद मेरे जुलमसे ज्यादा है।

देश—शायद ऐसा हो।

अभि०—ओफ, यह शेखी, यह शान! ओ शैतान हिन्दोस्तान! याद रख कि अब तू वह दिन देखना चाहता है कि तेरे बच्चे भीख मांगते नजर आयें। तेरी बहन, बेटियां विधवा हो जांय। तेरे सहायक सत्य और धर्म म्लेच्छोंकी ठोकरोंसे उड़ा दिये जांय। ओ मगरूर! सुन और याद रख यह मेरी आखिरी प्रतिज्ञा है

मैं हूं आज़ाद किसी देशका गुलाम नहीं।
किसीकी इज़्ज़तो हुरमतसे मुझे काम नहीं॥
तिश्न लब होंगे तुम पानीका होगा जाम नहीं।
तुम एक पलके लिये पाओगे आराम नहीं।
न रोये तुम तो फिर अभिमान मेरा नाम नहीं॥

(प्रस्थान)

देश—(स्वतः)

इसने ग्रहण किया है पैशाचिक अधर्मको

सहनेको मैं तयार हूं इसके दुष्कर्मको ॥
लेकिन सम्हलना चाहिये हमें भी अब ज़रूर।
इसलिये बुलाता हूं प्रेम, सत्य धर्मको ॥

(देशका ताली बजाना—प्रेम-सत्य-धर्मका प्रकट होना)

तीनों—कहिये महाराज! क्या आज्ञा है?

देश—मित्रो! क्या तुम जानते नहीं कि अभिमानने हमारे ऊपर जुल्मका शस्त्र उठाया है? इसीसे हमने तुम लोगोंको अपनी सहायताके लिये बुलाया है।

तीनों—हम जान वो दिलसे आपका साथ देनेको तैयार हैं।

देश—अच्छा तो प्रेमदेव! तुम जावो और राजा उग्रसेनके पुत्र रूपसेनको अपने वन्धनमें फंसाओ।

प्रेम—जो आज्ञा। (प्रस्थान)

देश—धर्मदेव! तुम जावो और राजा शांतिसेनके हृदयमें अपना प्रभाव जमावो।

धर्म—जो आज्ञा। (प्रस्थान)

देश—सत्यदेव! तुम भी प्रस्थान करो और राजा शांतिसेनकी लड़की रती कुमारीके हृदयमें निवास स्थान करो।

सत्य—जो आज्ञा (प्रस्थान)

देश—गये, गये, मेरे सच्चे सहायक मेरी सहायताको तैयार हो कर गये। अब देखना चाहिये कि परमात्मा क्या करता है।

क्या सितम पड़ते हैं हम पर आज़माना चाहिये।
ग़मके जो बोझे हैं खुद सर पर उठाना चाहिये ॥

हे प्रभू अब तुमको नंगे पैर आना चाहिये।
शर्म इस बूढ़ेकी तुमको ही बचाना चाहिये॥
है यह ख़ाहिश दूर दुनियांसे असद व्यवहार हो।
तेरी रहमतसे दुखी भारतका बेड़ा पार हो॥

(प्रस्थान)

स्थान—पुष्प-वाटिका ।

(सहेलियोंका गाते हुए प्रवेश)

डाली झुकी है गुलशनकी क्यारीमें, फूलोंकी कैसी कतार!
बेशुमार—हां-हां-हां ॥
फस्ले बहारी है फुलवारीमें कलियोंमें आया उभार ।
बेशुमार—हां-हां-हां ॥
क्या ख़ुश तराना हैं बुलबुलोंका, भौंरोंकी भीर हजार ।
फुलोंकी कैसी कतार, बेशुमार—हां-हां-हां ॥

चम्पा—क्या ख़ुशनुमा कतार है पानीके धारकी ।
चमेली—गुलशनमें आ गई है अब मौसिम बहारकी ॥
नवेली—फूलोंमें समाई हैं क्या रंगत गुरूरकी ।
अलबेली—ख़ामोश हो, आती है सवारी हुजूरकी ॥

(रतो कुमारीका प्रवेश)

चम्पा—सरकार आइये ।

चमेली—तशरीफ लाइये ।

राजकुमारी—अरी वाह! मेरे आतेही हुजूर और सरकारकी बौछार पड़ने लगी । सचमुच तुम सब बड़ी बेशर्म हो ।
तहज़ीब वो अदब तुममें जरा छू गया नहीं ।

बेहद मज़ाक करती हो शर्मो हया नहीं।

चम्पा—हुस्न है सखु़न फहम मगर सादी क्यों नहीं।

कुछ बे तकल्लुफ़ी है मगर बेहया नहीं॥

रती—अरी बस रहने भी दे, तूतो बड़ी भोली है। क्योंरी चमेली! तू जो उस रोज कहती थी कि मैं अपना गंधर्व विवाह करूंगी, तो भला गंधर्व विवाह किसे कहते हैं?

चमेली—प्यारी! जो विवाह माता-पिताकी सम्मतिसे होता है, वह पैतृक विवाह कहलाता है और जो वर-कन्याकी इच्छासे होता है वह गंधर्व विवाह कहलाता है।

रती—तो फिर क्या तेरे माता-पिताने तेरे लिये वर नहीं ढूंढ़ा?

चमेली—ढुंढ़ा तो है—मगर उस घरानेका तौर बेतौर है।

अलबेली—अरी असली बात तो यह है कि इसका चाहनेवाला कोई और है।

रती— छिः छिः!! क्या सुशीला कन्याओंको अपनी इच्छासे वर ढूंढ़ लेना चाहिये? यह तो बड़े शर्मकी बात है।

चमेली—प्यारी! इश्क बड़ी बुरी बला है, जबतक सर पर नहीं पड़ती है; तबतक ख़बर नहीं होती है।

रती—अरी जा जा! रहने भी दे!! तुझको तो ख़बर होगई है न।

चमेली—मुझे तो ख़बर हो गई है मगर थोड़े दिनमें सरकारको भी ख़बर होनेवाली है।

किसी आशिकके दिलमें बैठकर जब भूल जावोगी।

हमें उपदेश जो कुछ दे रही हो, भूल जावोगी ॥

रती—अरी चुप, यह इश्क क्या बला है ?

चम्पा—प्यारी ! दुनियांमें सबसे ज्यादा तो इसीका मामिला है ।

जवानी रंग लायेगी तो कहनः मान जावोगी ।

हज़रते इश्कको भी धीरे, धीरे जान जावोगी ॥

रती—खैर चुप भी रहो । अरी चम्पा ! जा और बाग़से थोड़े फूल चुन ला मैं यहां बैठ कर हार बनाऊंगी ।

अलबेली—प्यारी! हार बनाना,मगर हार बनाते बनाते खुद किसी के गलेका हार मत हो जाना ।

रती—अरी जा, जा; तुझे तो हरदम हंसी सूझती है ।

अलबेली—प्यारी ! हंसी नहीं हमको बडी दूरकी सूझती है ।

रती—देखो तुम सब ज्यादा सताओगी तो मैं यहांसे चली जाऊंगी ।

चम्पा—अच्छा प्यारी ! नाराज़ न हो हम सब यहांसे जाती हैं ।

(सहेलियोंका जाना, रती कुमारीका एक लताको आड़में कोचवर छोड़ना, रूपसेन और पं०—स्वार्थावलम्बका प्रवेश)

रूप—पडितजी यह बाग़ तो जनाना है ।

स्वा०—जी हां, आपको नज़रोंमें तो सिर्फ बागही जनाना है, मगर मेरी नज़रोंमें तो यह सारा ज़माना ही जनाना है । लेकिन आप क्यों घबड़ाते हैं ? सेवक तो मर्दानोंमें मर्दाना और जनानोंमें जनाना है । क्योंकि—स्वार्थम् मूल मंत्रस्य परमार्थम् सर्वस्व नाशनम् ।

रूप०—मैंने बड़ी भूलकी जो बिना सोचे समझे यहां चला आया।

स्वा०—अजी इसमें आपका क्या कसूर है। इस बाग़में तो चुम्बक पत्थर है जो आपको खींच लाया।

रूप०—अब क्या करना चाहिये?

स्वा०—गीताका पाठ करना चाहिये।

रूप०—वाह! तुम्हारी भी क्या अक्ल है?

स्वा०—हुज़ूर अक्लको तो मैंने स्पेशल सार्टीफीकेट लेनेके लिये विलायतकी कौंसिलमे भेज दिया है, ताकि कांग्रेस कमेटी वालोंसे बहस करनेमे मेरा नम्बर फार्स्ट रहे।

रूप०—यह बात है? तब तो तुमसे सलाह लेना भी फजूल है।

स्वा०—यह किस लिये?

रूप०—इसलिये कि बेअक्लोंकी सलाह किसी कामकी नहीं होती।

स्वा०—सरकार यह आपकी भूल है, काम पड़ने पर बे अक्लोंकी सलाह बहुत काम देती है।

(रूपसेनका रतीकुमारीको देखना)

रूप०—हैं, यह कौन? आकाशकी परी या ज़मीनकी सुन्दरी! अथवा परमात्माकी सबसे बढ़कर कारीगरी! नहीं, नहीं; मेरी आंखें मुझको धोखा दे रही हैं, शायद मै स्वप्न देख रहा हूं। हैं! फिर वही दृश्य? क्या यह बाग सचमुच परिस्तान है? क्या दुनियामें सुन्दरताका सबसे यही ऊंचा स्थान है। बेशक खूबसूरतीका नक़शा-सुन्दरताका साँचा-बदरे मुनीर-जिन्दा जादूकी तस्वीर यही है!

खूब सूरती क्यों नहीं होती ज़बानसे।
गोया उतर आया है चांद आस्मानसे॥

खा०—या परमात्मा बचाना। कुंवर साहबको तो दिन दहाड़े चाँद सितारे नज़र आने लगे। क्यों हुजूर? इस बागमें किसी परीका साया देख पाया या किसी भूतने धर दबाया, जो जमीन पर चांद नजर आया?

रूप०—पंडितजी मेरा दिल तो किसी शिकारीका शिकार होगया।

खा०—लीजिये, "आये थे हरि भजनको ओटन लगे कपास" हुजूर आपका दिल तो शिकार हो गया मगर मेरा दिल मारे खौफके फ़रार हो गया।

रूप०—हाय! अब क्या होगा।

खा०—जो कुछ भाग्यमें बदा होगा।

रूप०—हम तो बेमौत मरे।

खा०—अरे हां-हां, खबरदार अगर मरना ही है तो थोड़े दिन ठहर कर मरियेगा, अभी मर जाँयगे तो कांग्रेस कमेटी वालोंकी कृपासे गाढ़े का कफन ही नसीब होगा।

रूप०—पंडितजी। तुम्हें तो हंसी सूझती है।

खा०—जी नहीं, मुझे तो रोना आता है। मगर क्या करूं रोया नहीं जाता।

रूप०—तीरे नजरका वार बस, ज़ालिमका चल गया।
हलूसे मेरी हाय आज दिल निकल गया॥

खा०—चिकनी ज़मीन पर दिल हुजूरका फिसल गया

वंदेकी जिन्दगीका दिवाला निकल गया ॥

(रतीका रूपसेनको देखना)

रती०—हैं, इस जनाने बागमें यह अपरिचित मनुष्य कौन है! क्या मुझे इनका स्वागत करना अनुचित होगा? नहीं, नहीं, कदापि नहीं। क्योंकि पुरुषोंके सामने विवाहित स्त्रियोंका पर्दा हुआ करता है, कन्याओंका नहीं। अतएव मैं तो कन्या हूं फिर मुझे इनका स्वागत क्यों नहीं करना चाहिये?

खा०—बचाना ईश्वर! बिल्लीने चूहेको देखा और प्लेग जारी हुआ।

रती०---(आगे बढ़कर) क्यों महाशय! आप कौन हैं? कहांसे आये हैं?

रूप०---हम प्रेमी जीव हैं और प्रेम नगरसे आये हैं।

खा०---जनाब! यह बिलकुल झूठ बोलते हैं। दर असल आप एक शिकारी हैं और शिकारपुरसे आये हैं।

रती०---(स्वगत) अहा! कैसा सुन्दर स्वरूप। कैसी मनोहर वाणी! कैसा सभ्य स्वभाव! (प्रकट) हां तो आपका इस नगरमें क्या काम है?

रूप०—काम तो कुछ नहीं यहाँ सिर्फ शिकारके लिये आया था।

रती०—इस बागको कैसे देख पाया?

रूप०---मुझे दूरसे इस बागमें कोहेनूर हीरा नजर आया जिसकी चमक पाकर यहां तक चला आया।

रती०---वाहवा बागमें कोहेनूर नजर आया?

रूप०---जी हां, उसीकी चमकने मुझे दीवाना बनाया।

"हम प्रेमी जीव हैं और प्रेम नगरसे आये हैं।"

[पृष्ठ संख्या ७७

रूप०---मगर मेरी समझसे आप धोखा खाते हैं, शायद कोई पत्थरका टुकड़ा देखकर उसे कोहेनूर बताते हैं।

रूप०---नहीं, नहीं; हर्गिज़ नहीं।

मैंने जिसे देखा है वो हीरा जरूर है।

तुम कहती हो पत्थर मगर वो कोहेनूर है॥

रती०---वह हीरा आप मुझे दिखा सकते हैं?

रूप०---नहीं।

रती०---उसका निशान बतला सकते हैं?

रूप०---नहीं।

बेजा है उसकी शानमें ज़ुबांका हिलाना।

खुदअक्लसे पहचान लो हीरेका ठिकाना।

ख्वा०---हज़रत पर चला आ गई है बनके ज़नाना।

जादूकी इस मशीनसे हे राम बचाना॥

रती०---मेरी समझमें नहीं आता कि वो हीरा है या पत्थर?

रूप०---क्यों कर समझमें आये क्या हो गया पत्थर॥

कुछ देरसे इस बाग़में देखा किया पत्थर।

समझाने वाले दिल पर हाथ पड़ गया पत्थर॥

ज़ालिमने मेरे वास्ते दिल कर लिया पत्थर।

समझाऊं तुझे क्या कि वह हीरा है या पत्थर?

रती---खैर, आप अपना मतलब बयान कीजिये कि आप मुझसे क्या चाहते हैं?

रूप०---क्या तुम मेरा अरमान पूरा करोगे?

रती०—जरूर करूंगी ।

रूप०—अच्छा तो सुनो ।

रू०—रहम मुझपर जो करती हो तो आफतसे रिहा कर दो,
तुम अपने खुशनुमा गुलशनका मुझको बागवां कर दो।
मेरे इस प्यार पर अपनी जुबांसे सिर्फ हां कर दो॥
(घुटनोंके बल बैठकर रती कुमारीका हाथ पकड़ना)

रती०—हैं, ये क्या कहा ?

रूप०—जो कुछ दिलसे निकल गया ?

रती०—देखो, देखो,सहेलियां देख लेंगी तो मेरी हंसी उड़ायेंगी।

रूप०—सहेलियां अगर हंसी उड़ायेंगी तो उड़ाने दो मगर तुम मेरे प्रेमकी हंसी न उड़ाओ। सहेलियां तुम्हें देख लेगी तो देख लेने दो मगर तुम मेरा दिल देखनेके लिये अपनी नजर न उठाओ।

स्वा०—देखो जजमान मरे तो मरे मगर पुरोहितजीका पेट भरे। इसी लिये तो कहा है कि—स्वार्थम् मूल मन्त्रस्य०

रती—इस आलमका हरएकसे हंसी करनेका रिश्ता है।
जहां भी एक कसौटी है खरे खोटेको कसता है॥
जो हंसता है वह गैरोंपर नहीं अपनेको हंसता है।
तुम्हें हंसता नहीं कोई, जमाना मुझको हंसता है॥

स्वा०—उमड़ आये हैं बादल इश्कका पानी बरसता है।
बता दो कोई भाई मेरे घरका कौन रस्ता है?

रती०—आखिर आप मुझसे क्या चाहते हैं ?

रूप०—और कुछ नहीं सिर्फ प्रेम।

रती०—भला आप विचार तो कीजिये कि एक हिन्दू कन्या बगैर अपने माता पिताकी आज्ञाके पर पुरुषको अपना हृदय कैसे अर्पण कर सकती है?

रूप०—यह ठीक है, मगर माता पिताकी आज्ञाकी वहां जरूरत होती हैं जहां प्रेमकी शक्तियोंसे नफरत होती है।

प्रेम हो दिलमें तो फिर मां बापकी क्या बात है।
प्रेम वह शै है कि जिससे सारी दुनियां मात है॥

रती०—खैर मुझे थोड़ी देर समझनेका समय दीजिये।

रूप०—सोचो—सोचो मेरे हक़में जल्दी सोचो।

दूर कर दो ख़ौफ़ दिलसे मान और अपमानका।
फैसला जल्दी करो मेरे दिली अरमानका॥

स्वा०—हुजूर! इश्कबाजीमें सदा रहता है खतरा जानका।
कौन ठीकेदार होगा इस नफा नुकसानका॥

रती०—(स्वतः) हे ईश्वर अब मैं क्या करूं?

असर मां बापका बैठा है इस दिलके शिवालेमें।
भला समझाऊं क्योंकर अक़्को लाकर हवालेमें॥
मेरा है जिस्म क़ैदी पालने वालोंके जालेमें।
मैं हूं आज़ाद पर किस्मत मेरी है बन्द तालेमें॥

रूप०—देखो मेरी सूरतको देखो! मेरी रोती हुई आंखोंको देखो—मेरी ज़ुबानको देखो—मेरी हालतको देखो—अब मैं मायूस होकर तुमसे अर्ज़ हाल करता हूं। सिर्फ प्रेमकी भीखके लिये तुमसे सवाल करता हूं।

मैं केवल प्रेमका योगी मुहब्बतका भिखारी हूं।
मेरे दिलकी हो देवी तुम तुम्हारा मैं पुजारी हूं॥

रती०—बस हो चुका अब ऐसी दुःख भरी आवाज नहीं सुन सकती।

योगीके सवालोंने दिल रंजूर कर दिया।
आखिर हजरते इश्कने मजबूर कर दिया॥

रूप—वह मारा—

मुझ पर तो यों इश्कने फितूर कर दिया।
दिलको पटक पटक कर चकना चूर कर दिया॥

रूप—आखिर तुमने क्या विचार किया?

रती—विचार यही किया कि अबतक आपको जिस जुबानसे इनकार करती थी उसी जुबानसे अब प्यार करूंगी। जिस दिलसे नफरत करती थी उसी दिलसे प्यार करूंगी।

तुम्हारे वास्ते दिलमे यही मैंने विचारा है।
हमारा दिल तुम्हारा है तुम्हारा दिल हमारा है॥

रूप—खुशी! खुशी!! जिस खुशीके लिये दुनियांका हर इन्सान तरसता है, वह खुशी मुझे हासिल हुई।

तुम्हारे दिलका यह अहसान रग रगमें समाया है।
कि तुमने आज एक मरता हुआ प्रेमी बचाया है॥

रती—यह रामजीकी माया है, कहीं धूप और कहीं छाया है।

(रती और रूपसेनका एक तरफ प्रेम वार्ता करना,
चम्पाका आकर देखना तथा दूसरी सखियोंको बुलाना)

चम्पा—अरी नबेली—अलबेली—चमेली। देखो तो यहां क्या गज़ब होरहा है। (सबका आना)

क्या हो गया? क्या हो गया?

चम्पा—अरी देखो तो राजकुमारीके पास एक अनजान मनुष्य खड़ा खड़ा कुछ बातें कर रहा है।

चमेली—अरी बातें नहीं कर रहा है, वहाँ तो प्रेमालाप होरहा है।

अलबेली—अरी! यह तो बड़ा भारी घुटाला है।

नवेली—समझमें नही आता कि क्या गड़बड़ झाला है?

चमेली—अरी यह सब इश्कका मसाला है।

चम्पा—जरूर कुछ दालमें काला है।

रवा—अररर परमात्मा! इस बागमें तो चुड़ैलोंका हाला हैं। अरे भाई! यहां तो न कोई लाल है--न पीला है---न काला है। सारे झगड़ेकी जड़ ये लाल दुपट्टेवाला है। बन्दा तो रुस्तम का बहनोई और ये सोहराबका साला है।

चम्पा--क्यों प्यारी! क्या हार बनानेका कोई नया तरीका निकाला है?

रती---क्यों क्यों सखी चम्पा क्या हुआ?

चम्पा---प्यारी! भला मैं क्या जानूं क्या हुआ। जो कुछ हुआ सो तुम जानो। मगर ये कौन हैं?

रती---यह तो मैं नहीं जानती यह कौन हैं?

रवा---लीजिये, जान न पहचान खालाजी सलाम।

चम्पा---क्यों प्यारी! प्रेमकी बातोंको प्रेमियोंसेही उड़ाती हो

स्वा---हैं, दाईके सामने पेट छिपाती हो।

चम्पा---(रुपसेनसे) क्यों महाशय! आप यहां अकेले आये हैं या आपके साथ कोई और है?

रूप-- नहीं मैं अकेला नहीं हूं मेरे साथ एक मित्र भी हैं।

स्वा---हत्तेरेकी अब पत्थरमें जोंक लगी।

चम्पा--वह कहां है?

रूप---इसी बागमें कहीं होंगे।

स्वा---अरे कहीं क्या मैं तो यहीं खड़ा हूं? स्वार्थम् मूलमन्त्रस्य

चम्पा--अरी नवेली! जा बागमेंसे आपके मित्रको ढूढ ला उनको भी तो देखें कि कैसे हैं।

स्वा---अजी ढूढनेकी क्या आवश्यकता है, लो हम स्वयंही आ गये, हमारे मुखसे पहिचान लो कि हम कैसे हैं।

चम्पा---आइये, आइये, मुझे बहुत दुःख हैं कि आपका स्वागत अभी तक किसीने कियाही नहीं।

स्वा---स्वागत कैसा, मुझे तो किसीने पूछा ही नहीं।

रती---मैं आपसे अपनी इस भूलके लिये क्षमा चाहती हूं।

स्वा-- कुमारी जी! आजकल तो क्षमा पर भी जुर्मानेका टेक्स लग गया है।

रती---तो आप जुर्मानेमें क्या चाहते हैं?

स्वा---चाहते क्या है "ब्राह्मणों मधुरंप्रिय" कुछ खिलाइये, पिलाइये दक्षिणा देकर बिदा कीजिये। क्योंकि---स्वार्थम् मूलमन्त्रस्य

चम्पा---खैर यह तो सब कुछ हो जायगा---मगर पहिले यह तो

बताइये कि आपका और आपके मित्रका कहां स्थान है ? क्या नाम है—यहां आनेका क्या काम है ?

स्वा०—सुनिये साहब ! पुरोहिती करना हमारा काम है, जजमानी पालना इनका काम है। उग्रसेन इनके पिताका नाम है, कुमार रूपसेन इनका नाम है और श्रीश्री १०८ पं० स्वार्थी-वलम्ब मेरा नाम है।

रती०—(स्वत) अहा ! उग्र नगरके राजकुमार क्षत्री वंशके अवतार यही हैं। हे ईश्वर ! तू धन्य है !

जिसे चाहो हृदयसे वह स्वयं मिलनेको आता है।
विधाता सोचकर ही प्रेमका जोड़ा मिलाता है॥

चम्पा---खैर प्यारी ! अब तो इनका स्वागत करना चाहिये।

सब---जरूर---जरूर।

स्वा०---बेशक ! बेशक !!

रती०---क्यों राजकुमार ! क्या आप इस गरीबनीके घरका स्वागत स्वीकार करेंगे ?

रूप०---नहीं प्रिये ! इस समय क्षमा करो, क्योंकि आज मैं पिताकी आज्ञा लेकर नहीं आया हूं।

रती०---ऐसा है तो मैं मजबूर हूं।

स्वा०--कुमारी ! आप मजबूर क्यों होती हैं, अगर कुमार को स्वागत नहीं स्वीकार है तो बन्दा तैयार है। क्योंकि--स्वार्थम् मूल मन्त्रस्य परमार्थम् सर्वस्व नाशनम्।

रती०---आप जानाही चाहते हैं तो जाइये। मगर राज सुखमें पड़कर इस अबलाको न भूल जाइयेगा।

रूप०---नहीं प्रिये, कभी नहीं।

मैं वह गुल हूं कि जो इस प्रेमके गुलशनमें फूलाहूं,
झुलानेके लिये तुमको मैं, इन आंखोंका झूला हूं।
तुम्हें भूलूंगा क्योंकर मैं तो खुद अपनेको भूला हूं॥

गाना—

रूप०---किसलिये आया यहां, था और यह क्या कर चला।
पास एक दिल था सनमको आज वह देकर चला॥
रती---दिल कहां तूने दिया हाँ दिलको सदमा दे चला।
दिलको जख्मीकर दिया और दिलका अरमां लेचला॥
हाय! मेरे दिलमें लागी कटारी। मैंने प्रेमसे बाजी हारी।
रूप-- जबसे देखी है सूरत प्यारी। मुझे जान हुई है भारी॥
चम्पा---चमेली---प्रेमका बाना किसने लिया था?
अल०-नवेली---मजनूको लैलाने प्यार किया था।
रती---दिलसे मैं भी हूं बारी। मैंने प्रेमसे बाजी हारी॥
चम्पा---चमेली---प्रेममें जानसे कौन गया था?
अल---नवेली---शूली पर मंसूर चढ़ा था।
रूप---अब है हमारी पारी। मुझे जान हुई है भारी॥
स्वा---पड़ी हमपै मुसीबत भारी। कोई लेलो खबरिया हमारी॥
कुमार कन्यासे प्रेम लड़ाये, पंडित भूखा ही मर जाये।
अब तो निकली जान हमारी। कोई लेलो खबरिया हमारी॥

(सबका गाते हुए प्रस्थान)

तीसरा दृश्य ।

स्थान—जंगल ।

(प्रेमका प्रसन्नता पूर्वक प्रवेश)

प्रेम---जीत लिया। जीत लिया !! जिस बाजीको जीतनेके लिये मुझे देशने आदेश दिया था, उस बाजीको एकही चाल में जीत लिया। अभिमानका चक्कर मेरे सामने। वज्रका वार तीरे नजरके सामने।

किसमें ताकत है जो मेरे बंधनोंको तोड़ दे।
कौन ऐसा है जो पाये हूर और फिर छोड़ दे ॥
वह बहादुर है जो मेरे मोर्चेको मोड़ दे।
मैं हूं वो वहशत जिसे पाकर बशर सर फोड़ दे ॥
एकही ठोकरमें वह अभिमान पूरा हो चुका।
जो अधूरा काम था मेरा वह पूरा हो चुका ॥

(देशका आना)

देश---क्यों प्रेम क्या हुआ---फतह या शिकस्त ?

प्रेम---पस्त हुजूर ! दुश्मन पस्त।

देश---क्या---कुमार रूपसेन तुम्हारे कब्जेमें आ चुका ?

प्रेम---जी हां, उसे तो मैं अपने जालमें अच्छी तरह फंसा चुका

देश---शाबास ! मेरे बहादुर शेर शाबास !! मगर हां, पहिले मुका-

खिलेमें उस मर्दूदने मार खाई है। अब देखना चाहिये कि वह क्या रंग लाता है?

प्रेम—रंग क्या लायेगा वह जो रंगतोंसे दूर है।
रंग उसका मेरी रंगत देखकर काफूर है॥

देश—लेकिन यह मुमकिन नहीं कि अभिमान इतनी बड़ी ठोकर खाये और चुप रह जाये। वह ज़रूर अपने बदनसे शोले भड़कायेगा साथही निश्चय है कि रूपसेनके पिता उग्रसेनको फंसायेगा और यह भी सम्भव है कि वह उसके जालमें आ जायगा।

प्रेम—तो इसके लिये आपने क्या विचारा है?

देश—सिर्फ यही कि उग्रसेनका मंत्री जो बुद्धिसेन है, वह उग्रसेन को अधिक प्यारा है और वही उग्रनगर राज्यका चमकता हुआ सितारा है। मैं उसीके शरीरमें समाऊंगा और उग्रसेनको अभिमानके फंदेसे छुड़ाऊंगा। अगर इतने पर भी कोई तरकीब कारगर न हुई तो इसका कोई दूसरा प्रबन्ध रचाऊंगा।

प्रेम—खैर, मेरे लिये क्या आज्ञा है?

देश—तुमसे केवल यही कहना है कि यदि तुम्हारा प्राण जाय तो जाय परन्तु कुमार रूपसेन तुम्हारे हाथसे न छूटने पावे। वरना हमारा किया हुआ सब परिश्रम व्यर्थ हो जायगा। संसारमें घोर अनर्थ हो जायगा।

प्रेम—इससे तो आप निश्चिन्त रहिये। दुनियांमें आज ऐसा कोई

बहादुर या बलवान नहीं है जो रूपसेनको मेरे हाथसे छुड़ा ले जाय।

मैं हूं जहां वहांपर कोई आ नहीं सकता।
मेरे किलेपर कोई फतह पा नहीं सकता॥

द्वेश---शाबास! तुमसे ऐसी ही उम्मीद है। खैर, अब तुम अपने कामपर जाओ---मैं अपने कामपर जाता हूं। तुम अपना रंग दिखाओ और मैं अपना रंग दिखाता हूं।

जरा सी अक्ल इस बुड्ढेकी देखो अक्लवालोंमें।
सफेदी आगई है धीरे धीरे स्याह वालोंमें॥
मगर अफसोस मर्दुमी नहीं कुछ सुनने वालोंमें।
जो ज़रवाले हैं रोते हैं, छिपाकर मुंह दुशालोंमें॥
बिछी है आज शतरंज चाल हरेक हमसे राजी है।
जरा हिकमतसे देदो किश्त तो फिर मात बाजीहै॥

(दोनोंका प्रस्थान अभिमानका कोपमें प्रवेश)

अभि---उफ! गजब होगया। मेरी सारी उम्मीदें खाकमें मिल गईं। जिसे मैं अपना गुलाम बनाना चाहता था, उसे प्रेमने अपना गुलाम बनाया। जो वास्तव में मेरा शिकार था उसे प्रेमने अपना शिकार बनाया। अब क्या करूं---क्या शांतिसेनको उभाड़ूं? मगर नहीं, नहीं; वहां तो धर्मने पहिलेहीसे अड्डा जमाया है। तो फिर हां यही ठीक है! राजा उग्रसेनपर अपना दांव चलाऊं---उसे अपनी मूर्त्ति बनाऊं। प्रेमने बेटेको गुलाम बनाया है तो मैं

उसके बापको अपना गुलाम बनाऊं । बस बदला ! बदला !! बदला !!!

ये आतिश प्रेमने और देशने मुझसे लगाई है।
मुझे मालूम होता है कजा दोनोंकी आई है॥
नहीं हथियारकी खाहिश ये तरकीबी लड़ाई है।
अगर बदला न लूं इसका तो तुफ़ है बेहयाई है॥
मेरे इस जिस्मका हर एक अज़ो बदला पुकारेगा।
मेरे दिलको भरोसा है कि मुझसे देश हारेगा॥

(गुस्सेमें प्रस्थान)

चौथा दृश्य.

(नैनीका गाते हुए प्रवेश)

गाना—

जोबन फबन मेरी चाल ढाल पैहों लाखों निसार ॥
हाय कहूं कासे जवानीकी बतियां सेज सूनी कटी सारी रतियां।
मेरे नैना रसीले नुकीलेके बनते हैं सैकड़ों शिकार ॥ जोबन० ॥
अपने पियारेकी मैं तो दुलारी हूं जौहर हैं मुझ में हज़ार।
कोई आवोरे,समझावोरे,मेरे दिलमें तो लागीहै प्रेमकी कटार जोबन०।

नैनी—हाय भगवान! हज़ार सर फोड़ा मगर किस्मतने अपना करके छोड़ा यानी ऐसे पतिसे मेरा रिश्ता जोड़ा जो देखनेमें हट्टा कट्टा साढ़े तीन हाथका जवान लम्बा चौड़ा मगर काम करनेमें पूरा काठका हथौड़ा, दिलका दर्द कलेजेका फाड़ा सरका चक्कर अक्लका कोड़ा खानेमें बहुत और कमानेमें थोड़ा परमात्मा जाने इनसान है या जापानका घोड़ा। जब कहती हूं कि आज पहननेको धोती नहीं है। बाजारसे साड़ी खरीद लाओ तो फरमाते हैं कि स्वदेशीका ज़माना है खद्दर पहनना सीख जावो। जो कहती हूं कि मुझे जेवर बनवादो तो कहते हैं थोड़े दिन ठहर जावो। मकानमें लग गया मक्खि-योंका छत्ता छत्त सूखकर होगई पत्ता न कहीं नौकरी

मिलती है न कहीं भत्ता। मसल मशहूर है कि "तनपर नहीं लत्ता और पान खांय अलबत्ता।" चूल्हेमें गई ऐसी आमदनी भाड़में गई ऐसी इनकम्।

(स्वार्थावलम्बका प्रवेश)

स्वा०—स्वार्थम् मूलमन्त्रस्य परमार्थम् सर्वस्य नाशनम्।

नैनी—अहा! आप आगये?

स्वा०—जी हां, मैं तो आगया मगर आप किसके लिये दुर्गापाठ कर रही थीं।

नैनी—अजी मैं तो इस मकानकी सजावट देखकर आपकी तारीफ कर रही थी।

स्वा०—यह तो मैं पहले ही समझता था मगर क्या करूं प्यारी! मैं लाख चाहता हूं कि मेरे पास कुछ रुपया हो जाय तो मैं तुम्हारी सब मनोकामना पूरी कर दूं। मगर अफसोस तो यह है कि मुझे कोई कौड़ीके भाव भी नहीं पूछता।

नैनी—अरे रहने भी दो राजाके यहां नौकरी करते हो और फिर भी धनके लिये रोते हो।

स्वा०—अरे नौकरीसे जो कुछ लाता हूं वो तुम्हारे ही हाथमे देता हूं। फिर भी नहीं पूरा पड़ता तो, मैं क्या करूं?

नैनी—मेरी राय तो यह है कि तुम नौकरी छोड़कर कोई व्यापार करलो।

स्वा०—क्या कहा व्यापार? खबरदार व्यापारका, नामभी न लेना।

नैनी—क्यों क्यों क्या हुआ?

स्वा०—अरी जानती नहीं कि हम अगर व्यापार करेंगे तो ये मारवाड़ी लोग अपना पेट कहांसे भरेंगे ?

नैनी—तो आख़िर तुमने क्या करना विचारा है ?

स्वा०—प्यारी! अब तो अपना सोना गाछीके दलालीका सहारा है

नैनी—छिः छिः मेरे सामने तुम्हें ऐसी बातें करनेमें शर्म नही आती।

स्वा०—प्यारी ! तुम्हारे सामने क्या, मुझे तो परमात्माके सामने भी शर्म नहीं आती। क्योंकि—स्वार्थम् मूल मन्त्रस्य०

नैनी—बस खबरदार ! मैं ऐसी बातें नही सुनना चाहती।

(प्रस्थान)

स्वा०—अहा हा !

स्त्रियोंकी बुद्धि पर ध्यान कब देते हैं हम।
स्वार्थम् मूलमन्त्रस्य परमार्थम् सर्वस्व नाशनम् ॥

(अन्दर से आवाजका होना)

अरे पंडितजी ! ओ पंडितजी !!

स्वा०—अररर यह कौन बरसाती मेढ़ककी तरह टपक पड़ा ?

(फिर अवाजका होना)

अजी पंडित जी।

स्वा०—अरे भाई कौन है जो इतने जोरोंसे चिल्ला रहा है ? सारे मुहल्लेको सर पर उठा रहा है।

गुप्ता—अजी यह तो मैं हूं सी० आर० गुप्ता।

स्वा०—धत्तेरेकी। बाद मुद्दतके फंसा है यह पुराना चंडूल।

खैर जी इससे भी दो दो चोचें लड़ लूं देखूं क्या नतीजा निकलता है।

(अन्दर जाकर दोनोंका साथ आना)

स्वा०—कहो जी मि० सी० आर० गुप्ता! आज तो बहुत दिनोंमें आपके दर्शन हुए, खैर तो है।

गुप्ता०—जी हां, आपकी दयासे सब खैरियत है। मगर मैं आपके पास एक बहुत ज़रूरी कामसे आया हूं।

स्वा०—(स्वगत) बेटा कुछ मांगने आया होगा (प्रकट) कहिये क्या काम है?

गुप्ता०—अजी काम क्या यह तो आप जानते हैं कि बन्दा सट्टेका फर्स्ट नम्बर खिलाड़ी है।

स्वा०—जीहां वही तो आपकी ज़िन्दगीकी चलती हुई गाड़ी है।

गुप्ता०—सही है मगर अबकी दफे तो बहुत घाटा आ गया।

स्वा०—घाटा आगया है तो किसी मारवाड़ी गद्दीमें डाका मारो।

गुप्ता--वाह साहब। आप तो सीधे जेल जानेका रास्ता बताते हैं।

स्वा०—क्यों साहब इसमें जेल जानेकी क्या बात है? अगर गरीबोंके घरमें घाटा आ जाय तो जरूर चाहिये कि अमीरोंके घरसे पूरा किया जाय।

गुप्ता—जी हां अगर कहीं पुलिसकी नजर पड़ जाय तो सीधे बड़े घरकी नौबत आ जाय।

स्वा०—अरे राम! तुम पुलिससे इतना डरते हो। अरे ऐसे वक्त अगर कोई पुलिसका बागड़बिल्ला आ जाय तो उसे

चवन्नी हाथमे थमा देना दो आनेके रसगुल्ले और दो पैसेके पान खिला देना, एक कैंसी सिगरेट मुंहमें सुलगा देना। बस इन सात आने मौपाईके खर्चमे वह खुश होकर चला जायगा।

गुप्ता—अगर उसने न माना तो?

स्वा—अगर न माने तो तुम अवारा तो हो ही। घरकी जायदाद सब मेरे नाम लिखा जाना और तुम जेलमे जाकर महात्मा गाँधीकी तरह बैठे बैठे चर्खा चलाना। क्यों समझे?"स्वार्थम मूलमन्त्रस्य परमार्थम् सर्वस्व नाशनम्।"

गुप्ता—अजी मुझे जेल जानेका डर नहीं है मगर जरा इज़्ज़तका ख़याल आता है।

स्वा—अरे भाई,आजकल तो जेल जानेवाला बड़ा भरी इज़्ज़तदार समझा जाता है और दुनियांमें खूब नाम पाता है तो फिर तुम क्यों चूकते हो, ? क्योंकि "स्वार्थम् मूलमन्त्रस्य परमार्थम सवस्यनाशनम्।"

गुप्ता—पंडितजी, कोई अच्छा व्यापार बताइये?

स्वा—अच्छा, आप एक तेज कैंची खरीद लाइये और धरम-तल्लेकी मोड़पर आने जानेवालोंकी जेबमें अपनी किस्मत आज़माइये।

गुप्ता—धत तुम्हारा भला! अरे भाई,मुझे तो कोई फेन्सी व्यापार बताओ।

स्वा--अरे फेंसी व्यापार चाहते हो तो खोलो चाकलेटोंकी एजेन्सी?

गुप्त—है ! हैं !! ये क्या कहा ?

स्वा०—कहा क्या। आजकलके नये नये शौकीन जेन्टलमैन लोग चाकलेट बहुत शौकसे खाते हैं। इसलिये अगर चाकलेट एजेन्सी ले लोगे तो बिक्रीकी आमदनी अलग आयेगी और दलालीकी फीस अलग मिल जायगी।

गुप्त—अगर ऐसा व्यापार है तो एक काम कीजिये, आधा रुपया आप दीजिये—आधा मैं लगाता हूं। दोनोंकी मददसे एजेन्सी खोल ली जाय और आजसेही बानगी मंगाना शुरू होजाय।

स्वा०—नहीं भाई, इस तरह काम नहीं चलेगा।

गुप्त—तो फिर ?

स्वा०—सुनिये।

रुपया होगा आपका और काम सब कर देंगे हम।
आप पर आये मुसीबत कुछ न होगा हमको गम॥
घाटेसे तालुक़ नहीं; नफेमे आधा लेंगे हम।
स्वार्थम् मूलमन्त्रस्य परमार्थम सर्वस्वनाशनम्॥

गुप्त—जनाब। आप तो बड़े स्वार्थी हैं।

स्वा०—अरे भाई हम क्या! आजकल सारी दुनियां स्वार्थी है। देखते नहीं कि आजकल भारतवर्षका हरएक आदमी अपना२ स्वार्थ चिल्लाता है। कांग्रेस कमेटी और स्वराज्य पार्टीको चन्दा देते देते पब्लिकका दिवाला निकला जाता है। अतएव "स्वार्थम मूलमन्त्रस्य परमार्थम सर्वस्यनाशनम्।"

गुप्त—शास्त्रमें लिखा है कि परमार्थसे बढ़कर कोई धर्म नहीं है।

स्वा—ये सत युगके शास्त्रमें लिखा है, मगर, कलियुगके शास्त्र में स्वार्थसे बढ़कर कोई पुण्य नहीं।

गुप्ता—तो क्या परमार्थ करना पाप है ?

स्वा—अरे भाई, परमार्थ तो सब पापोंका बाप है।

गुप्ता—यह कैसे ?

स्वा—यह ऐसे कि हमारे भारतवर्षने सबसे ज्यादा परमार्थ किया मेहमानको अपने घरका मालिक बना दिया, उनकी गार्डन पार्टियोंमें अपनी सारी दौलत लुटा दी मगर उसी परमार्थने देशको कंगाल बना दिया और परमार्थका ही यह फल है ?

सोने चाँदीके एवज़ कागजका पत्तर दे गया।
दाना दाना खींचकर रैली बिरादर ले गया॥

गुप्ता—आपकी बातें हैं तो हंसीकी, मगर उनमें तत्व जरूर है।

स्वा—अरे मेरी बातें माने तो आदमी सोनेका बन जाय, मगर मेरी सुनताही कौन है।

गुप्ता—खैर, अब मैं जाता हूं और एजेंसी खोलनेकी फिक्र करता हूं। जब कुछ प्रबन्ध हो जायगा तो आपसे फिर मिलूंगा।

स्वा०—अगर ऐसीही इच्छा है तो पधारिये।

(नैनी आती है)

नैनी—पधारिये कहां ! घरमें आये हुए मेहमानको न खिलाना न पिलाना और उसे सूखाही रास्ता बताना !

स्वा—अरे बापरे ! यह कोई औरत है या इलेक्ट्रिक पावरका खजाना ? जिसके आनेही मेरे दिलका फ्यूज होगया रवाना।

नैनी--(गुप्तासे) आइये आइये आप थोड़ा भोजन कर लीजिये फिर चले जाइयेगा ।

स्वा---अरे अगर इस तरह मेहमानदारी की जायगी तो सारी दौलत उड़ जायगी ।

नैनी---कुछ भी हो मगर मेरे घरपर आये हुए आदमीकी मेहमानदारी जरूर की जायगी ।

स्वा---हाय हाय इस मेहमानदारीहीने तो भारतवर्षको चौपट कर डाला । इसीलिये तो कहा है कि स्वार्थम् मूलमन्त्रस्य परमार्थम सर्वस्वनाशनम् ।

नैनी---(गुप्तासे) आइये, आइये, आप मेरे साथ भोजनालयमें आइये ।

स्वा—जाइये जाइये आपके बापने जो भोजन बनवाकर रखा है उसको आहिस्ता आहिस्ता हलकके नीचे उतार आइये ।

गुप्ता---खैर जब आप लोगोंको ऐसी ही मर्ज़ी है तो मैं भोजनसे इनकार नहीं कर सकता ।

स्वा---इनकार कैसे करोगे बेटा । रोटियां मुफ्तकी थोड़ेही आती हैं ।

(नैनी गुप्ताका प्रस्थान)

स्वा---हमको है फांके पर फांका औरतके तानेका ग़म ।
किसी बलाये नागहानोमें फंसे हैं आज हम ॥
ज़ोरू तो शाहखर्च है कंजूस है उसका खसम ।
स्वार्थम् मूलमन्त्रस्य परमार्थम सर्वस्व नाशनम् ॥

(स्वार्थावलम्बका गाना)

हम तो हमेशा साधते हैं अपना स्वार्थम् ।
परमार्थम्‌तो दुनियामें है सर्वस्व नाशनम् ॥
रण्डीके हम भडुआ बनें तौभी नहीं है ग़म ।
पर आना चाहिये हमारे हाथमें रक़म ॥
देशी मिठाई खानेकी आदतको करो कम ।
एजेन्सी चाकलेटकी निकालते हैं हम ॥
अखबारों समाचारोंका हमको नहीं वहम ।
परवा नहीं हज़ारहा चलती रहें कलम ॥

(गाते हुए प्रस्थान)

——::——

(राजा उग्रसेनका दर्बार—सहेलियोंका नाच-गाना)

गाना—

आवोरी आवो प्यारी हिल मिलकर गायें सारो,

राजाके राजको सरताजकी हो जै जैकारी।

हरदम दिल शाद रहे, मैफि़ल आबाद रहे,

कैसी सुहावनी मनभावनी येछवि है प्यारी ॥आवो०॥

चमके किस्मतका तारा दमके ये मुखड़ा प्यारा

(बिन्दु) विधाता ये क़ायम रक्खे तेरी सरदारी।

॥ राजाके राजकी सर ताजकी हो जै जै कारी ॥

मन्त्री—सरकार पर सिक्का है आज और ढंगका।

परिचय मिला सूरतसे अनोखे तरंगका ॥

क्या सोचते हैं किस पै निशाने हैं दूरके।

क्या ख्याल आज बस गया दिलमें हुजूरके ॥

उग्र०---मन्त्री! आज मेरे हृदयमें धन और धर्मका युद्ध हो रहा है मगर विजय कोई नहीं पाता। क्या इस विषयमें तुम मेरी सहायता करोगे?

मन्त्री--महाराज, आपका कहना मैं समझा। लेकिन उस विषय को सभाके सामने प्रकाश करनेमें अनुचित तो न होगा?

उग्र०—हां, हां, शायद तुम साफ शब्दोंमें सुनना चाहते हो।

मन्त्री—अवश्य।

उग्र०—अच्छा तो सुनो; कुमार रूपसेनके सम्बन्धमें दो पत्र आये हैं, जिसमें एक पत्र महाराजा मदनराजका है जो गुप्त वंश नामसे मशहूर हैं और दूसरा पत्र महाराजा रमेशचन्द्रका हैं जो कूर्मवंशके खितावोंसे भरपूर हैं। अब तुम्हीं कहो कि रूपसेनका विवाह किसके यहां करदेना उचित है।

मन्त्री—महाराज, मेरी रायसे तो इन दोनों कुलोंमेंसे किसीमें भी कुमारका विवाह कर देना उचित नहीं।

उग्र०—मगर। दहेज़में राजा रमेशचन्द्र तीन लाख रुपया देनेको तैयार है।

मन्त्री—तो इससे यह मालूम हुआ कि तीन लाखकी कीमत पर कुमारको वेच देनेकी आपका विचार है।

उग्र०—मैं नहीं समझता कि तुम मेरे विचारोंका क्यों खंडन करते हो? बस, अब तक मैंने तुम्हें बूढ़ा समझ कर तुम्हारी बातोंको सुन लिया मगर अब ज्यादा जवाब दोगे तो मैं तुम्हें इस इज़्ज़तसे नहीं देखूंगा।

मन्त्री—मैं भी यही चाहता हूं कि आप अपनी इस दी हुई इज़्ज़त को वापस लेलें तो अच्छा है, क्योंकि मैं अपने सामने अपने राजाका विनाश नहीं देख सकता।

मुझसे जो थी घृणा, तो पुकारा नहीं होता।
मेरा बचन सच्चा है, गवारा नहीं होता॥

मुझसे वह सर्वनाश गवारा नहीं होता ॥

उग्र०—आह! मुझको कभी गैरोंका सहारा नहीं होता ॥

गर्दिशसे चन्द्र तेज़ सितारा नहीं होता ॥

वीरोंका वीर वाक्य दुबारा नहीं होता ॥

मन्त्री—अच्छा एकबार कुमारकी तो राय लीजिये।

उग्र०—कुमारसे राय लेनेकी कोई आवश्यकता नहीं। कुमारका भविष्य मेरी तदबीर है। वह मेरीही लकीरका फकीर है।

मन्त्री—यह आपको धोखा है! मैंने सुना है कि कुमारका साथ एक राजकुमारीके साथमें है और उसका दिल भी कुमारके हाथमें है।

उग्र०—क्या कहा! रूपसेनका साथ और राजकुमारीके साथ!.

मन्त्री—जी हां।

उग्र०—भला! वह किसकी कुमारी है?

मन्त्री—शांतिनगरके राजा शांतिसेनकी।

उग्र०—ओफ्! गज़ब हो गया। प्रेम भी हुआ तो एक कंगालकी लड़कीसे। आह भगवान! उग्रसेनकी संतान और इतना नाच ज्ञान!!

अफसोस! और हजार अफ़सोस!!.

मुझको दिल और जिगर जानने दग़ा देदी।

एन मौके पर इस अरमानने दग़ा देदी॥

मेरे पाले हुए इंसानने दग़ा देदी।

हाय अफ़सोस कि संतानने दगा देदी ॥
मेरे दिलमें थी जो आशा वो हाय टूट गई ।
बनी बनाई थी क़िस्मत वो आज फूट गई ॥

मन्त्री—हाय अभिमानने कितना बुरा असर डाला ।
एक राजाके राज्यको तबाह कर डाला ॥

उग्र०—मन्त्री, तुमसे रूपसेनका हाल किसने कहा ?

मन्त्री—राज पुरोहित पं० स्वार्थावलम्बने !

उग्र०—उनको बुलाओ ।

मन्त्री—जो आज्ञा कर्मचारी जाओ और पुरोहितजीको बुला कर लाओ ।

क०—जो आज्ञा । (जाना)

उग्र०—आह रूपसेन ! रूपसेन !! ये तूने किया क्या ? तुझे मालूम नहीं—मैं कितना क्रोधो हूं ?

त्याग करना ही पड़ेगा तुझको नारि स्नेहका ।
नष्ट होना ही असम्भव है मेरे संदेहका ॥
प्रेम मिलनेके एवज तुझको मिलेगा रंज वो ग़म ।
मेरा प्रण कायम रहेगा जबतक है इस दममें दम ॥

(स्वार्थावलम्बका प्रवेश)

स्वार्थम् मूलमंत्रस्य परमार्थम सर्वस्व नाशनम्

उग्र०—स्वार्थावलम्ब ! सच सच बताओ कि तुम रूपसेन और शान्तिसेनका [illegible] मामलेमें क्या जानते हो ?

स्वा०—(स्वगत) धत्तरेकी ! न घोड़ी, न घोड़ा न गधी न गधेड़ा

ज़रा सी बातके लिये इतना बम बखेड़ा। (प्रकट) सरकार जानता तो सिर्फ इतना ही हूं कि राजा शान्ति-सेनकी कन्या रतीसे कुमारने आंख लड़ाई है; घर बैठे मुसीबत बुलाई है।

उग्र०—मुसीबत कैसीः—

खा०—यही कि सरकार, आंखोंमे चौवीस घंटे आंसुओंके दाने रहते हैं, सच पूछिये तो रतीके लिये दीवाने रहते हैं।

उग्र०—अच्छा, परवाह नहीं।

प्रेमकी औक़ात क्या कब्जेसे मेरे छूट जाय।
किसमे ताकत है मेरे दिलका ख़ज़ाना लूट जाय॥
भंग हो सकता नहीं, मेरे विचार और नेमका।
मेरे वशमें हैं बनाना और मिटाना प्रेमका॥

(द्वारपाल आता है)

द्वार०—सरकार, शान्तिनगरसे एक दूत आया है और शांतिसेन-का पत्र लाया है।

उग्र०—क्या शान्तिसेनका पत्र! और मेरे पास! अवश्य इसमें कोई भेद है। जाओ, उसे दरबारमें हाज़िर करो।

द्वा०—जो आज्ञा——

मन्त्री—उठा हैं समुन्द्रमें जोश गर्म फेनका!
देखूं क्या रंग लाये पत्र शांतिसेनका॥

खा०—शान्ति है उधर, इधर क्रोध उग्रसेनका।
है सामना पैसेंजर और मेल ट्रेनका॥

दूत (आकर) :—पहले प्रभो ! ये मेरा नमस्कार लीजिये ।
फिर पत्र मेरे भूपका स्वीकार कीजिये ॥

उग्र०—मन्त्री ! इस पत्रको पढ़कर सुनाओ ।

मन्त्री—जो आज्ञा । (पत्र पढ़ना)

श्रीयुत !

महाराजाधिराज, राजराजेन्द्र उग्रसेन महाराज ! बाद यथोचितके ज्ञात हो कि राजकुमार रूपसेन और मेरी कन्या रती का प्रेम कदाचित आपसे छिपा नहीं है । अतएव यदि आप इस सम्बन्धसे प्रसन्न हैं तो मैं अपना बहुतही सौभाग्य समझूंगा। यद्यपि मेरे पास धनका अभाव है; किन्तु फिर भी मैं दहेजमे आपको एक लाख रुपया दूंगा । क्या आप इस तुच्छ राज्याधिपतिकी प्रार्थना स्वीकार करेंगे ?

आपका——

शांतिसेन ।

उग्र०—आह ! शांतिसेन ! शांतिसेन !! शांतिके शब्दसेही मेरा क्रोध दूना हो जाता है ।

दिल चाहता है शान्तिके मैं टुकड़े उड़ा दूं ।
मिट्टीका है किला उसे मिट्टीमें मिला दूं ।
शान्तिनगरके राज्यसे शान्तिको मिटा दूं ॥

स्वा०—मुझमें है वह ताकत कि कुल संसार मिटा दूं ।
जब चाहूं तो कुत्ते और बिल्लियोंको लड़ा दूं ।

मन्त्री—प्रभो !

उग्र०--कुछ न कहो। अरे जाओ, जाओ और दहकता हुआ अग्निकुण्ड दरबारमें लाओ।

मन्त्री--महाराज अग्निकुण्ड, क्या किया जायगा ?

उग्र०-इस पत्रने मेरे दिलको जलाया है इसलिये यह भी अग्निकुण्ड में जलाकर खाक बनाया जायगा।

मन्त्री --मगर इतना याद रहे कि ?

शेर---हर कामोंकी हद होती है हदका भी कोई निशाना हो।
'वह काम नहीं करना अच्छा जो समय पड़े पछताना हो।

उग्र०---हरगिज नहीं।

बलासे मेरा ये ईमान रहे या न रहे।
एक सचाईकी जुबाँ रहे या न रहे॥
मेरा अभिमान रहे जान रहे या न रहे।
इसकी परवाह नहीं सन्तान रहे या न रहे॥

(नौकरोंका अग्नीठी लाना)

उग्र०---जला दो! जला दो!! इस पत्रके एक एक अक्षरको जलाकर खाक बना दो।

दूत०---आह! अत्याचार! और इतना घोर अत्याचार!!

उग्र०---खामोश! वरना तेरी भी जुबान काटकर इस कागजके साथ जला दी जायगी।

दूत०---जला दो! जला दो!! अगर मैं झूठ बोलता हूं, तो मेरी जुबान क्या मेरी जान जला दो।

जो सच्ची बात वाले हैं हरफ़ उनके अनूठे हैं।

जलानेके लिये उनकी ज़ुबानें हैं जो झूठे हैं ॥

उग्र०—ओ मगरूर! जिस तरह हो, यहांसे जल्द चला जा। नहीं तो तेरा यह दिमाग मेरे गुस्सेकी कसौटीमें घिस जायगा मेरे विचारकी चक्कीमें तेरा शरीर पिस जायगा।

दूत०—बड़ा अंधेर है भगवान! ऐसे न्यायवालोंमें। ज़ुबां जकड़ी हुई है आज खामोशीके तालोंमें।

स्वा०—नहीं ताक़त रही क्या अब बड़े बाज़ार वालोंमें।
ज़रा कर दो ख़बर कांग्रेस कमेटीके दलालोंमें।
कि डंडा चल रहाहै अब रहीम और रामवालोंमें॥

उग्र—(दूतसे) क्यों; क्या सोचता है? चला क्यों नहीं जाता?

दू०—हुज़ूर! मजबूरी है कि पत्रका ज़वाब नहीं पाता।

उग्र०—ओ मगरूर! क्या अब भी पत्रका उत्तर बाकी है। जा, जा, और शांतिसेनसे कह दे कि—

ख़तका जवाब देंगे हम जोशे उमंगमे।
ख़तका जवाब देंगे हम तीरो तुफंगमें॥
ख़तका जवाब देंगे हम मैदाने जंगमे॥

दूत०—अच्छा, मैं तो जाता हूं।

उग्र०—ठहर जा मैं तेरे सामने युद्धका हुक्म सुनाता हूं। सेनापति! जाओ जाओ। हथियार और सेनाको युद्धके लिये तैयार करो।

एक हफ्तेमें क़िलेके सब कंगूरे टूट जांय।
शांन्ति वालोंके घरके सब ख़ज़ाने लूटजांय।

पानीके प्यासोंकी हल्कोंमें लहूके घूंट जांय।
बूढ़े-बच्चों और जवाँ मर्दोंके सर भी फूट जाँय।
वह लड़ाई हो कि फिर दुश्मनके छक्के छूट जाँय॥

सेनापति—जो आज्ञा—सामान मैं बनाऊंगा अपने फितूरका।
सिक्का मिटा दूं शान्तिसेनके गरूरका।
झंडा गड़ेगा शान्तिनगरमे हुजूरका॥

उग्र०—(दूतसे) क्यों सुना?

दूत०—हां सुना।

उग्र—क्या?

दूत—यही कि बेगुनाहों बेकसों पर कत्ले आम।

उग्र०—चुप! नाफरजाम।

दूत०—खैर, मैं जाता हूं। प्रणाम और आखिरी प्रणाम।

उग्र०—पैग़ाम, लड़ाईका पैग़ाम।

(दूत जाता है और द्वारपाल आता है)

द्वार०—सरकारके दर्बारमें यहूदी डाकुओंका सर्दार ज़मानिशाह खुंखार हाज़िर है।

उग्र०--क्या ज़मानिशाह डाकू और मेरे दर्बारमें! क्यों मंत्री! क्या करना चाहिये?

मंत्री---सरकार उसे कैद करना चाहिये।

उग्र०---नहीं नहीं वह मेरे पास किसी मतलबसे आया होगा।
ताजुब नहीं कि इस लड़ाईमे सहायता लाया होगा।

मन्त्री--मान लीजिये कि वह सहायता ही लाया हो तो क्या

डाकुओंकी सहायता एक महान शक्तिशाली महाराजाके लिये उत्तम और प्रसंशाके योग्य होगी ? महाराज !

ये डाकू देशमें आपसके लोगोंको लड़ाते हैं।
यहूदी कौम है इनकी वज़ांवतही कराते हैं॥
ये राजाओंसे मिल करही असर अपना जमाते हैं।
ग़रीबों और अनाथों पर हमेशा जुल्म ढाते हैं॥
हमारे देशमें रह कर हमींको ठगा करते हैं।
ये जिसका नमक खाते हैं उसीसे दगा करते हैं॥

उग्र०---कुछ भी हो मैं इससे जरूर मिलूंगा।

मन्त्री---खैर, आपकी जो इच्छा।

उग्र०---जावो, जावो, उसे दर्बारमें हाजिर करो।

द्वार०---जो आज्ञा।

(द्वारपालके साथ यहूदीका प्रवेश)

जमा०---इजाज़त दी है आनेकी इस महफिलमें सवालीको।
अदाब झुककर बजा लाता हूं शाहंशाह आलीको॥

उग्र०---तुम कौन हो ?

जमा०---हुजूर। क़ौमका यहूदी और नामका डाकू जमानिशाह।

उग्र०---वाह वाह ! क्या तुम्हीं हो जो मुल्कोंमें तूफान मचाया करते हो गरीबोंको लूट ले जाया करते हो ?

जमा०---हुजूरका कहना खिलाफ है। मैं लोगोंको लूटकर नहीं ले जाया करता हूं बलिक उन्हें एक मरतबा लूटकर आइंदा अपनी हिफाज़त करनेका सबक़ पढ़ाया करता हूं।

उग्र०---खैर, यहां किसलिये आये हो?

मन्त्री---हुजूरकी मदद करनेके लिये।

उग्र०---भला तुम मेरी क्या मदद कर सकते हो?

जमा०---पहले कुमार रूपसेनको रतीसे नफरत करा सकता हूं फिर शांति नगरको एक हफ्तेके बदले एक ही दिनमें फतह करा सकता हूं।

मन्त्री०---(स्वतः) ओह! कितना भयंकर दगा है। परमात्मा! रूप और रतीको बचाना।

होता विनाश प्रेमका है थोड़ी देरमें।
रूप और रती पड़ गये डाकूके फेरमें॥

उग्र०---अच्छा यह काम किस शर्तपर करोगे।

जमा०---शर्त यही है कि फतहके बाद शांति नगरकी राजधानी आपकी और लूटका माल हमारा। अगर यह शर्त मंजूर है तो आजहीसे है इस कामका किनारा।

उग्र०---मंजूर है प्यारे दोस्त, तुम्हारी यह शर्त मुझे मंजूर है।

जमा०---अच्छा तो हाथमें हाथ दीजिये।

उग्र०---(हाथ मिला कर) बेशक।

इस शर्तके ही साथ मेरे दमका साथ है।
इस शर्तकी मंजूरीमें लो मेरा हाथ है॥

जमा०---आमीन!

मन्त्री---(स्वगत) किस तरह उपदेश पर जाये दिमाग़ इंसानका।
एक तो बदकारी है उस पर जोर है अभिमानका॥

उग्र०—बस आज मेरे दिलका हर एक फूल खिल गया।
जिस दोस्तकी तलाश थी वह दोस्त मिल गया॥
(ऐ) मेरे दर्बारियों जाओ और आजकी खुशीमें अपने घरमें खुशियां मनाओ। आजका दर्बार समाप्त।

(उग्रसेनका दर्बारियोंके साथ जाना)

मंत्री—कुछ असर न हुआ, मेरे समझानेका कुछ ख्याल न आया। मगर इसमें किसीका दोषही क्या है? जैसा विधाताका कर्तव्य होता है वैसा ही कार्य्य भी होता है?

पाता है कौन पार इस किस्मतके तारका।
खुद मर मिटो और ज़ोर लगा दो हजारका॥
होना नहीं रुकता है कभी होनहारका॥

(प्रस्थान)

ब्रा०—किसको पता है मेरी इस टूटी मज़ारका।
कहनेको विप्र, काम है लेकिन कहारका॥
यारो! मेरा शरीर है बर्तन कुम्हारका।
स्वार्थम् मूल मंत्रस्य परमार्थ सर्वस्वनाशनम्॥

(प्रस्थान)

(पर्दा गिरता है)

छठा दृश्य.

स्थान—स्वार्थावलम्बका घर

(मिस्टर सी० आर० गुप्ताका प्रवेश)

गुप्ता-- फैशन ! फैशन !! फैशन !!!

अगर दुनियाँमें इज्जत बढ़ानेको कोई तरकीब है तो वह फैशन है। मैं तो यह कहता हूं कि लड़का हो बड़का हो घरका हो बाहरका हो कोई हो मगर फैशनेबुल हुनरका हो। पहिले पहल जब मैं स्वार्थावलम्बजीके यहां आया तो उनकी जोरूपर फैशनका सिक्का जमा दिया। आखिर औरत तो थी ही, आ गई मेरे चक्करमें। बस फिर क्या था। मैंने कुछ रोजमें उसे थोड़ी सी अंग्रेजी पढ़ाया और सायागवन पहना कर उसको पूरा फैशनेबुल बनाया। अब वह इंगलिश पोशाक पहन-कर इस तरह अठिलाती है कि देशी ऊंटनीसे विलायती घोड़ी नज़र आती है।

फैशन सजा कर, दो दिनमें रेडी बना दिया।
पंडिताइनजीको क्रिश्चियन लेडी बना दिया॥

(नैनी आकर)

नैनी—अहा ! मास्टर साहब, आप आ गये !

गु०—जी हां ! मैंने सोचा कि आज सन्डेकी छुट्टी तुम्हारे ही यहां पूरी करूं।

नै०—थैंक्यू मि० गुप्ता!

गु०—अच्छा मिस नैंनी! तुम्हें क्या यह ड्रेस अच्छी नहीं मालूम होती।

नै०—वाह मास्टर साहब! इस ड्रेसको तो जबसे मैंने पहना है उस वक्तसे मालूम होता है कि आसमानमें उड़ी जा रही हूं।

गु०—क्यों नहीं! क्यों नहीं!! बात यह है कि पहले तुम छकड़ा गाड़ीका भी मुकाबिला नहीं कर सकती थी और अब तो टुयेल्व हार्स पावर मोटरसे भी टक्कर खाओगी।

नै०—अजी, मोटर क्या! अब तो मैं हवाई जहाजके कान काटूंगी।

गु०—हियर! हियर!! हियर!!!

नै०—अच्छा मास्टर साहब! यह तो बताइये कि मैं अपनी सर्विसके लिये इङ्गलिशमैन और सर्वेण्टमें एडवर्टाइज निकाल दूं।

गु०—अजी रहने भी दो! तुम्हारे सर्विसके लिये क्या कमी है। देखो, मैंने एक नौजवान मालदार जेंटुलमैन पर हाथ मारा है। अगर वह मेरी टिप्पसमें आ गया तो समझ लो कि हजारों रुपयेका वारा न्यारा है।

नै०—वाह, वाह! जबतो तुमने बहुत अच्छा अड्डा जमाया है।

गु०—मैंने उसे आज यहां बुलाया है वह अभी आता ही होगा।

नै०—अच्छा तो अब मैं फुलड्रेस पहिरने जाती हूं।

गु०—हां, हां जल्दी जाओ और फुलड्रेस पहनकर, सेंट लगाकर

बाल बनाकर अच्छी तरह तैयार हो जाओ। जब वह जेंटुलमैन आयेगा तो मैं तुम्हें बुलाऊंगा।

नै०---बहुत खूब। (नैनी जाती है)

गु०—फंसा शिकार, अच्छी तरहसे फंसा। अब क्या है? उस जेण्टिलमैनसे इस टूटी हुई साइकलको भिड़ाऊंगा और अपना उल्लू सीधा बनाऊंगा।

है तो औरतकी दलाली पर नहीं इसको शरम।
एक जरासी बातमें आती है लाखोंकी रक़म॥

(स्वार्थावलम्बका प्रवेश)

स्वार्थम् मूल मंत्रस्य परमा .....

गुप्ता---अहा! आइये पण्डितजी प्रणाम!

स्वा०---कौन मि० सी. आर गुप्ता! क्यों जनाब? क्या आप रविवारको भी मेरी जोरूको पढ़ाने आया करते हैं?

गु०—जी नहीं, छुट्टियोंमें तो हम जरूरी काममें आया करते हैं।

स्वा०—भला आज कौन सा जरूरी काम है?

गु०—आपकी जोरूको नौकरीका पैग़ाम है।

स्वा०—क्या कहा नौकरी।

गु०-- जी हां, नौकरी?

स्वा०—अरे राम! राम!! राम!!! एक इज्जतदार ब्राह्मणकी स्त्री और नौकरी। कभी नहीं। हरगिज नहीं।

गु०---क्यों जनाब! भला इसमें क्या नुकसान है?

स्वा०---नुकसान क्या तुम नहीं जानते कि औरतोंके कमानेसे

मर्दोंके नाममें धब्बा लग जाता है ?

गु०---अजी यों नहीं बल्कि यों कहिये कि औरतोंके कमानेसे मर्द मालामाल हो जाता है।

स्वा०---भला यह कैसे ?

गु०---यह ऐसे कि मर्द अगर किस्मतसे एम, ए, बी, ए पास हो जाता है तो फिर भी साठ सत्तरसे ज्यादा की नौकरी नहीं पाता और औरतें अगर कुछ भी न पढ़ी हों तो भी उनके लिये ढाई सौसे लेकर हजारोंका खाता है।

स्वा०---ऐसी बात है ?

गु०---जी हां, यही तो करामात है।

स्वा०---खैर, तुम जैसे मित्रोंकी यही मर्जी है तो मुझे भी मंजूर है। स्वार्थम् मूल मन्त्रस्य परमा.....

गु०---मैं आपकी समझदारीकी तारीफ करता हूं।

(नेपथ्यसे आवाज आना)...मि० गुप्ता

स्वा---यह कौन है ?

गु---अजी, यह [illegible] एजेन्सीके प्रोप्राइटर है। अब आप ज़रा पोजिशनके [illegible] खड़ा हो जाइये और जो कुछ मैं कहूं मेरी हां में हां मिलाइये।

स्वा---बहुतखूब।

(नेपथ्यसे आवाज आना)...मि० सी, आर, गुप्ता

गु---आइये! [illegible]

प्रो---(आकर) गुडमार्निंग, मि० गुप्ता।

गु—गुड मौर्निंग।

प्रो---हाउ आर यू?

गु---वेरी वेल सर!

प्रो---कहिये, मिस साहिबा कहां हैं?

गु---अभी तशरीफ लाती हैं।

स्वा—(स्वगत) वाह, वाह अंगरेजी क्या बोल रहे हैं गोया हिन्दुस्तानी मकानमें विलायती कुत्ते लड़ रहे हैं। (प्रगट) जनाब मैं मकान मालिक हूं।

प्रो—मकान मालिक हो तो जाओ, अपना काम करो हमारे पास क्या है?

स्वा—अरे यह तो काटनेको दौड़ता है।

गु—जनाब! आप समझे नहीं! यह तो न्यू लाइटकी सभ्यता है।

स्वा—ऐसा।

गु—जी हां।

स्वा—अच्छा तो स्वार्थम् मूल.....

प्रो---क्यों मि, गुप्ता। यह कैसा मकानदार है?

गु—अजी यह तो बिलकुल उजड्ड और गंवार है।

स्वा---अबे गंवार तू और तेरा बाप।

गु—जरा ठहरिये तो आप।

स्वा—अबे ओ घोंघा वसन्त! मुझे दूसरी पट्टी पढ़ाना उसे कुछ और समझाना। साथ २ मुझे गाली खिलाना बताता क्यों नहीं कि आखिर यह क्या माजरा है?

गु०—जनाब ! खामोश रहिये ! यह न्यूलाइटकी सभ्यता है।

स्वा०—अच्छा तो स्वार्थम मूल

प्रो०—मि० गुप्ता ! मिस साहिबा अभीतक नहीं आई ?

गु०—घबड़ाइये नहीं ? मैं अभी बुलाकर लाता हूं।

स्वा०—(रोककर) अबे ए ? भला मेरी स्त्रीको तुझे बुलानेका अधिकार क्या है ?

गु०—जनाब, यह न्यूलाइटकी सभ्यता है।

स्वा०—अच्छा भाई, सभ्यता है तो जाकर बुला ला।

(गुप्ताका बाहर जाना)

स्वा०—यारो जी में तो आता है कि इस पाजी प्रोप्राइटर और उस उल्लूकी दुम गुप्ताको ठोंक पीटकर दोनोंका कचूमर बना दूं मगर जब औरतकी सर्विसका ख्याल आता है तो कलेजा मसोसकर रह जाता हूं क्योंकि स्वार्थम मूल मन्त्रस्य परमार्थम् सर्वस्वनाशनम्।

(गुप्ता नैनीको लाता है)

गु०—लीजिये प्रोप्राइटर साहब, मिस सहिबा आगई।

प्रो०—थैंक्यू। गुडमार्निंग मिस नैनी !

नै०—गुडमार्निंग मिस्टर प्रोप्राइटर ! (हाथ मिलाना)

स्वा०—अररर ! यह मेरी स्त्रीसे बात करता है या पाणिग्रहण करता है ? (गुप्तासे) क्यों बे तुम मेरी स्त्रीको नौकरी दिलवाता है या पुनर्विवाह करवाता है ?

गु०—आप समझते नहीं, यह तो न्यूलाइटकी सभ्यता है।

ने०---प्रोप्राटर साहब ! अब मैं आपसे वह मतलब जानना चाहती हूं कि जिसके लिये आप यहाँ तशरीफ लाये है ।

प्रो---मेरे मतलबको तो मि, गुप्ताने आपसे कहा ही होगा ।

ने---हां, उन्होंने तो कहा है । मगर मैं आपसे सुनना चाहती हूं ।

प्रो०---जनाब ! मैं इसलिये आया हूं कि मैंने अभी हालमें मैंनचेस्टर क्लाथ एजेंसी खोली है जिसमें मैंनचेस्टरका कुल कपड़ा बेचा जाता है लेकिन जानकार मैंनेजर न होनेसे मेरा काम विगड़ा जाता हैं इसलिये अगर आप मैंनेजरी मंजूर करें तो बहुत अच्छा हो ।

नेनी---जनाब मैंनेजरीके पेमेंटका क्या हिसाब है ?

प्रो---वह तो आपकी मर्जीपर है ।

स्वा---अजी, एक औरत ज़ात भला पेमेंटका हाल क्या जाने इसका निपटारा मैं किये देता हूं ।

प्रो०---ओयू डैम ।

स्वा०---अबे ए, अंग्रेजीमें गाली बकता हैं ।

गु०---जनाब ! यह न्य लाइटकी सभ्यता है ।

स्वा०---अरे यारो, औरत तो गैर मर्दोंसे हाथ मिलाये और मर्द बेचारा गालियां खाये । क्या इसीका नाम सभ्यता है ? खैर, अपनेको क्या स्वार्थम् मूल...

ने०---जनाब प्रोप्राइटर साहेब ! मैं तो फाइव हंड्रेड-रूपिजसे कमकी सर्विस नहीं कर सकती ।

प्रो०---मिस साहिबा अभी एजेन्सी नई है । इसलिये इतना...

प्रो०—भाई मेरी हिम्मत थ्री हंड्रेड तककी है।

गु०—क्यों मिस साहिबा क्या राय है?

स्वा—अरे राय क्या है मंजूर कर ले। तीन सौ रुपये कम थोड़े ही हैं मेरा और तेरा आरामसे खर्च चल जायगा।

नैनी—खैर, जब आप इतनी कोशिश करते हैं तो मुझे सिक्स मंथसके लिये एजेन्सीकी मैनेजरी मंजूर है।

प्रो—थैंक यू। मैं उम्मीद करता हूं कि कलसे आप एजेन्सीमें तशरीफ लायेंगी।

नैनी—औल राइट।

प्रो—अच्छा तो अब मैं जाता हूं।

गुप्ता—चलिये मैं आपको दरवाजे तक पहुंचा आता हूं।

प्रो—मिस साहबा, गुडबाई।

नैनी—गुडबाई सर! (हाथ मिलाकर चूमना)

स्वा—अरे यह तो मेरी औरतका हाथ चूमता है।

गुप्ता—ठहर जाइये ये न्यूलाइटकी सभ्यता है।

(प्रोप्राइटर जाता है)

नैनी—क्यों प्राणनाथ! देखा? आज इस प्रोप्राइटरको कैसा उल्लू बनाया। ३ सौ रुपयेकी नौकरीका अड्डा जमाया?

स्वा—प्यारी तुमने सब कुछ तो अच्छा किया मगर उसने तुम्हारा हाथ चूमलिया यह बहुत बुरा किया।

नैनी—अजी इन बातोंको कौन देखता है।

स्वा—अरे भोली औरत तुम नहीं जानती। अगर देशके किसी

मतवाले या स्वतन्त्रने देख पाया तो फौरन यह खबर सारे भारतवर्षमे पहुंचा देगा और मेरी पण्डिताई पर पानी फिरा देगा।

नैनी—अरे ऐसा तो हुआ ही करता है।

गुप्ता—हां हां क्योंकि यह तो न्यू लाइटकी सभ्यता हैं।

स्वा—अरे रहने दे अपनी सभ्यता।

नैनी—मगर तुम तो स्वार्थप्रेमी हो फिर तुम्हें डर किसका है?

गुप्ता—और क्या सुना नही कि कुत्ते भूका करते हैं मगर हाथी अपना रास्ता नहीं छोड़ते।

स्वा—खैर जब तुम दोनोंकी यही मर्जी है तो मुझे भी स्वीकार है। क्योंकि अपना तो यही मुख्य विचार है।

हर तरहसे धन कमाओ जबतक है इस दममें दम।
स्वार्थम् मूल मन्त्रस्य परमार्थम् सर्वस्व नाशनम्॥

गुप्ता—अच्छा तो अब मैं जाता हूं।

नैनी—नहीं २ तुमने आज बहुत भारी काम किया है। इसलिये चलो थोड़ा भोजन कर लो फिर चले जाना।

(दोनोंका जाना)

स्वा—औरतने तो बन्द कर दी है अखबारोंकी कलम।
स्वार्थम मूल मन्त्रस्य परमार्थम् सर्वस्व नाशनम्॥

गाना—

चेतो जहान वालों स्वारथका है जमाना।
फितरतकी है कमाई बेईमानी करके खाना॥

औरत करेगी सर्विस इसकी नहीं है परवाह।
है काम यह हमारा दौलतका घरमें लाना॥
दुनियांमें आके जिसने गैरोंकी की भलाई।
मिलता नहीं है उसको खानेके लिये दाना॥ चेतो.॥
जबतक है जिन्दगी ये स्वार्थसे पेट भर लें।
क्या जाने कब मरेंगे दमका है क्या ठिकाना॥ चेतो॥

(प्रस्थान)

सातवां दृश्य !

स्थान—रूपसेनका एकान्त महल

(बैठे हुए दिखाई देना)

रूप—(स्वतः) हाय अफसोस ! मुझे क्या हो गया ? मेरी हिम्मत मेरी अक्ल मुझे छोड़ गई । मैं अपने शरीरसे लाचार हो गया । मेरा जीना दुशवार हो गया दुनिया मुझे पागल कहती है । क्या मैं पागल हूं ? दीवाना हूं ? हां, हां दीवाना हूं । मगर किसका एक रूपवती नारीका । मैं पागल हूं मगर किसका ? अपनी प्यारी रतीकुमारीका । ओ मतवाले प्रेम ! तूने ही मेरे दिलके टुकड़े उड़ा डाले मैं परमात्मासे प्रार्थना करता हूं कि वह तेरे फंदेमें किसीको न डाले

ऐ इश्क तूने दिलमें क्यों सिक्का विठा लिया ।
हंसते हुए इंसानको क्योंकर रुला दिया ॥
अब क्या करूं किससे कहूं रोऊं कहां जाकर ।
अफसोस मुझको प्रेमने पागल बना दिया ॥

(मन्त्रीका प्रवेश)

मन्त्री—अहा सचमुच प्रेमने कुमारको पागल बना दिया ।

इस प्रेमके फन्देमें न हरगिज़ फंसाये दिल ।
इस आहको आतिशमें न अपना जलाये दिल ॥

जब दिलसे दिल निकला तो फिर वापिस नहीं आना।
बेहतर है कि दुनियांमें न किसी पर आये दिल॥
कुमार!

रू०—कौन? मन्त्रीजी। कहिये न जल्दी कहिये। क्या आप शांति नगरसे आये हैं? रतीका क्या संदेशा लाये हैं? क्या वह भी मेरे लिये रोती है? मगर नहीं, वह क्यों रोयेगी। वह तो हंसती आई है और हमेशा हंसती रहेगी। रोनेके लिये तो यही रूपसेन है जो उसके वियोगमें बेचैन है।

मैं हुआ तैयार इन कांटों को बोने के लिये।
उल्फ़ते जाना में अपनी जान खोने के लिये॥
है मेरी ही ज़िन्दगी दुनियांमें रोने के लिये॥

मन्त्री—हुज़ूर! दिलको संभालिये और आने वाली मुसीबतको अपने सरसे टालिये।

रू०—क्या कहा मुसीबत। हाय..

हमारा ग़म से है रिश्ता मुसीबत से सगाई है।
मुसीबत ही हमारे पूर्व जन्मों की कमाई है॥
जहांमें एक मुसीबत ही हमारे साथ आई है॥

म०—आपका कहना ठीक है। मगर फिर भी इन्सानको चाहिये कि आफ़तसे बचनेकी कोशिश करे।

रू०—अच्छा तो कहिये वह कौनसी मुसीबत है?

म०—कुमार! आपके पिता राजा उग्रसेन आपकी हालत सुन चुके हैं इसलिये वह चाहते हैं कि या तो रती कुमारीसे आप

मुहब्बत तोड़ दें और नहीं तो अपने प्राणोंको छोड़ दें।

रू०—ग़जब हो गया। ज़िन्दगीका दुश्मन मेरा पिता हो गया। हाय! मैंने क्या सोचा था और क्या हो गया।

तीरे नज़र पर आज पलकोंका ग़िलाफ़ है।
मैं क्या करूं कि मुझसे ज़माना ख़िलाफ़ है॥

मन्त्री—आप अधीर न होकर अक़्लसे काम लीजिये।

रू०—ख़ैर आप कहिये कि अब मैं क्या करूं?

मन्त्री—देखिये आपके पिताके साथ जमानिशाह डाकू मिल गया है और वह डाकू आपसे रतीकी मुहब्बत छुड़ायगा। और उसके बाद शान्ति नगरको एक रोज़में फतह करायेगा। राजधानी आपके बापको देकर लूटका माल खुद लेकर चला जायगा।

रू०—ओह; जुल्म! सितम!! तूफान!!!
शान्तिसेन मेरे पिताके हाथोंसे मारा जायगा आह! संसारमें प्रलय हो जायगा।

म०—घबड़ाइये नहीं। अनाथोंका केवल परमात्मा ही सहारा है। तुम जानते नही। रावण और कंस जैसे अभिमानियों को उसीने मारा है।

किसीको यह संकट गंवारा न होता।
किसी भक्तको धर्म प्यारा न होता॥
अगरचे प्रभू का सहारा न होता॥

रू०—मन्त्रीजी ऐसे समयमें शांतिसेनका साथ कौन देगा?

म०—मै दूंगा।

रू०—क्या तुम दोगे ?

म०—हां, हाँ मैं दूंगा।

रू०—मगर तुम तो मेरे पिताके प्रधान कर्णाधार हो।

म०—मन्त्री बुद्धिसेन दौलतका तलबगार नहीं बल्कि इन्साफका तरफदार है।

सत्यके वक्ताका हमेशा मार्ग बिलकुल साफ हैं।
मैं सहायक उस तरफ हूं जिस तरफ इन्साफ है॥

रू०—धन्य हो! मेरे राज्यके बूढ़े मन्त्री धन्य हो। आजसे मै अपने पिताको छोड़कर तुमको अपना पिता बनाता हूं। अब इस बालककी लाज तुम्हारे ही हाथ है। मेरा प्राण तुम्हारे प्राणके साथ है।

हमारी इस मुसीबतमें फकत मुश्किल कुशा तुम हो।
हमारे जन्मदाता पिता से बढ़कर पिता तुम हो॥

मन्त्री—चिन्ता न करो। मेरे रहते हुए तुम पर आंचतक नहीं आ सकती। लेकिन जैसा मैं कहता हूं वैसा करनेके लिये तैयार हो जाओ।

रू०—बताओ ? जल्दी बताओ कि मुझे क्या करना होगा ?

म०—तुम शान्ति नगरके युद्धमें जाकर रती और शान्तिसेनको बचाओ।

रू०—बहुत खूब। मैं ऐसा ही करूंगा।

धर्म उन्नतिके लिये स्वीकार है मत आपका।

बेटा ही बनता है शत्रु आज अपने बापका ॥

मन्त्री—धन्य है राजकुमार! धन्य है! मेरा आशीर्वाद है कि परमात्मा तुम्हें इस प्रेममे कायम रक्खें। परमात्माने चाहा तो वह समय बहुत जल्दी आयेगा जब यह बूढ़ा मन्त्री उम्र नगरको ताज अपने हाथोंसे तुम्हे पहनायगा। अच्छा अब मैं जाता हूं तुम होशियार रहना।

रू०—पधारिये।

म०—है प्रार्थना ईश्वरसे शांतिका समाज हो।
इस राज्यमे अब शीघ्र हो तुम्हारा ही राज हो।
दुखिया और अनाथोंके मुल्कमें स्वराज हो॥

(प्रस्थान,

रू०—(स्वगत) हः हः! ज़मानिशाह डाकू और मुझसे रतीकी मुहब्बत छुड़ायेगा। खैर आने दो देखा जायगा।

जरा देखूं तो शक्ति कौन मेरे दिलको लूटेगी।
जो रस्सी बंध चुकी है प्रेमकी क्योंकर वो टूटेगी॥
यह दुनिया छूट जाये पर रती मुझसे न छूटेगी॥

(जमानिशाहका आना)

जमा०—शाहज़ादे साहब! तबीयतका क्या हाल है? दिलमें क्यों इस कदर मलाल है?

रू०—भला आप कौन हैं? और आपको मेरी हालतसे जरूरत?

जमा०—मैं आपकी एक रिआया हूं। आपकी हालत सुनकर आपको समझाने आया हूं।

रू०—अरे भाई तुम मुझको क्या समझाओगे ? मैं तो खुद
समझा समझाया हूं।

खुद अक़्लको समझालो तो फिर मुझको भी समझाना।
ऐसा न हो समझानेका उलटा पड़े असर।
समझाते हो मुझको मगर तुम खुद न समझ जाना।

जमा०—हुजूर ! मैं समझता हूं कि इश्ककी वहशतमें पड़कर
आपका दिमाग क़ाबूमें नहीं है।

रू०—अरे दिमाग क्या ! यहां तो दिल ही काबूमें नहीं है।

जमा०—मगर बादशाहोंको ऐसी बुजदिली नहीं करनी चाहिये।

रू०—क्या गहरा जख्म खाकर फिर आह भी न भरना चाहिये ?

जमा०—जख्म है तो उसकी दवा करनी चाहिये।

रू०—मगर अफसोस कि इस जख्मकी कोई दवा नहीं।

जमा०—यह आपकी गलती है।

परहेज़ हो तो मर्ज क्या अच्छा नहीं होता।
दिल हो अगर क़ाबूमें तो सदमा नहीं होता॥
कोशिश करे इंसान तो फिर क्या नहीं होता।

रू०—कोशिश, हजार हो तो फायदा नहीं होता।
यह दर्द दवासे कभी रफा नहीं होता॥
दुनियामें दर्द दिल कभी अच्छा नहीं होता॥

जमा०—मगर याद रखिये कि औरतोंके दिलमें जब जोशकी हवा
चलती है तब इश्कका दरिया मुहब्बतकी लहरें मारने लगता
है। मगर जब जोश कम हो जाता है तब मुहब्बतकी लहरें

कम होजाती हैं और दरियाये इश्क ठंढा पड़ जाता है।

रू०—हरगिज नही। ऐसा दिल उन औरतोंका होता है जिनका प्रेम सिर्फ इच्छाके निमित्त होता है मगर जो सच्ची औरतें हैं वह प्रेमपर अपनी जान तक दे देती हैं। इच्छावाली औरतोंका प्रेम गंदा नाला है जो वरसातमे कई दफे उतरता और चढ़ता है मगर सती स्त्रियोंका प्रेम समुद्रकी धारा है जो हमेशा एकसा रहता है।

/ सती नारीके दिलमे एक ही की टेक होती है।
सिफारिश प्रेमकी दोनों तरफसे एक होती है।
हमेशा नेक औरतकी मुहव्वत नेक होती है॥ /

जमा०—(स्वतः) इस पागलका समझना बड़ा मुश्किल है।(प्रगट) और मैं आपसे यही कहता हूं कि रतीकी मुहव्वत छोड़ दीजिये तो वेहतर है। क्योंकि वह वहुत ही वदकार है।

रू०—क्या कहा? वदकार है?

जमा०—जी हां।

रू०—तुम्हारे पास इसका सवूत?

जमा०—यह लीजिये उसकी तस्वीर और उसके पोशीदा खुतूत।

रू०—(देखकर) वेशक यह उसकी तस्वीर हैं मगर खत जाली है।

जमा०—जनाव! यह सुवूत उसकी वदकारीसे खाली नहीं।

रू०—मैं जोरदेकर कहता हूं कि रती इस तस्वीरको देनेवाली नहीं।

जमा०—मैं सच कहता हूं कि मैंने उसकी अस्मत खराव की है।

रू०—चुप वेशऊर! तूने अस्मत नहीं बल्कि मेरे सामने झूठ बोल

कर अपनी जवान खराब की।

जमा०—तो क्या मेरी वात काविले इतमीनान नहीं?

रूप०—तेरी वातोंमें जरा भी सच्चाईकी शान नहीं।

जमा०—देखो, मुहब्बतमें धोखा उठाओगे।

रूप०—तुम चले जाओ वरना जानसे मारे जाओगे।

जमा०—मेरी वात न मानोगे?

रूप०—हरगिज नहीं।

जमा०—मैंने इतना समझाया मगर फिर भी तू नहीं समझता।

ओ वेवकूफ, तुझमें समझ ध्यान ही नहीं।

रूप०—प्रेमीके लिये जान क्या जहान ही नहीं॥

इस इश्कमें तेरी रहेगी आन ही नहीं।

जिसमें नही है इश्क वो इंसान नहीं॥

ज०-अरे ओ नादान छोकरे, अब तू अपने इश्कका तराना वन्दकर

रूप०—वरना?

जमा०—वरना मैं तुझे मौतके घाट उतारूंगा।

रूप०—ओ वदमाश अव मैं तुझे जरूर मारूंगा।

जमा०—ओ अक्ल फरामोश!

रूप०—खामोश।

जमा०—(स्वगत) हाय! हाय!! गजब हो गया। अब यह पागल इन्सान जरूर मुझे मार डालेगा। (प्रगट) कुमार, क्या आप नाराज हो गये?

रूप०—मैं नहीं, तुझसे परमात्मा नाराज होगया।

जमा०—मैं माफी चाहता हूं।

रूप०—मैं माफ नहीं कर सकता।

जमा०—क्यों ?

रूप०—क्योंकि तूने रती कुमारीकी निन्दा की है।

जमा०—अगर आप मुझे मारेंगे तो रतीकी भी जान नहीं बचेगी।

रूप०—यह कैसे ?

जमा०—ऐसे कि, मैंने अपने डाकुओंको उस पार छोड़ रक्खा है। अगर शामतक मैं न जाऊंगा तो वे लोग उसको मार डालेंगे।

रूप०—तुझे डाकुओंसे सरोकार ?

जमा०—जी हां ! मैं हूं डाकुओंका सर्दार।

रूप०—तेरा नाम क्या है ?

जमा०—मेरा नाम जमानिशाह है।

रूप०—जमानिशाह ! और रतीका खून !!

जमा०—हां ! हां !! खून !!!

रूप०—मगर जब तक मैं जिन्दा हूं तब तक उसका खून नहीं हो सकता है।

(जमानिशाह मेज पर पड़ी हुई पिस्तौल उठाता है)

जमा०—हो सकता है और जरूर हो सकता है।

रूप०—किस तरह हो सकता है।

जमा०—(फ़ायर करके) इस तरह हो सकता है।

(जमानिशाह रूपसेनके हाथमें पिस्तौल मारता है रूपसेन घायल होकर गिरता है, जमानिशाह भाग जाता है)

रूप०—आह ! खून ! खून !! खून !!!

(स्वार्थावलम्ब घबड़ाता हुआ आता है)

स्वा०—हैं, हैं ! खून !! खून !!! किसका खून ? यह किसको हुआ जुनून ! जो एक बारगी चिल्ला उठा खून ! खून !! खून !!! (चारों ओर ढूंढकर) यहां तो कहीं खूनका दाग़ भी नहीं दिखाई देता। अरे भाइयो, ज़रा गौरसे देखो। कहीं मेरा ही खून तो नहीं हो गया ? (लाश देखकर) अररर। हाय मेरी अम्मा। हाय मेरी फूआ। यह तो राजकुमारका खून हुआ। अब क्या करूं ? पुलिस बुलाऊं ! मगर ऐसा न हो कि मैं ही इसका खूनी समझा जाऊं और फांसीके तख्तेपर लटका दिया जाऊं, क्योंकि उम्रनगरकी पुलिस तहकीकात करना तो जानती नहीं। वह तो सिर्फ अच्छे इंसानोंको दुनियांसे पार्सल ही करना जानती है। अरे यार !

खामखाह ऐसी बलामें जाकर क्यों पड़नेको हम।
स्वार्थम् मूल मंत्रस्य परमार्थम सर्वस्व नाशनम् ॥

(जाना चाहता है रूपसेन उठता है)

रूप०—उसने क्या कहा ?

स्वा०—अररर......यह तो जिन्दा हो गया।

रूप०—ज़मानीशाह डाकू रती कुमारी और खून। आह ! खून ! खून !! खून !!!

(बेहोश होता है)

स्वा०— अरे भाई, तुझे खूनका सपना आता है और मेरा दम

निकला जाता है।

रूप०—किसका खून? रती कुमारीका! कौन करेगा? जमा निशाह। यह काम कब होगा? आज और अभी। तो क्या मैं बचा नहीं सकता? नहीं नहीं जबतक मैं जाऊंगा उसके पहले काम तमाम हो जायगा। हाय! क्या करूं?

समयके फेरसे कितना कड़ा मजमून होता है।
कि एकअबला अधीना बालिकाका खून होता है॥

रूप०—हां, यही ठीक है। जब रती नहीं तो रूप किस कामका? इसलिये मुझे चाहिये कि मैं रतीके खून होनेसे पहिले ही इस दुनियांसे विदा हो जाऊं। जिस खञ्जरसे रतीको बचाना चाहा था। उसीसे मैं खुद मर जाऊं।

ऐ मेरे दिलके चिराग़ ऐ मेरे दिलबर ऐ सनम्।
है तुम्हारी याद लब पर हल्क़में आया है दम॥
दूसरी दुनियांमें मिलना, है तुम्हें मेरी क़सम।
आज इस संसारसे अन्तिम विदा लेते हैं हम॥

(खंजर मारना चाहता है स्वार्थावलम्बका हाथ पकड़ लेना)

स्वा०—अररर ठहरिये—स्वार्थम् मूल मन्त्रस्य०

(कुमारका आश्चर्यित होना) स्वार्थावलम्बका खंजर छीनकर डरना और आश्चर्य करना)

ड्राप

पहिला दृश्य !

जंगलका रास्ता ।

(जमानिशाहका यहूदी सेनाके सहित गाते हुए प्रवेश)

गाना—

बहादुरो, तैयार हो म्यानोंसे निकालो तलवार तेग़ आबदारको ॥
जो जङ्गमें शेर हो, दिलेर हो, ज़ेर वो दुश्मनोंको आज,
करके दिखाओ, बढ़ चलो, चढ़ चलो, संगीने अपनी सँभालो
ढादो गिरा दो किलेको घेर घेर घेर ॥ बहादुरो० ॥

जमा०—ऐ यहूदी कौमके बहादुरो, जानते हो कि तुम्हारा फर्ज क्या है ?

सिपाही १—पहला फर्ज है म्यानोंसे तलवारें निकालना ।

सिपाही २—दूसरा फर्ज है दुश्मनोंको चिंउटीकी तरह मसल डालना ।

सिपाही ३—तीसरा फर्ज है मैदान-जंगमें बहादुरी दिखाना

सि०४—चौथा फर्ज है दुश्मनोंपर फतह पाना ।

सि०५—और आखिरी फर्ज यह है कि गुस्सेमें भर जाना, जोश में उभर जाना, हिम्मत पर गुजर जाना ।

सब—मारना या मर जाना ।

जमा०—शाबाश ऐ दिलेरो! मुझे तुम्हारा पक्का सहारा है। इसी लिये हमने शान्ति नगरपर धावा मारा है।

लड़ें हम यों कि न हरगिज हमारा बाल बांका हो।
करें हम ज़ुल्म उसपर जो यहां रैयतका आक़ा हो॥
हमारे ही बहादुर नामका दुनियांमें ख़ाका हो।
यहूदी क़ौमका इस बादशाहत पर पताका हो॥

उग्र०—शाबाश! मेरे यहूदी सर्दार।

जमा०—कौन, सरकार?

उग्र०—हां, हां अब देरी करना बेकार है। जाओ और जिस तरह हो, शान्तिनगरको जलाकर खाक कर दो। दुश्मनोंका किस्सा पाक कर दो।

जमा०—बहुत खूब! मैं ऐसा ही करूंगा, मगर आप भी अपनी फौज लेकर बहुत जल्द आ जाँय। और उस मर्दूदको जहन्नुममे पहुंचायें।

उग्र०—हां, हां, मैं अभी आता हूं।

कहां वो जायगा मुझसे बचकर हजार हिकमतकी चालि चलकर।
जो पींजड़ेमें जकड़ चुका है आज़ाद होगा नहीं निकलकर॥
हमारी हिम्मत तुम्हारी हिकमत, हो वार दोनोंका बच सम्हलकर।
अगरचे कुछ भी है जोश तुझमें, तो ज़ोर जाये उनको दलकर॥
सफाया कर दूंगा दुश्मनोंको इन चुटकियोंमें मसल मसलकर॥

जमा०—हम अपनी जानसे तैयार है।

उग्र०—हम तुम्हारे पहसानके देनदार हैं।

जमा०—अच्छा तो देर न कीजिये। मैं अपनी फौज लेकर जाता हूं और आप अपनी फौज लेकर मोर्चे पर जल्दी आइये।

उग्र०—मैं जाता हूं। मगर सर्दार आजकी जङ्गमें दो बातें याद रखना।

जमा—वह क्या ?

उग्र—एक फतह और दूसरे बहादुरीका इनाम।

जमा—ऐसा ही होगा महाराज, ये नेकनाम।

उग्र—अच्छा मैं जाता हूं।

(कुल फौज तलवारें निकालकर)

सलाम! सलाम!! जङ्गी सलाम!!!

(उग्रसेनका प्रस्थान)

जमा—(स्वगत) ओ बेवकूफ बादशाह! क्या तुम यह समझता है कि मैं शांति नगरको मिटाकर तुझे छोड़ दूंगा? हर्गिज नहीं। यह मुल्क फतह करके तेरी भी रियासत अपने हाथ में ले लूंगा।

जो मेरा खंजर है इस नगरपर, वो तेरे सर पर दुधारा होगा।
जो वार मेरा यहां चलेगा, वो वार तुझपर दुबारा होगा॥
यह ताज हाथोंमें मेरे होगा, तुझे गुलामोंका चारा होगा।
कुछ ही दिनोंमें इस मुल्क पर भी हमारा चमका सितारा होगा।
जो मुल्क तू लेना चाहता है वो मुल्क आखिर हमारा होगा॥

(प्रकट) बहादुरो! अपना कदम बढ़ाओ और दुश्मनोंसे मुकाबिला करनेके लिये तैयार हो जाओ।

पतझड़की तरह दुश्मनोंके जोर झाड़ दो।
बूढ़े औ जवानोंके कलेजेको फाड़ दो॥
इस बादशाहतको सभी मिलकर उजाड़ दो॥

सब—जो हुक्म सरदार।

(सबका गाते हुए प्रस्थान)

दूसरा दृश्य.

स्थान—शान्तिसेनका महल

(शांतिसेन और सेनापति बैठे हैं।)

शांति०—सेनापति! लड़ाईके लिये क्या इन्तजाम किया है?

सेना०—सरकार! अपनी फौजको तैयार किया है और दूसरी रियासतोंको भी सहायता देनेके लिये पत्र दिया है।

शां०—उन रियासतोंसे अभी कोई खबर नहीं आई?

से०—जी नहीं। अभी तो कोई खबर नहीं आई। मगर उम्मीद है कि लड़ाईके एक दिन पहले सब फौजें आ जांयगी।

शां०—सेनापति, अबकी बार हमको बड़ी मुसीबतका सामना है।

से०—सरकार, मुसीबतसे घबड़ाना क्या है?

हमेशा बुज़दिलोंके ही इरादे सर्द होते हैं।
मुसीबत उसपर आती है जो सच्चे मर्द होते हैं॥

द्वारपाल—(आकर) महाराज! द्वारपर एक विप्र देवता आये हैं और आपके पास कोई गुप्त संदेशा लाये हैं।

शां०—जाओ। उन्हें अन्दर बुला लाओ।

द्वार०—जो आज्ञा।

ब्रा०—इस सभाके सज्जनोंको नमस्कार करते हैं हम।
देखकर सूरत मेरी दिलमें न करना कुछ वहम॥

गुप्त संदेशा है देना कार्य मेरा इत्यलम?
स्वार्थम् मूल मन्त्रस्य परमार्थम् सर्वस्व नाशनम् ॥

शां०—महाराज! आप कहां रहते हैं और यहां किस कार्यसे आये हैं?

स्वा०—सरकार! हम उग्र नगरमें रहते हैं और यहां मन्त्री बुद्धि सेनका सन्देशा लाये हैं।

शां०—मन्त्रीका संदेशा?

स्वा०—जी हां।

शां०—बड़े आश्चर्यकी बात है, कि जिस राज्यका राजा हमसे खिलाफ हो जाय, वहांका मन्त्री हमको सन्देशा पहुंचाये!

से०—सरकार! संदेशा भी तो सुन लिया जाय।

शां०—खैर, सन्देशा तो सुनाइये।

स्वा०—(पत्र निकालकर देता है) लीजिये, मुलाहिजा फरमाइये।

शां०—सेनापति! इस पत्रका आशय कहो।

से०—जो आज्ञा—(पत्र पढ़ना) महाराजा शांतिसेन! मैं आपके द्रोहीका मंत्री होकर भी किसी कारणसे आपका मित्र बनकर यह संदेशा पहुंचाता हूं कि उग्रसेन कहे हुए आठ रोजको छोड़कर आजही युद्धके लिये रवाना होगा। आप तैयार हो जाइये क्योंकि उग्रसेनने मय यहूदी सर्दारके आजही आपके ऊपर चढ़ाई करदी है। अतएव आप तैयार रहिये मैं यथा समय सहायता पहुंचाऊंगा। खबरदार! होशियार!!

बुद्धिसेन—

शां०—सेनापति यह क्या हुआ ?

से०—सर्वनाश हुआ।

शां०—खैर, परमात्माकी इच्छा।

से०—महाराज आप चिन्ता न कीजिये

समरमें लड़ेंगे शक्ति पर ध्यान देकर।
भूमिपर पड़ेंगे देशपर जान देकर॥
शांतिसे करेंगे जोश ठंडा प्रलयका।
देशमें गड़ेगा शीघ्र झंडा विजयका॥

शां०—सेनापति ! जल्दी जाओ और सेनाको तैय्यार करो।

से०—जो आज्ञा मैं अभी जाता हूं और सेनाको तय्यार करता हूं।

(जाना)

शा०—कर्मचारी जाओ इन पण्डितजीको राजमहलमें स्थान दिलाओ।

कर्म०—जो आज्ञा। आइये महाराज चलिये।

स्वा०—(जाते२) खड्ग उठी है दोनों दलसे युद्ध है भयकारकम्।
मेरी रक्षा अब करेंगे देवकी नन्दन स्वयम॥
पुरस्कारके वास्ते स्वीकार है यह स्वागतम्।
स्वार्थम मूलमन्त्रस्य परमार्थम् सर्वस्व नाशनम्॥

शां०—अब मुझे निश्चय होगया कि यह संग्राम नहीं, बल्कि मौतका पैगाम है। मेरी जिन्दगीका आखिरी अंजाम है।

है शीश पर दुश्मनोंके भाले।
हजार कालोंने मुंह निकाले॥

जरा तो सोचो जहानवाले ।
मिटाते हैं मुल्कको मुल्कवाले ।
भगवान इस देशको तू बचाले ॥

तीसरा दृश्य

एक तरफ किला एक तरफ जंगी मैदान।

(उग्रसेनकी फौज किला तोड़ रही है अन्दरसे आवाज आती है मारो काटो, जला दो। हाय आग लगी मरे, जले इत्यादि)

उग्र०—जल्दी इस किलेको तोड़कर अन्दर घुस जाओ और शांतिसेनको मेरे सामने लाओ।

सेना०—(प्रवेश करके) ठहर जाओ। किलेका तोड़ना बड़ी दूरकी मंजिल है। शांतिसेनका मिलना बहुत मुश्किल है।

उग्र०—अहा! जिसकी तलाश थी वह आ गया। तलवारका शिकार सेनापति मुर्दार आ गया।

से०—अरे ओ मुर्दारोंके सर्दार! मुझे मुर्दार बताते हुए शर्म नहीं आती है।

उग्र०—अरे ओ पाजी! उग्रसेनकी शानमें इस क़दर दस्तन्दाजी!

से०—ओ शानके परकाले! शान वालेको चाहिये कि पहले अपने घरकी शान सम्हाले फिर औरोंकी शानमें ख़लल डाले। बोल बोल, तूने कौनसी शान दिखाई? आठ दिनकी मुहलत और एक दिनमें लड़ाई।

उग्र०—यह मैंने बहादुरीकी है जो आठ दिनकी जंग एक दिनमें फतह की है।

से०—खूब बहादुरोंकी। गैर मुल्ककी गैर कौमको अपनी मदद के लिये लाया। लड़केको पागल बनाया; हिन्दुस्थानियोंके घरमें यहूदियोंका घर बनाया, डाकूको दोस्त बनाया, फिर भी शांति नगर पर फतह पायी। तो बड़ा भारी कमाल दिखाया।

उग्र०—मैंने कुछ भी किया। मगर अब तू बता कि तेरे राजाका और तेरा कौन मददगार है?

से०—मेरा मददगार वह है कि जिसने तेरे जैसे खुद्दारोंको मिट्टी में मिला दिया है।

न यह समझो कि दुनियांमें वर्दोंकी नेकनामी है।
नहीं है न्यायका यह युद्ध केवल इन्तकामी है॥
यह ज़रकी हैं मदद तुमको यह दौलतकी सलामी है।
फक़त तुमको मदद इन डाकुओंकीही गुलामी है॥
मदद मुझपर है उसकी जो त्रिलोकीका स्वामी है॥

उग्र०—ओ भगवानके दास! अपनी ज़िन्दगीपर एक पलका भी विश्वास न कर, तेरी मृत्यु नज़दीक है और पास है।

हसरतें रह जायगी दिलमें तेरे अरमानकी।
जिस क़दर हो कर हिफाजत जल्दी अपने जानकी॥
जंगमें है फौज दो मेरी और शाहज़मानकी।
कुछ नहीं कर सकती है शक्ति तेरे भगवानकी॥
ग़ारत कर देगी तुझे गारद यहूदी दस्तानकी॥

से०—ओ मगरूर हस्ती! इस बस्तीके उजाड़नेमें तेरी बुजन्दी है

था है पस्तो। कागजी किश्ती, दरियामें बहुत जल्द फंसती है। चैनकी बरसात हमेशा नहीं बरसती है।

पेश ज़्यादा न कर सवालोंको।
छेड़ना अच्छा नहीं मतवालोंको॥
क्यों मिटाता है न्याय वालोंको।
बेहया सुधार अपनी चालोंको॥

उग्र०—ओ शैतान! इतना उभड़ता है? डरता भी है और मुकाबला भी करता है?

मेरी क्रोधाग्निमें चिकनाईका दुबाव न दे।
जंगे मैदानमें अब धर्मका हिसाब न दे॥
हो चुकी हदसे ज्यादा ज़बांकी तर्रारी।
जौहरे तेग़ दिखा ख़ामखा जवाब न दे॥

से०—ओ मजनूनी, रिआयाका खूनी जनूनी। तू ज़बानकी चोटों से मेरे गुस्सेको भड़का रहा है।

तुझे अब आफतोंने हर तरफसे घेरा है।
नर्क ही तेरे लिये आखिरी बसेरा है॥
अब नहीं फुर्सत दूंगा तुझे एक दमके लिये।
सवाल तेरा था और यह जवाब मेरा है।

(तलवार निकालना)

उग्र०—घोर संग्राम!

फौजी—शस्त्र प्रणाम!

(दोनों सेनाओंमें संग्राम होता है सेनापतिको उग्रसेन मार डालता

है, शांतिसेनकी थकी हुई फौज भाग जाती हैं। प्लाट फटता है
घरमें आग लग रही है—नगर वासी हल्ला मचा रहे हैं
यहूदी लोग लड़के, बच्चे, बहू बेटियोंको उठा लेजा
रहे हैं, जमानिशाह हंसता है उग्रसेन आता है)

उग्र०—शाबास दोस्त! शाबास!! तुम्हारी बदौलत शान्तिनगर फतह हो गया, मगर शान्तिसेन अभी तक नहीं मिला।

जमा०—क्या वह नहीं पकड़ा गया?

उग्र०—यही तो बुरा हुआ।

जमा०—उसे जल्दी गिरफ्तार कीजिये।

उग्र०—खैर, अब वो न भी मिले तो हमारा क्या बिगड़ता है?

जमा०—यह आपकी गलती है। अगर्चे जिन्दा है या मुरदा है मगर दुश्मन काठका भी बुरा है।

उग्र०—तो क्या उसे ढूढ़ निकालना चाहिये?

जमा—अरे उसे जल्दी मार डालना चाहिये।

जो कि बन्दूक दुनाली है वो भरी क्यों हो।
जिससे खतरा है वही जिन्दगी बरी क्यों हो?
काट दे जड़ न जिसमें शाखकी उम्मीद रहे।
अगरचे बाँसही न हो तो बांसुरी क्यों हो?

उग्र०—अच्छा तो मेरे साथ आओ और किलेमें उसका पता लगाओ।

जमा—हां, हां चलो और जल्दी चलो।

फितरतके धंधे मेरे दिलमें भर ह।

शाजर हसरतोंके मेरे दिलमें हरे हैं ॥
जरको जहां देखा उधर ही ये नज़र दौड़ी।
मुफ्तकी रकम है छोडूंगा न एक कौडी ॥

(दोनोंका प्रस्थान)

(दृश्य बदलना और युद्धस्थल दिखाई देना, किलेके अन्दरसे शांतिसेन तथा स्वार्थावलम्बका प्रवेश)

शां०—महाराज ! आप जल्दी यहांसे चले जाइये। ऐसा न हो कि शत्रु दल देख ले और आपको गिरफ्तार कर ले।

स्वा०—जो आज्ञा महाराज ! हम जाते हैं और शान्तिनगरकी हालत मन्त्रीजीको कह सुनाते हैं। वह आपकी मदद करेंगे।

शां०—खैर, मेरे जीवनका परमात्मा मालिक है। इस दासका यह प्रणाम है।

स्वा०—आशीर्वाद ! (स्वगत)

यह राजधानी युद्धमें हो गई पूर्ण भसम।
घट गया हिन्दूका शासन मिट गया हिन्दू धरम ॥
जान लेकर भागते हैं सीधे अपने घरको हम।
स्वार्थम् मूल मन्त्रस्य परमार्थम् सर्वस्व नाशनम ॥

शांति०—उजाड़ हो गया ! शांतिनगर उजाड़ हो गया !! जहां हमेशा सुखकी गङ्गा बहती थी वहां खूनकी नदी बह गई। जहां हमेशा सद्व्यवहार होता था वहां भीषण अत्याचार हो गया। आह ! यह कौन ? सेनापति और उसकी रणभूमिमें

यह गति !

"नहीं इसमें किसीका दोष फल करनीका पाना है।
नमालूम कब समय बदलेगा इसका क्या ठिकाना है ?
करो कुछ भी मगर इससे न कुछ होना न जाना है।
करेगा क्या कोई हिकमत कि जब बिगड़ा जमाना है ?
नहीं भारतमें अब भी वीर बलवानोंका टोटा है।
मगर अफसोस भारतवासियोंका भाग्य खोटा है ॥"

(उग्रसेन और जमानिशाहका आना)

उग्र०—कौन ? शान्तिसेन !

शाँ०—हाँ ! शांतिसेन !

उग्र०—बहादुरो ! जल्दी इसकी जिन्दगीका खातमा कर दो !

शां०—मेरा कोई कसूर ? कोई खता ?

उग्र०—तूने सम्बन्धपत्र भेजा था ओ नासजा।

शां०—अगर पत्रका मजमून बेजा था तो मुझसे जवाब तलब फरमाना था। रिआयाका खून किसलिये बहाना था ? बता तो सही कि देशी भाइयोंका गला काटके तुझे क्या मिला ?

उग्र०—हमें हमारी महनतका सिला मिला।

शां०—तो अब मेरी जान क्यों मारना चाहता है ?

उग्र—तेरी जानका मुझे बहुत बडा अंदेशा है।

शां०—अगर मुझे मारना ही चाहता है तो एक तलवार तू ले और एक मुझे लादे, फिर अगर ताकत हो तो मार गिरा।

जमा०—यह कोई बात नहीं। हम जिस तरह चाहें उस तरह तुझे

कत्ल करें यह हमें अख्तियार है। क्योंकि तू अब राजा नहीं है। उग्रसेनका गुलाम है, तावेदार है।

शां०—ओ बेवकूफ! अपनी जबान संभाल। वरना इन नाखूनोंसे तेरी बोटी २ अलग कर दूंगा।

होती तलवार तो दिखलाता तुम्हारा अंजाम।
न होती कौम यहूदी, न यहूदीका कलाम।
क्या करूं भाईने भाईपर किया कत्ले आम।
वरना गुलामोंके गुलाम मुझको बताते हो गुलाम॥

हमारे घरकी लड़ाई तुम्हारी लूट हुई।
तुम्हारा घर बना, हमारे घरमें फूट हुई॥

उग्रा०—यह पहले क्यों नहीं सोचा था?

नहीं कहते किसीसे हम कि हमको सल्तनतमें लो।
हम उसको लेते हैं बेशक जो कहता है कि ये लेलो॥
हमारा फर्ज है आफत हजारों हो उसे झेलो।
अगर दौलत मिले तो हिम्मतोंसे जानपर खेलो॥
हमारे काम सच्चे हैं, न स्याही है और सफेदी है।
तुम्हींने अपने हाथोंसे रियासत हमको दे दी है॥

शां०—ओ शैतान, बगुला भगत! तूने ही यह सब अनर्थ कराया है। अगर तू न होता तो हम लोग आपसमें लड़कर न मर जाते।

ये चालाकी तुम्हारे कौमकी हम खूब समझते हैं।
न हमको शांत समझो, हम खरा खोटा परखते हैं॥

नहीं इलजाम झूठा हम कभी गैरों पर रखते हैं ।
तुम्हारी ही ये बदकारीका फल हम आज चखते हैं ॥
दगा दिलमें है और चालें तुम्हारी हैं हरीफोंकी ।
तुम हो बदमाश लेकिन शकल सूरत है शरीफोंकी ॥

जमा०—क्यों महाराज साहब ! क्या आपके साथ देनेका यही नतीजा है कि एक कमजोर, कम हिम्मत इन्सान मेरे दिलको अपनी जबानसे चोट पहुंचाये आप खड़े खड़े सुन रहे हैं और वह मुझे गालियाँ सुनाये ?

उग्र०—घबड़ाते क्यों हो दोस्त ! इसकी मौत तो बहुत करीब हैं ।

शां०—ओ मेरी मौतके जिम्मेवार ! जरा अपनी मौतको भी विचार । जो मेरे सिवा तेरे सरपर भी आनेवाली है, थोड़े दिनों मे जमीनकी मिट्टी तेरी मिट्टीको भी मिट्टी बनाने वाली है ।

भूला है क्यों अभिमानमें दो दिनके वास्ते ?
कर इन्तजाम मौतकी नागिनके वास्ते ॥
वह तेरे न होंगे फिदा है जिनके वास्ते ।
अपना विनाश करता है क्यों इनके वास्ते ॥
इस मौतके मुंहमें हजारों हौसिले गये ।
तुझसे यहाँ कितने ही आये और चले गये ॥

उग्र०—अच्छा अच्छा अब मैं भी देखता हूं कि तेरी यह जबानकी तर्रारी कहां तक चलती है ।

देखना है कि अब आता है कौन ?
मुझको इन्साफ सिखाता है कौन ?

आगमें बर्फ जमाता है कौन ?
अपना अधिकार जमाता है कौन !
तुझको मरनेसे बचाता है कौन ?

शां०—करले, जितना अत्याचार चाहे कर ले। हाथमें खंजर ले उसे खूनमें भर ले; उससे भी कोई ज्यादा जुल्म हो तो उसे भी कर ले। मगर इतना याद रखः—

दुःख मेरा वह अभी और रङ्ग लायेगा।
मेरी विनती प्रभूके पास ये पहुचायेगा॥
वो गरुड़गामी नंगे पैर यहां आयेगा।
तू मेरी मौतको हजार खींच लायेगा।
मगर मुझे मेरा परमात्मा बचायेगा॥

उग्र०—वाहरे भक्ति! वाहरे तेरे परमात्माकी शक्ति!! अब न तेरा कोई परमात्मा है, न ईश्वर है, अगर है तो तेरा सर है और मेरा चमकता हुआ खञ्जर है।

नहीं मैं जानता संसारका वह कौन ईश्वर है।
कहां हरिका ठिकाना है कहां जगदीशका घर है?
तू है निर्जीव तेरे जीवका जीवात्मा मैं हूं।
तेरा रक्षक, तेरा भक्षक, तेरा परमात्मा मैं हूं॥

शां० —जा, जा, दीवाने! परमात्माके भक्तोंको बहकाने आया है।

चला है ढूंढ़ने भगवानको मिट्टीके घर घरमें।
निवासस्थान है उसका हरएक ज़र्रेके दर दरमें॥
दिखाई उनको क्या देगा जो अपने दिलके गंदे हैं।

नजर आता नहीं उनको कि जो आँखोंके अन्धे हैं ॥

उग्र०—बहादुरों! इस बेईमानको पकड़कर पेड़से बांध दो। इसके किलेमें जाकर इसकी लड़की और औरतको यहां पकड़ लाओ, ताकि तीनोंका कतल एक साथ और एक तलवारसे हो।

सिपाही—जो आज्ञा। (किलामें जाना)

शां०—अरे ओ बेरहम! मुझे मारता है तो मार, मगर निर्दोष अबलाओंकी गर्दन न उतार।

उग्र०—ओ! हमें इसकी परवाह नहीं कि वह स्त्री है या पुरुष, सबला है या अबला है। मैं तुम तीनोंको जरूर मौतके घाट उतारूंगा।

रानी०—हा प्राणनाथ!

रती०—हा पिता!

शां०—मेरे परिवारकी यह दशा?

उग्र०—अब तेरा भगवान कहां है? क्यों नहीं नंगे पैर आता। क्यों नही उग्रसेनके पञ्जेसे छुड़ाता? अरे, जोरसे पुकारो! शायद सोता होगा।

शां०—अरे ओ अधर्मियो! परमात्माकी हंसी न उड़ाओ, वरना पछताओगे, पानीकी जगह खूनके आंसू बहाओगे।

उग्र०—परवा नहीं, जब समय आयेगा देखा जायगा। अभी तुम मरनेके लिये तय्यार हो जाओ।

शां०—परमात्मा! सुनते नहीं, यह भयानक पिशाच तुम्हारी

हंसी उड़ा रहे हैं। तुम्हें संसारसे निस्तेज बता रहे हैं। फिर भी तुम ख्याल नहीं करते हो, क्षण भरके लिये स्वर्ण सिंहासनसे नहीं उतरते हो? अरे आओ! आओ, जल्दी आओ! अगर आज भी मेरी सहायताके लिये नहीं आओगे तो मैं यही समझूंगा कि मेरी तुम्हारे चरणोंमें भक्ति नहीं है। अथवा इस संसारमें परमात्माकी शक्ति नहीं है।

हे हरी! हिम्मत हमारे दुश्मनोंकी टूट जांय।
जो चले तलवार हम पै उसके क़बज़े टूट जांय॥
ज्योति वो दिखला दो कि दुश्मनोंकी आंखें फूट जाय।

उग्र०—रहने दे। सिपाहियों, इन दोनों मां बेटियोंको रस्सीसे बाँध दो।

सि०—जो आज्ञा। (बांधता है)

रानी—अरे, जरा तो रहम कर।

उग्र०—रहमका असर और मेरे दिलपर? (सर्दारसे) यहूदो सर्दार,

जमा०—जी सरकार।

उग्र०—तुम रतीपर तलवार चलाओ और मैं शांतिसेन पर तलवार चलाता हूं। तुम उसे यमलोक पहुंचाओ मैं इसे यमलोक पहुंचाता हूं।

जमा०—जो हुक्म। (दोनोंका दोनोंपर तलवार निकालना)

उग्र०—ओ झूठे इन्सान! देखा—

गर्दन पर तेरी मेरा ये करता है वार हाथ।
साधेगा निशाना ये मेरा होशियार हाथ॥

तलवारके तुझपर पड़ेंगे बेशुमार हाथ।
शांति०—तलवार तुम चलाओ है भगवान मेरे साथ॥
मजबूर हूं कि मेरा है ये गिरफ्तार हाथ।
पर याद रखो ये मेरे मरनेके साथ साथ॥
तुम मारनेवाले हो दो जिनके हैं चार हाथ।
मुझको वो बचायगा हैं जिसके हजार हाथ॥

उग्र०—तो ले ये आखिरी वार।

(रूपसेन और स्वार्थविलम्ब दोनों हाथोंमें दो दो पिस्तौलें लेकर निकलते हैं और फायर करते हैं। उग्रसेनके हाथमें और जमानिशाहके हाथमें चोट लगती है तलवार गिरती है)

रूप०—खबरदार!

उग्र०—कौन रूपसेन?

रूप०—जी हां।

जमा०—कौन? शाहजादये आलम और यह सितम।

स्वा०—स्वार्थम् मूल मन्त्रस्य परमार्थम् सर्वस्व नाशनम्।

(स्वार्थविलम्ब पिस्तौलसे जमानिशाह और उग्रसेनपर निशाना सरधता है रूपसेन शांतिसेन और रतीको बन्धनसे मुक्त करता है उग्र० जमा० डरते हैं धीरे धीरे प्रस्थान)

चौथा दृश्य !

(नैनोका गाते हुए आना)

गाना—

ब्यूटीफुल लेडियां चलती हैं यूं—
गौन पहन कर वो लेडीज़ शू ।
पूछा किसीने जो हाऊ आर यू—
आल राइट थैंक यू ॥
इंगलिश स्टाइल हो, हेअर में
आइल हो, रुखपर पाउडर ॥
इधर उधर नज़रसे हर बशरका
ज़ख्मी हो जिगर ।
आँखोंमें आईग्लास ब्लू
विलायती हो गुफ्तगू ॥
आल राइट थैंक यू ॥

नैनो—मालूम नहीं कि ओल्ड फैशनकी औरतें अपने मर्दोंसे क्यों इतना डरती हैं। गृहस्थीकी लाखों मुसीबतें बर्दाश्त करती हैं। फिर तारीफ़ तो ये है कि मर्द अगर, हजार जगह आँखें लड़ायें तो उन्हें कोई नहीं कहने वाला है। और औरतें अगर

दो घड़ी ठाकुरजीके मन्दिरमें साधु सन्त या पुजारियोंसे दिल बहलायें तो उनकी शिकायत करनेके लिये विश्वामित्र है, मौजी है, मतवाला है! मेरा ज़ोर चलता तो भगवानसे कहकर इंगलिशमैनोंको छोड़कर हिन्दोस्तानियोंका पैदा होना ही बन्द करा देती।

सती साध्वीका होता है सदा उद्धार फैशनसे।
जो सच पूछो तो औरतका है सब श्रृङ्गार फैशनसे॥

गु०—(आकर) मैंने कहा।

नै०—कौन मि० गुप्ता।

गु०—जी हुजूर।

नै०—मैं देखती हूं कि तुम हर जगह टपक पड़ते हो। भला तुम आदमी हो या सूरते लंगूर?

गु०—वाह साहब! आप तो अच्छा मज़ाक करती हैं। सूरते अंगूरको सूरते लंगूर बना रही हैं।

नै०—अजी! यह तो मैंने ज़रा मज़ाक किया। क्या तुम बुरा मान गये?

गु०—नहीं साहब! बुरा माननेकी क्या बात है?

हंसी यह तो है थोड़ीसी भला इसमें बुरा क्या है?
अगर जूते भी मारो तुम कहेंगे हम कि अच्छा है॥
जो पब्लिक पूछेगी हमसे कि क्यों यह माजरा क्या है?
जवाब देंगे उसे हम 'भाई यह फैशनका झगड़ा है'॥
मास्टरोंको भी जुतियाना न्यूलाइटकी सभ्यता है।

नै०—अच्छा ! इस वक्त कहांसे आ रहे हो ?

गु०—मैं तो हेड आफ़िससे आ रहा हूं।

नै०—हेड आफ़िससे क्यों आरहे हो ?

गु०—तुम्हें बुलानेके लिये।

नै०—क्या प्रोप्राइटर साहेबने बुलाया है ?

गु०—जी हाँ, उन्होंने याद फरमाया हैं।

नै०—क्या मामिला हैं ?

गु०—मामिला क्या हैं। आज थियेटर देखनेका इरादा है।

नै०—ओ; आई सी। अब मैं समझी। भला तमाशा क्या है ?

गु०—तमाशा एकदम न्यू यानी "भयंकर भूत।" अब आप जल्दी मेरे साथ चलिये।

नै०—अच्छा मैं नौकर को बुलाती हूं और उसे यहां बैठाकर आप के साथ चलती हूं।

गु०—हां, हां, जल्दी बुलाइये।

नै०—(आवाज़ देती है) वेल मि० जड़ बुनियाद !

गु०—तुम नौकरको भी मिस्टर कहके बुलाती हो ?

नै०—अजी ! वह नौकर बड़ाही अमीरज़ादा है।

गु०—अमीरज़ादा है तो नौकरी क्यों करता है ?

नै०—उसको नौकरीका शौक़ लगा है।

गु०—क्यों नहीं, आख़िर यह भी तो न्यूलाइटकी सभ्यता है।

नै०—(फिर आवज देती है) अजी मि० जड़ बुनियाद।

जड़०—(अन्दरसे बोलना) अरे जड़बुनियादको किसने किया याद ?

नै०—सरकार! जरा इधर तो आना।

जड़०—अच्छा साहब! अब मै कमरेसे बाहरके लिये होता हूं रवाना।

गु०—हैं! ये आदमी है या दिवाना?

जड़० - वन, टू, थ्री, चार, पांच, छै, सात पूरी हो गई कवायद। कहिये मिस साहबा! क्यों किया है याद?

गु०—अच्छा भेष है मालूम नहीं होता कि ब्राह्मण सन्तान है या मुगलकी औलाद? काशीजीमें रहता है या फरुखाबाद?

नै०—देखो मि० जड़बुनियाद! मैं जरा थियेटर जाती हूं।

जड़०—गो आन।

नै०—मगर यहां कोई आवेगा तो उससे क्या कहोगे?

जड़०—उससे भी कहूंगा कि गो आन।

नै०—अरे उससे ऐसा नहीं कहना नहीं तो वो चला जायेगा।

ज०—मिस साहबा चाहे कोई रहे या चला जाय मगर मुझसे तो सिवाय अंग्रेजीके हिन्दी नहीं बोला जायगा।

नै०—अच्छा, अंग्रेजी ही बोलना है तो आने वालेसे कहना कि सिट डाउन प्लीज़।

जड़०—ये तो बड़ी लम्बी चौड़ी स्पीच है। क्यों मिस साहबा! आपने कहा कि 'सिट डाउन प्लीज़' इन तीन टुकड़ोंमेंसे अगर अगल बगलके दो टुकड़े यानी सिट और प्लीज़ उठा दिये जांय और बीचका टुकड़ा डाउन अगर रक्खा जाय तो क्या कोई हर्ज है।

ने०—अरे नहीं नहीं, ऐसा न कहना, वरना पिटते २ तुम्हारा सवेरा हो जायेगा।

जड़०—अच्छा अगर डाउन छोड़कर सिर्फ सिट प्लीज़ या प्लीज़ सिट कर दिया जाय तो क्या कुछ बुरा है ?

ने०—अरे मैंने कह दिया कि मेरी बातको न बदलना क्योंकि ये हिन्दुस्तानी नहीं, अंग्रेजी मामला है।

ज०—अब मेरी समझमें आया कि ये हिन्दुस्तानी नहीं, अंग्रेजी मामला है।

गु०—अबे तू आदमी है या गधा है ?

जड़०—चुप रहो ये हिन्दुस्तानी नहीं, अंग्रेजी मामला है।

ने०—चलो मिस्टर गुप्ता ! चलें।

गु०—हां ! हा ! चलो।

नैनी—(नौकरसे) देखो मेरी बातोंको खूब याद रखना अगर भूल गये तो तुम हो और हमारे जूतेका तला है।

जड़—मिस साहबा ! मुझे अच्छी तरहसे याद है कि ये हिन्दुस्तानी नहीं, अंग्रेजी मामला है।

(गुप्ता और नैनीका जाना)

जड़—यारो, मेरा बाप पहले बड़े बड़े सेठोंका पानी भरा करता था और मैं रईसोंका चौका वर्तन करता था मगर किस्मतने पल्टा खाया यानी सट्टेके व्यापारने मुझे लखपती बनाया, लखपती तो बन गया मगर यारो मसल मशहूर है कि लड़कपनकी आदत नहीं जाती है। इसीलिये नौकरी

करनेके शौक़से मिस साहबाके यहां चला आया। यहां २४ घन्टेमें केवल ४ घन्टेकी नौकरी है और २० घन्टे मजा है और रोजाना यह भी मालूम होता है कि ये हिन्दुस्तानी नहीं, अंग्रेजी मामला है।

गाना—

लाखोंका मैं मालिक हूं करोड़ोंकी है रकम।
रिकशा भी है टेकसी भी है दो घोड़ोंकी हैं टमटम।
ऐ मेरे यार, होकर जरदार, आदतसे हूं लाचार।
नौकरीके शौकमें रहता हूं हरदम॥

(स्वार्थावलम्बका प्रवेश)

स्वा०—स्वार्थम् मूल मन्त्रस्य परमार्थम् सर्वस्व नाशनम्।

जड़—अहा क्या आप मिस साहबासे मिलने आये हैं। बैठिये २ अरेरेरे भूला? सिट डाउन प्लीज! सिट डाउन प्लीज।

स्वार्था०—हैं! मेरे घरमें मेरा स्वागत करने वाला तू कौन है रजाला?

जड़—जनाब, ये सब कुछ मिस साहबासे कहियेगा अभी तो सिट डाउन प्लीज हो जाइये।

स्वा०—अरे भाई तू कौन है ये तो बता?

जड़—(हाथ पकड़कर) जनाब, आपको जो कुछ पूछना है सिट डाउन प्लीज होकर पूछिये।

स्वा०—अरे वाह! ये तो अजीब बला है।

जड़—देखिये साहब, ये हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामला है।

स्वा०—अरे ये कोई पागल है क्या?

जड़—अब कहिये कि आप पूछते हैं क्या?

स्वा०—भाई तुम्हारा नाम?

जड़—पूरा बताऊं या आधा?

स्वा०—पूरा बताओ भाई, पूरा।

जड़—अच्छा सुनिये, मेरा नाम है मिस्टर रामचन्द्र अब्दुल रह-
मान याने आर सी ए आर शर्मा बहादुरखान।

स्वा०—हे भगवान! ये नाम हैं या नामोंकी खान। आपका
निवास स्थान?

जड़—आधा इङ्गलेण्ड आधा हिन्दोस्तान।

स्वा०—आपकी जाति?

जड़—थोड़ा पारसी थोड़ा क्रिस्तान थोड़ा हिन्दू थोड़ा मुसलमान।

स्वा०—भाई वाह, तुम्हारी तो विचित्र कला है।

जड़—जनाव, ये हिन्दुस्तानी नहीं, अंग्रेजी मामला है।

स्वा०—हां होगा भाई होगा। आजतक तो मैं यही समझता था
कि ये न्यूलाइटकी सभ्यता है मगर आज यह भी मालूम हुआ
कि ये हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामला है। मगर आप मेरे
घरमें क्यों तशरीफ रखते हैं?

जड़—जनाव, यहां तो हम मिस साहवा की नौकरी करते हैं।

स्वा०—क्या नैनीने आपको नौकर रक्खा है?

जड—जी हां! मैं उन्हींकी नौकरी करता हूं।

स्वा०—हे भगवान इस मेहतरकी नौकरीसे ब्राह्मणकी लाज तुम्ही

बचाना। क्यों भाई काम क्या करते हो?

जड़—सिर्फ सवेरे चाय बनाना दोपहरको होटलसे खाना लाना शामको ड्रेस पहनाना और रातको थियेटरकी सैर कराना।

स्वा०—अरे हाय हाय, मेरे घरका सत्यानाश होगया।

जड़—ये हिन्दुस्तानी नहीं, अंग्रेजी मामला है।

स्वा०—अरे मैं क्या जानता था कि मेरी औरत अंग्रेजी पढ़कर इस कद्र बिगड़ जावेगी, मेरी पंडिताई और ब्राह्मणपनेको घोकर पी जावेगी (नौकरसे) भला इस वक्तको गई कहां है?

जड़—वो तो इस वक्त थियेटरमें गई हैं।

स्वा०—अररर, इतनी आजादी कि जब चाहो तब ओवर कोट लादी और सवारीकी घोड़ी चढ़ा दी खैर आज ही इस औरत को निकाल बाहर करतो हूं।

जड़—सरकार चाय लाऊं?

स्वा०—अरे भाड़में जा तू और तेरी चाय, इन सब आजादियोंका मूल कारण मिस्टर सी आर गुप्ता है।

जड़—जनाब ये हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामला है।

स्वा०—अबे तू मेरी आंखोंसे टल जा वरना मैं तुझे कच्चा चबा डालूंगा। जानता नहीं कि मुझको इस वक्त ५०० डिगरीका गुस्सा चढ़ा है।

जड़—जनाब सम्हाल कर जबान निकालिये ये हिन्दुस्तानी नहीं, अंग्रेजी मामला है।

स्वा—अबे सूअर अब मुझे मालूम हुआ कि तेरे लिये मौतका

दरवाजा खुला है।

(गला पकड़कर जोरसे दबाता है)

जड़—ये हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामला है।

(स्वार्थावलम्ब जड़ बुनियादको गला पकड़कर बाहर निकाल देता है
जड़ बुनियाद दबे पांव फिर लौट आता है)

स्वा—पाजी बदमाश कहींका मेरा जी जलता है और ये मज़ाक करता है क्या करूं इस वक्त गुप्ता नहीं मिलता वरना कच्चा ही चबा जाता। यारो ऐसी शादीसे तो कुंवारा ही रहना भला है।

जड—बेटा जानते नहीं थे कि ये हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामला है।

स्वा—अब क्या करूं, हां, यही ठीक है मकानका दरवाजा बंद कर दूं और सो जाऊं। जब वो रातको आकर दरवाजा खुलावेगी तो उससे पूछूंगा कि क्यों देवीजी क्या अँग्रेजी पढ़ानेका यही नतीजा है।

जड़—जी हां ये हिन्दुस्थानी नहीं अंग्रेजी मामला है।

स्वा—औरतको इंगलिश पढ़ाकर हो गये बरबाद हम।
वो तो खाये होटलोंमें भूखे हम रहते स्वयम ॥
इतना करने पर भी हाय आती नहीं गहरी रकम।
स्वार्थम् मूल मन्त्रस्य परमार्थम् सर्वस्वनाशनम् ॥ (जाना)

जड़—जाओ बेटा तुम दरवाजा बंद करके सो जाओ, लेकिन मैं तो मिस साहबाको अन्दर बुलाऊंगा। तुम्हारी सारी करतूत

सुनाऊंगा जब वो तुमपर बिगड़कर तुम्हें हजारों भली बुरी सुनायेंगी तब तुम्हें मालूम होगा कि औरतोंको फैशनेबुल बनानेका नतीजा क्या होता है और मैं भी सलाम करके कहूंगा कि ये हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामला है।

(जाना)

पांचवां दृश्य

जंगल—

(रतीका प्रवेश)

रती—आगकी चिनगारियां फैली हैं अब तो देशमें।
यह न मालूम था कि शत्रू है भाईके वेशमें ॥
साथियोंमें भी न कोई हमको देता साथ है।
हम अनाथोंकी गती भगवान! तुम्हारे हाथ है ॥

सर्वनाश हो गया! प्रेमके फेरमें पड़कर धन, जन, सम्पत्ति सबका सर्वनाश हो गया। सारे संसारने मुझे समझाया, रूपसेनको छोड़नेके लिये दुनियांने मुझे समझाया। मगर क्या मैं छोड़ दूंगी? कभी नहीं। उसने मेरे लिये राज, धन, धाम छोड़कर योगियोंका भेष बनाया। इसलिये मैं भी माता, पिता, राज, परिवार सब छोड़कर उसके लिये योगिन बनूंगी। (उसने अपना कर्तव्य कर दिखाया है मै अपना कर्त्तव्य पालन करूंगी)

मेरे दिलपर जब कि दिलबरका इशारा हो चुका।
इस जगतका नातारिश्ता मुझसे न्यारा हो चुका ॥
छुटे वह क्योंकर कि जिसपर प्रेम सारा हो चुका।
उसकी मैं प्यारी हुई वह मेरा प्यारा हो चुका ॥

-गाना—

बेकसकी आह सुनले, बंशीके बजइया।
अबलाकी लाज रखले, ऐ कृष्ण कन्हैया॥
बृजमें तो जल पड़ा था, हम पर प्रलय पड़ा है।
ग्वाले! हमें बचाले, गोकुलके बचैया॥ अबला॥
लंका विजय करनेको, सागरमें सेतु बांधा।
दुःख सिंधु मेरा बांध ले, सागरके बंधैया॥ अबला॥
विष-विन्दु पूतनाका, पीकर सुयश बढ़ाया॥
मेरी विपतको पीले, ऐ विष पान करैया॥ अबला॥

(गाते हुए जाना, बशीरका प्रवेश)

(साथ साथ नसीर, नज़ीर, मुनीरका आना और रतीको देखकर बशीरका आशिक होना)

बशीर—क्या खूबसूरत नाज़नीन है? गोया माहताबकी खुशनुमा रंगतसे बनी हैं।

नसीर—क्यों बशीर! क्या सोचते हो?

बशीर—अमां! देखो न!! कैसी खूबसूरत लड़की जारही है!

नसीर—तो क्या! इससे शादी करनेका इरादा है?

मुनीर—वह तो हिन्दूकी लड़की मालूम होती है फिर शादी क्यों करने लगी?

नज़ीर—क्या कहा, हिन्दूकी लड़की? वाह! वाह!! तब तो एक काफिरको मुसलमान बनायेंगे।

मुनीर—भाई इस भले काममें तो हम भी सवाब कमानेके लिये तैयार हो जायेंगे।

नसीर—अरे सवाब तो कमाओगे मगर बेमौतकी पड़ेगी तब कहां जाओगे ?

मुनीर—इसके क्या मानी ?

नज़ीर—अरे जानते नहीं। हमारे बादशाह नैअरे आलम इन काफिर हिन्दुओंकी कितनी तरफदारी करते हैं ?

मुनीर—अरे मियां! नैअरे आलमका किस्सा पीछे देखा जायगा। अभी तो अपना काम करो। अभी क्या नैअरे आलम यहां देखते फिरते हैं ?

नसीर—ठीक तो है यार।

बशीर—अच्छा तो हो तैयार। वह देखो! सामनेसे आरही हैं।

(रतीका आना)

रती—पिताजी प्रात कालसे फलोंकी तालाशमें गये हैं मगर अभी तक नहीं आये।

बशीर—क्या मैं यकीन कर सकता हूं कि आप इसी खुशनुमा ज़मीनकी तख्तनशीन हैं।

रती—आप कौन हैं ?

बशीर—मैं एक मुसलमान हूं।

रती—जब तो आइये और बैठिये, आप मेरे मेहमान हैं।

बशीर—मगर मेरा बहुत कड़ा अरमान है।

रती—अरमान कैसा ?

बशीर—यही, कि मैं तुम्हारी खूबसूरतीपर लट्टू हो गया हूं।

रती—बड़े अफसोसकी बात है, कि एक मुसलमान भाई हिन्दू बहिनके ऊपर आशिक हो जाय और उसको शर्म न आये।

बशीर—अरे शर्म कैसी! मैं तो यह चाहता हूं कि क़ाज़ीको बुलाकर अभी निकाह हो जाय।

रती—ओ बेईमान, ऐसी बात निकालनेमें तेरी ज़बान कट नहीं जाती।

बशीर—अरी ओ छोकरी! हम अपने मजहबकी शरिअतसे काफिरोंकी लड़कियोंसे हर तरहसे निकाह कर सकते हैं। तेरे भाई बनानेका मुझे जरा भी गुमान नहीं। यह काफिरोंका मजहब नही है बल्कि कट्टर मुसलमानका है।

रती—अरे क्यों इसलामका खाका उड़ाता है।

न तुझको दीनसे मतलब न कुछ मजहबको शर्म है।
बहिनसे ब्याह करना क्या मुसलमानोंका धर्म है॥

बशीर—हां हां! काफिरोंके साथ निकाह करना ही हमारा धर्म हैं।

रती—अरे बेवकूफ! हम काफिर नहीं बल्कि मुसलमानोंके सच्चे तरफदार हैं।

नहीं काफिर हैं हम तो कौमे मुसलिमके बिरादर हैं।
अगरचे काम आये तो ये सर मुसलिम पै हाजिर है।
जो मुसलिम होके हिन्दूको सताता है वह काफिर है॥

बशीर—ओ लड़की! तुम जानती नही! एक तो हम मुसलमान

हैं दूसरे कौमके पठान हैं अगर गुस्सा आया तो बोटी बोटी फाड़कर फेंक दूंगा।

रती—मरे जा जा। ये पाठानोंका गुस्सा वैश्य समाजमें दिखाना मैं तेरे धमकियोंमें आनेवाली नहीं...क्षत्री पुत्री रती पठानोंसे डरनेवाली नहीं।

जरा देखूं शरीर छूता है कौन इस हिन्दू पुत्रीका।
मैं दुनियांसे नहीं डरती मेरा है खून क्षत्रीका॥

बशीर—यारो देखते क्या हो। बांध लो इस जबांदराज़को।

नेअरे—(आकर) खबरदार! ओ जालिम।

बशीर—कौन—श श श श शाहंशाह ने ने ने नेअरे आलम।"

ने०—हां हां नेअरे आलम। ओ पाजी कमीने। मेरे मुल्कमें रहकर यह वर्ताव और ये करीने। ठहर जा। मैं तुझे अभी मजा चखाता हूं। (तलवार निकालना)

रती—नहीं नहीं आप इसको न मारिये।

ने०—क्यों तुम क्यों रोकती हो?

रती—मैं इसलिये रोकती हूं कि मैं हिन्दूकी लड़की हूं अतएव अपने ही द्वारा हिन्दुस्तानी किसी भाईका विनाश नहीं करवाना चाहती।

मुसलमा और हिन्दूको ये आपसमें सगाई है।
जो पैदाइशकी मिट्टी एकसी दोनोंमें आई है॥
जहां इज्जत मिली तुमको वहांसे हमने पाई है।
बुरा है या भला पर मुसलमां हिन्दूका भाई है॥

ने०—शाबाश ! इस मुल्कके नेक फरिश्ते शाबाश !! जा, जा, मुर्दार मेरी आँखोंके सामनेसे दूर होजा, वरना मेरी तलवार का शिकार हो जायगा।

(मशीर वेरहका भाग जाना)

प्यारी बहिन, तुम इस जंगलमें क्यों रहती हो ?

रती०—भाई, आपको शायद मालूम नहीं है कि हमारे पिता शांतिसेनका राज ताज छीनकर अन्यायी उग्रसेनने हमको राहका भिखारी बना दिया।

नै०—(स्वत:) या खुदा उस मूज़ीने एक इंसाफ पसंद बादशाहको इस तरह कर दिया। मगर परवाह नहीं। मैं उसको इसका मज़ा चखाऊंगा। मैं अपनी तलवारके जोरसे शांतिसेनको दुबारा राज दिलाऊंगा। (मगर) बहिन ! फर्ज़ करो कि तुम्हारे हाथमें तुम्हारा गया हुआ राज आ जाय तो क्या मुसलमानोंकी तरफसे हिन्दुओंका दिल साफ करने के लिये तुम कोशिश करोगी।

रती—करूंगी और जरूर करूंगी।

यत्न मैं ऐसा करूंगी कि जिससे हिन्दू नेक हों।
फूट है जिसकी वजहसे दूर वह अविवेक हों॥
घरके झगड़ोंमें चले संग्राम युद्ध अनेक हों।
गैर कौमोंसे मगर लड़नेमें दोनों एक हों॥
मैं नतीजा उस समय समझूंगी अपने कामका।
हिन्दुओंके हाथसे झंडा उठे इसलामका॥

नैअ०—अगर तुम्हारा यह सच्चा इरादा है तो एक हिन्दू बहिनके लिये मुसलमान नैअरे आलम मदद करने पर अमादा है।

मेरी ख्वाहिश है कि आज़ाद हरबशर हो जाय।
उदूके घरमें ही हम बेघरोंका घर हो जाय॥
मेरे मौलाकी मेरे मुल्क पर नज़र हो जाय।
वो खबर ले, तो दुश्मनोंको खबर हो जाय॥
मेरा दिल, मेरी ख्वाहिशोंसे खुदा! तू भर दे।
मुझको हिन्दू बहिनकी नज़रोंमें हिन्दू कर दे॥

(शांतिसेनका प्रवेश)

शां०—नहीं मिले! तीन रोज उपवास करके भी खानेके लिये फल नहीं मिले। हाय! दुनियां निर्दयी होती तो मुझे परवाह नहीं थी, मगर अब तो जंगलके दरख्त भी निर्दयी हो गये!

जो झरने बहते थे हरदम, वही अब जल नहीं देते।
अनाथोंको ये वनके वृक्ष भी अब फल नहीं देते॥

नै०—नहीं देते तो आप उनसे अब न मांगिये। क्योंकि मांगने वालेंको खुदा भी नहीं देता। इसलिये दूसरोंसे मांगना छोड़ कर खुद लेलेनेकी कोशिश कीजिये।

शां०—तुम कौन हो?

नैअरे०—ऐ मेरे बुजुर्ग साथे! मैं रती कुमारीका मुंह बोला भाई हूं।

शां०—रतीके तुम भाई हो! अच्छा आओ, बैठो, मगर हां! मैं ऐसी दीन अवस्थामें तुम्हारा स्वागत कैसे करूं?

नै०—आप इतना ही कीजिये कि मुझे अपना मुसलमान पुत्र समझ कर अपने गलेसे लगा लीजिये।

शां०—क्या तुम्हें गले लगा लूं?

रती—बेशक! अगर आप हिन्दूपनेका दावा रखते हैं तो ऐसे मुसलमानों को गले लगाना ही आपका धर्म है।

शां०—रती! यह क्या तू कहती है!

रती—हां हाँ मैं कहती हूं।

शां०—अच्छा! मैं तेरी बात मानता हूं। तेरे कहने पर मै हिन्दू-धर्मका बीड़ा उठाता हूं। आओ मुसलमान बच्चे! मैं तुम्हें खुश होकर अपने गले लगाता हूं।

नै०—"हे मेरी खुश नसीबी! चालिदने बुला लिया।"
अरे मुस्लिमको आज हिन्दूने गले लगा लिया॥

(दोनोंका गले लगाना—रतीका पुष्प बरसाना)

(फ्लाट बंद होना पर्दा गिरता है)

छठा दृश्य !

(बुद्धिसेन मन्त्री अपनी प्रजा फौजके साथ आता है)

गाना—

बहादुरो सर्दारो, लड़नेको हो तैयार, मारो उसको जो हो
अपना दुश्मन नावकार।
खञ्जर हों, भाले हों, पिस्तौलें हों और तलवार ॥
शत्रुओंकी शान बिगाड़ो करो उन्हें लाचार।
ऐ वीरो ! तुमसेही है इस भारतका उद्धार ॥ बहादुरो ॥

मन्त्री—ऐ उग्रनगरकी प्रजाके वीर बलवानो ! तुम जानते हो कि आज इस बुड्ढे मन्त्रीने तुम्हें जङ्गीड्रेस क्यों पहनाया है ?

सब—हां, हां हम खूब जानते हैं।

मन्त्री— अच्छा तो बताओ, लड़ाईके वक्त क्या हुनर दिखाओगे ?

पह०—हम अपने ऊपर किये हुए अत्याचारोंका बदला चुकायेंगे।

दूस०—हम शांतिनगरके विनाश करनेका मजा चखायेंगे।

तीस०—हम उस यहूदी जमानिशाका सिर उड़ायेंगे।

चौथा—हम उग्रसेनके किलेको तोपोंसे ढायेंगे।

पांच०—हम सब मिलकर युद्धमें अड़ जांयगे। उग्रसेनसे लड़ जांयगे, उसका ताज छीनकर कुमार रूपसेनको पहनायेंगे हम देशके नाम पर अपना सर कटायेंगे।

मन्त्री—धन्य है, मेरे सर्दारो धन्य है। अगर ईश्वरका हम पर दयाका हाथ है और तुम्हारा साथ है तो अवश्य ऐसा ही होगा। जबतक इस बुड्ढेकी जानमें जान है तबतक उग्रनगरमें अन्यायी राजा उग्रसेनका राज न होने देगा।

मैं बुड्ढा हो गया हूं पर मेरी हिम्मत नहीं बुड्ढी।
मेरे सब अङ्ग बुड्ढे हैं मगर आदत नहीं बुड्ढी॥
सफेदी है इन बालोंमें मगर सूरत नहीं बुड्ढी।
मेरे इस खञ्जरे खुङ्खारकी हरकत नहीं बुड्ढी॥
युवक जो अत्याचारी हैं उन्हें बुड्ढा हरा देगा।
तुम्हारे देशको आज़ाद ये बुड्ढा करादेगा॥

(उक्त गानेके साथ प्रस्तान)

सातवां दृश्य

(नेअरे आलमका दर्बार)

नेअरे०—ऐ मजहबे मुसलमानकी पाक रूहो! आज तुम्हें मैं उस कौमके बादशाहकी मदद करनेके लिये मजबूर करूंगा कि जिसे तुम शायद अपने ख्यालसे काफिर समझते हो।

सालारजंग—हुजूरका शायद हिन्दुओंकी तरफ ख्याल है।

नेअ०—हां, उसी हिन्दू कौमके बादशाह शालिसेनका बुरा हाल है।

सा०—मगर उसकी मदद करना इसलामके खिलाफ है।

नेअ०—सालारजंग! तुम भूलते हो। बेकसकी मदद करनेमें कुछ भी गुनाह हो मगर वह इसलामके तरफसे माफ है।

साला०—सरकार! आप मुल्के इसलामियांके बादशाह हैं मजहब के बादशाह नहीं। मजहबी रिआयाको आपकी बादशाहतकी परवाह नहीं।

नेअरे०—ऐ मेरे प्यारे सर्दार! यह हमने माना कि हमारा हुक्म मजहबी इसलामियोके दिलोंमें खलल पैदा करेगा मगर मजबूरन् मुझे कहना पड़ता है कि इसलामका हर एक बहादुर शख्स क्या अपने हिन्दू भाईको मदद न करेगा?

साला०—हिन्दू और मुसलमानोंमें भाईका क्या रिश्ता है?

नेअ०—फर्ज करो कि एक फुलवाड़ीमें दो तरहके गुलाब हैं

मसलन एक सफेद और एक सुर्ख ! तो उनमेंसे एकको गुलाब और एकको गेंदा नहीं कहा जाता, बल्कि दोनों रंगतोंके गुलाबोंको गुलाब ही पुकारा जाता है। इसी तरह यह मुल्क फुलवाड़ी है। हिन्दू और मुसलमान यह दो रंगतोंके गुलाब हैं रंगतें दोनोंकी जुदा हैं मगर खुशबू दोनोंमें एकसी है।

हिन्दके फूल दोनों सुर्ख और सफेद हैं।
एक पैदाइश है लेकिन रंगतोंके भेद हैं॥
ताकतोंमें एक रुस्तम दूसरे शमशेर हैं।
एक पहलूमें कुरान और दूसरेमें वेद हैं॥
हो मुसलमान नेक तो समझो कि हिन्दू नेक हैं।
दो तरहके दो गुलाब हैं लेकिन खुशबू एक है॥

साला०—क्या खूब ! शाहंशाह आलम आपने बहुत ठीक समझाया लिहाजा मैं अपने कहे हुए अलफाज़को वापिस लेनेको लाचार हूं और कौम हिन्दूको अपना भाई करार देने को तैयार हूं।

नैअ०—यह इकरार मैं जबानी नहीं दिलसे चाहता हूं।

सा०—मैं अपने सच्चे सच्चे दिलसे एकरार करता हूं।

नैअरे०—देखो ! अब भी सोच लो। क़ौल देकर फिरना अच्छा नहीं।

साला०—हमने खूब सोच लिया है।

नैअ०—क्या इस क़ौलसे नहीं फिरोगे ?

सा०—हरगिज नहीं।

नैअ०—हिन्दुओंकी तरफदारी मंजूर है।

सा०—मंजूर है।

सभासद—मंजूर है।

नै०—मंजूर है।

सब—हां हां मंजूर है।

नै०—शाबाश! मेरे मुल्कके रखवालो! शाबाश मेरी रियासतके नौ निहालो! अपनी तलवारें सम्हालो और उस काफिर उग्रसेनकी बदइंसाफियोंका किस्सा तमाम कर डालो।

सा०—हम जान मालसे तैयार हैं।

नै०—देखो इसमें छिपी हुई और बातें हैं जो कि मजहबे इसलाम के लिये अजहद सवाब हैं।

सा०—वह कौनसी बात है?

नै०—तुम जानते हो कि दुनियामें यहूदीलोग किस कदर जालिम और वाहियात हैं?

सा०—हां हां! हुजूर।

नै०—और यह भी समझते हो कि इसलाम उसे कितनी नीची नजरसे देखता है?

सा०—यह भी मालूम है।

नैअ०—अच्छा तो सुनो और कान खोलकर सुनो कि उसी यहूदी कौमका सरदार डाकू जमानिशाह, उग्रसेनकी मददके लिये तैयार है।

सा०—अहा! शुक्र परवरदिगार है! अब हमको खुशी करना

चाहिये कि इसलामके असली दुश्मनों का सर काटकर नेजेपर चढ़ायेंगे और उनके सरपर इसलामका डंका बजायेंगे।

नै०—शाबाश तुम्हारा जोश काबिले तारीफ है।

सा०—बतलाइये २ कहां वो हमारा दुश्मन वो हरीफ है?

नै०—घबराओ नहीं। इस जंगमें अक्लसे काम लेना चाहिये। मेरी रायसे कुल फौज तैयार कराकर रातको यहांसे सफर करना चाहिये और सुबह पहुंचकर उस मर्दूदको जंगकी खबर करना चाहिये जबतब वह अपनी फौजको तैयार कराये उससे पेश्तर धावा मारकर क़िला तोड़ दिया जाय।

सा०—हुजूरकी राय सबसे आला है। बस अब इसलामका बोल बाला है, दुश्मनोंका मुंह काला है।

नै०—बहादुरो, फिरसे कहो। इस जंगके लिये तैयार हो?

सब—तैयार हैं।

नै०—मज़हबे इसलामके लिये तैयार हो?

सब—तैय्यार हैं।

नै०—मुल्क और अपने नामके लिये तैयार हो?

सब—हाँ, हां तैयार हैं।

नै०—अच्छा तो आगे बढ़ो और अपनी कमर कसो!

चखा दो दुश्मनों को हम इसलामी शेर हैं।
वह भी तो जान लें कि हां बेशक दिलेर हैं॥
फ़तह शिकस्त होगी तो किस्मतका फेर है।
है मुझको यह यक़ीं कि उद मुझसे ज़ेर हैं॥

दुश्मन न रखो हिन्दका गर तनमें जान है।
हिन्दूका मददगार अब ये मुसलमान है॥

सब—हाँ, हाँ है और जरूर है।

सलीम—बढ़ते हैं कदम आज हमारे उमंगमें।
गर्दन यहूदियों की तलवारोंके संगमें॥
गोते लगा रहा है दिल जंगी तरंगमें।
उस वक्त हम समझेंगे कि जीते हैं जंगमें।
जब हम रंगेंगे खून यहूदीके रंगमें॥

(तलवारें म्यानसे निकालना टेबला पर्दा गिरता है)
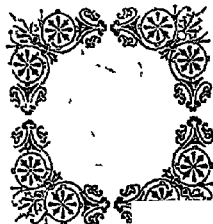
आठवां दृश्य.

(जमानिशाहका आना)

रास्ता—

जमा॰—आह! समझा, शांतिसेन तेरी कार्रवाइयोंको मैंने अच्छी तरह समझा। तू यह समझता है कि मैं मुसलमानोंकी मददसे यहूदी ज़मानिशाह पर फतह पाऊंगा। ओ मलऊन! मैं तुझे अकेला ही जहन्नुम पहुंचाऊंगा। अःहा वही सामनेसे मुसलमानी फ़ौज आरही है। अब मुझे भी होशियार हो जाना चाहिये और जो मैंने टर्कोंका जाली ख़त बनाया है इसीसे सिपहसालार सालारजंगपर अपना सिक्का जमाना चाहिये।

हिम्मतसे हरीफोंकी जंगी फौज हटा दूं।
दुश्मनका ज़ोर पहले ही ताकतसे घटा दूं॥
हिकमतमें अपनी अक्ल बेशुमार लुटा दूं।
कांटा जो खटकता है उसे जड़से मिटा दूं॥

(सालार जंगका फौजके साथ प्रवेश)

गाना—

जंगमें जंगमें, दुश्मनोंके संगमें, वो करो लड़ाई जिससे हो
जाये वो ज़ेर ज़ेर।

ऐ बहादुरो दिखावो अपने वो हुनर।
जिससे सर बसर फ़तह हो शहर।
मारो मरदूदोंको रणमें घेर घेर घेर॥

सा०—ऐ मुल्के इसलामियांके सच्चे जांनिसारो! आज तलवारोंके वो हाथ मारो कि दुश्मनोंकी हिम्मत मजबूर हो जाय। उग्रसेनकी शान शौकत चकनाचूर हो जाय।

छीन लें हथियार हम हिम्मतसे खासो आमसे।
हो तबाह कौम यहूदी मजहबे इसलामसे॥

१० सि०—हां, हां, जरूर।

लड़कर यहूदियोंको हम नाशाद करेंगे।
इन डाकुओंसे मुल्कको आज़ाद करेंगे॥

सा०—शाबाश, बहादुरो! आगे बढ़ो और जिस तरह हो इस शहरको जल्दी फतह कर लो।

जमा०—(आकर) ठहरो, इस कदर जोशमें न आओ। काफिरोंके फेरमें पड़कर इसलामको दुनियांसे न मिटाओ।

सा०—तुम कौन हो? जो हमारे जोशमें खलल डालते हो।

जमा०—मैं शाहशाह टर्कोंका एक अदना जासूस हूं।

सा०—क्या टर्कोंका जासूस? खैर तुम क्या कहना चाहते हो?

जमा०—मेरे कहनेका मतलब यह है कि आपने आज यह तलवार किसके ख़िलाफ़ उठाई है?

सा०—क्या तुम नहीं जानते कि आज यहूदी डाकुओंसे मुसलमानोंकी लड़ाई है।

जमा०—हर्गिज नहीं। जिसको तुम यहूदी जमानिशाह समझते हो वह यहूदी नहीं बल्कि टर्कोंका मशहूर सिपहसालार है।

सा०—क्या सिपहसालार! इसकी पहचान!

जमा०—यह देखिये, टर्कोंका ख़त और उसपर सुलताने शाहीका निशान।

सा०—(ख़त पढ़ता है) मुल्के इस्लामियांके शाहशाह नैअरे आलम! तुम्हें सुलतान टर्कोंकी तरफसे आगाह किया जाता है कि हमारे यहांसे जंगी सिपहसालार ज़ुहूनुनके साथ चन्द जासूस हिन्दोस्तान जाते हैं, इनकी खातिरदारी करना तुम्हारा फर्ज है फर्ज़ी नाम सिपहसालारका "डाकू जमानिशाह" है।

"सुलतान टर्की"

बेशक! काफिरोंने हमको बहुत धोखा दिया।

जमा०—और उसपर तुर्रा यह है कि आपके शाहंशाह नैअरे आलमको राजा शांतिसेनने रिश्वत देकर अपनी तरफ मिला लिया है।

सा०—अगर ऐसा है तो मैं नैअरे आलमको भी इसका मजा चखाऊंगा। ऐन मैदाने जंगमें मय अपनी फौजके उसके खिलाफ हो जाऊंगा।

जमा०—क्या आप सच कहते हैं?

सा०—हां हां हम कसम खाके कहते हैं।

जिसने हमें उभारा हम उसको उभार देंगे।
रिश्वतकी एवज उसको तलवारोंकी धार देंगे॥

हम अपने घरके दुश्मनकी जान मार देंगे।
हम नैअरे आलमको तख्तसे उतार देंगे॥

जमा०—या खुदा! आप फतहयाब हों।

सा०—बहादुरो! अपनी तलवारें तानो और यहूदी जमानिशाहके बदले नैअरे आलमसे जंग ठानो।

सब—अल्ला-हो-अकबर!

जमा०—(स्वगत) अहा! खूब जाल बनाया और उसमें दुश्मनोंको अच्छी तरह फंसाया। अब जाऊं और उग्रसेनको यह खबर सुनाऊं।

इस मुल्कमें अब तो है मेरी अफसरी हुई।
पांचों उंगलियां मेरी हैं घीमें भरी हुई॥

(प्रस्थान)

नवां दृश्य !

स्थान—स्वार्थावलम्बका घर ।

(नैनी और गुप्ताका प्रवेश)

नै०—मिस्टर गुप्ता ! अब तो मैं इस गंवार पतिसे बेजार हो गई।.

गु०—तो फिर क्या करोगी ?

नै०—अरे क्या करूंगी। अगरचे एक पतिसे किसी औरतका निर्वाह नहीं होता तो क्या उसका पुनर्विवाह नहीं होता ?

गु०—होता क्यों नही ? यह तो न्यूलाइटकी सभ्यता है ।

नै०—तो बस, अब मैं भी इस मर्दको छोड़कर किसी दूसरे पतिसे ब्याह करूंगी। क्योंकि जिन्दगीका इसीमें मज़ा है ।

(जड़बुनियादका प्रवेश)

जड़—मिस साहबा ! यह हिन्दुस्तानी नहीं, अंग्रेजी मामला है ।

नै०—अरे तू खाली हाथ आया। होटलसे चाय विस्कुट नही ले आया ?

जड़०—अरे लाता कहांसे;? उसने तो आपको बिल चुकानेके लिये बुलाया है ।

नै०—अच्छा तो तुम यहां बैठो, मैं जाती हूं। अभी बिल चुकाकर आती हूं।

गु०—मगर मिस साहिबा ! इस मकानको कब छोड़ियेगा।

नै०—आज और अभी।

"चाहिये मुझको तो शौहर जो हो ब्यूटीफुल सनम्।
अब मुझे भाता नहीं है ओल्ड फैशनका खसम् ॥"

(गुप्ता और नैनीका प्रस्थान)

स्वा०—स्वार्थम् मूल मन्त्रस्य परमार्थम् सर्वस्व नाशनम् ।
हो चुको ! फैशनकी हद हो चुकी। जोरूने अंग्रेजी क्या पढ़ा मेरी पंडिताईका खातमा कर दिया। भला ! मुझे क्या मालूम था कि अंग्रेजी पढ़ानेका यह नतीजा है।

जड़०—यह हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामला है।

स्वा०—अबे, तेरी मिस साहिबा कहां गई है ?

जड़०—होटलमें चाय पीने।

स्वा०—और तू क्या कर रहा है ?

जड़—मैं अंडे दे रहा हूं।

स्वा०—अबे, कहीं आदमी भी अंडे देता है !

जड़—यह हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामिला है।

प्रो०—(अंदरसे) मि० जड़ बुनियाद ! दरवाजा खोलो।

जड़—कौन है ज़रा जोरसे बोलो।

प्रो०—(अन्दरसे) मैं हूं प्रोप्राइटर एजेन्सी।

जड़—मालूम नहीं कि इंडियन चेक लाया है या नोट करेंसी।

स्वा०—यही है मेरी औरतको फैशनेबुल बनाने वाला। ख़ैर, आने दो देखा जायगा।

(प्रोप्राइटरका जड़० के साथ आना)

प्रो०—मिस साहिबा कहां गई हैं ?

जड़—जहांसे आप आ रहे हैं।

प्रो०—मगर रास्तेमें तो मुलाकात नहीं हुई।

जड़— शायद आप किसी दूसरे रास्तेसे आये होंगे।

प्रो०—अच्छा ! कितनी देरमें आयेंगी ?

जड़—मैं जाता हूं और बुला लाता हूं।

प्रो०—जल्दी जाओ।

जड़—ठहरिये ! मैं जल्दी नहीं जा सकता।

प्रो०—यह क्यों ?

जड़—बात यह है कि मैं बहुत सुस्त रफ्तार हूं। उस दुनियांसे मैं जब इस दुनियांमें आया था तो नौ महीनेका रास्ता अठारह महीनेमें तय किया था।

प्रो०—वाह भाई ! यह अठारह महीनेका पैदाइशी नौकर मिस साहिबाको अच्छा मिला है।

जड़—यह हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामला है।

खा०—(प्रोप्राइटरसे) क्यों बे ! तू इस मकानमें किसकी इजाजतसे घुस पड़ा है ?

प्रो०—ए, सीधी जबानसे बोलो। तुम आदमी है कि गधा है ?

खा०—अबे, गधा नहीं तुम पूरा उल्लूका पठ्ठा है।

जड़—यह हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामला है।

प्रो०—तू तो मिस साहिबाको बुलाने गया था।

जड़—जनाब मिस साहबा खुद तशरीफ ले आई हैं।

प्रो०—हलो मिस नैनी। गुड मौर्निङ्ग !

नैनी—गुड मौर्निङ्ग डीयर।

प्रो०—तुम कहां गई थी ?

नैनी—होटलके बिल चुकाने।

प्रो०—क्यों अभी महीना तो नहीं पूरा हुआ ?

नैनी—जी नहीं बात यह है कि आज मैं यह मकान छोड़ देना चाहती हूं।

स्वा०—अररर यह क्या बकती है ?

प्रो०—क्यों ? इस मकानमें क्या हुआ है ?

नैनी—इस मकानका मालिक मेरे पीछे बुरी तरह पडा है।

प्रो०—तो घबडाती क्यों हो मैं अभी पुलिसको बुलाता हूं। उसे गिरफ्तार करवाता हूं।

स्वा०—अबे ! उल्लूके पट्ठे मेरीही जोरूको बहकाकर मुझे गिरफ्तार करवाता है ?

मु०—जनाब यह न्यूलाइटकी सभ्यता है।

प्रो०—क्यों ? मिस नैनी यही वह मकान मालिक हैं ?

नैनी—जी हां ! यह वही शैतान है।

स्वा०—अरी ओ शैतानकी नानी, तु होशमें है या दीवानी ! अपने मर्दसे ये बेईमानी ?

नैनी—देखो ! मुंह सम्भालकर बात करो वरना पछताओगे, सीधे जेल भेज दिये जाओगे।

स्वा०—अरी तूने मुझे यह अंग्रेजी पढ़ानेका बदला दिया है?

गु०—चुप रहो। यह न्यूलाइटकी सभ्यता है।

स्वा०—हे भगवान! यह क्या हो रहा है? औरत दूसरेके साथ जाती है और मर्द खड़ा २ रो रहा है।

नै०—जड़ बुनियाद!

जड़—इरशाद।

नैनी—अरे सामान उठा देखता क्या है?

जड़—मिस साहवा यह हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामला है।

नैनी—चल चल आफिस जानेका टाइम हो रहा है।

प्रो०—मैं टेक्सी लाता हूं।

जड़...और मैं सामाल बांधता हूं।

नैनी—ओ यू काला आदमी! तू देर क्यों करता है?

जड़—मिस साहवा धीरे २ यह हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामला है।

नै०—गो आन।

जड़—लाया सामान। (जाता हैं)

स्वा०—नैनी! नैनी!! जरा तो अपने पतिका ख्यालकर, अरे यह चार भलेमानुस तमाशा देख रहे हैं, इनका तो लिहाज कर।

नैनी—(धक्का देकर) चल हट उधर।

स्वा०—हे ईश्वर। मैं तुझसे प्रार्थना करता हूं कि इस पब्लिकमें बैठे हुए भलेमानसोंमे जो कोई मेरा तमाशा देखकर हंसे और कहकहा लगाये 'परमात्मा करें उसके घरमें भी ऐसी ही वारदात पेश आये।

जड़—(सामान लाकर) मिस साहबा ! सामान तैयार है ।

प्रो०—टैक्सीको आपका इन्तजार है ।

नै०—चलो मि० गुप्ता चलो ।

गु०—हाँ हाँ चलो ।

स्वा०—अरे औरत जाती है और मर्द यहां खड़ा है ।

गु०—यह न्यू लाइटकी सभ्यता है ।

जड—यह हिन्दुस्तानी नही अंग्रेजी मामला है ।

(नैनी, गुप्ता, प्रो० जड़० प्रस्थान)

स्वा०—अरे मुहल्लेवालो ! जरा तुम्हीं इस इंडियन लेडीको मना लो । अरे कांग्रेस कमेटीवालो ! ज़रा तुम्हीं इस स्वदेशी ब्राह्मणके घरकी लाज बचा लो ।

"पढ़कर इंगलिश स्त्रीने अपनाया दूसरा खसम ।
फैशनोंकी चालमें पड़ कर हुए बरबाद हम ॥
पर न बदलेंगे जो हमने खाई है सच्ची कसम ।
स्वार्थम् मूलमन्त्रस्य परमार्थम सर्वस्व नाशनम् ॥

गाना—

जोरू गवाई हमने, इंगलिश पढ़ा पढ़ाकर ।
दौलत लुटाई हमने फैशन बना बनाकर ॥
औरत मिली थी अच्छी, हमने चलन बिगाड़ा ।
एजेंन्सियोंमें उसको, नौकर, रखा रखाकर ॥
टेढ़ा था मैं जहांमें, सुनलो जहान वालों ।

जोरूने किया सीधा, जूते लगा लगा कर ॥
ऐ एम० ए० बी० ए० वालो, इन लेडियोंसे बचना ।
मारेंगी यह चुड़ैलें तुमको रुला रुला कर ॥

(प्रस्थान)

दसवां दृश्य.

स्थान-उग्रसेनका किला।

(उग्रसेन मय फौजके खड़ा है)

उग्र०—हमारी फौजका बादशाह जमानिशाह अभीतक नहीं आया-
मालूम नहीं कि दुश्मनोंके साथ उसने क्या जाल बिछाया ?

जमा०—(आकर) एक चालमें दुश्मनोंको नीचा दिखाया।

उग्र०—अब क्या करना होगा ?

जमा०—यहूदी फौजको किलेके पिछे ले चलना होगा।

उग्र०—बहुत ठीक। सेनापति! तुम यहां थोड़ी फौज लेकर शत्रुओंका मुकाबिला करो। मैं बकाया फौज लेकर किलेके पीछे जाता हूं।

सेना०—जो आज्ञा।

(यहूदी फौज उग्रसेन और जमानिशाहका जाना—
नैअरे आलमका मय फौजके आना)

नै०—बहादुरो, यही दुश्मनोंकी फौज तैयार है। जंग शुरू कर दो
इनलोगोंके मुंहमें पानीकी जगह खून भरदो।

सब—अल्लाह-हो-अकबर !!!

(दोनों तरफ लड़ाई होना यहूदियोंका भागना—मुसलमानोंका पीछे हटना)

साला०—हुजूर पहिली फौजको फतह कर लिया।

नेअ०—बहुत अच्छा किया। अब किलेके चारों तरफ तोपें लगा
दो और यह सुनहरी दीवारें बारूदको चोटोंसे नीचे गिरादो।
जमा०—(आकर) ठहर जावो।
नेअ०—कौन! यहूदी जमानिशाह।
जमा०—जमानिशाह नहीं बल्कि जहीनुद्दीन। टर्कीका असली।
खैर ख्वाह।

(मुसलमानोंका हथियार फेंक देना)

नै०—सालारजंग! तुम हथियार क्यों छोड़ते हो?
साला०—यह लोग मुसलमान हैं और मुसलमानों पर मुसलमानी
फौज हथियार नहीं उठा सकती।
नै०—क्या सुबूत है कि यह मुसलमान हैं?
सा०—टर्की सुल्तानका शाही फर्मान।
नै०— या खुदा यह क्या हुआ?
जमा०—यह तेरी रिश्वत खोरीकी सज़ा।
नै०—ओ झूठे इन्सान! मैंने किससे रिश्वत ली।
सब०...राजा शाँतिसेनसे।
नै०---आह। दगा! दगा!! भारी दगा!!! ऐ मेरे मुसलमान
भाइयो मैं सच कहता हूं कि रिश्वत लेना मेरे लिये हराम है
यह जो कुछ इलज़ाम है वो झूठा है, इन फरेबी यहूदियोंने
तुमको धोखा देकर लूटा है।
साला०---शाहनामेंको पढ़कर इसलामी फौजका कोई भी आदमी
आपकी बातोंका इतबार नहीं कर सकता।

नै०---अगर ऐसा है तो यह कम उम्र वादशाह तुम जैसे बेईमान मुसलमानोंसे नहीं डरता।

नहीं परवाह अगरचे ये जहां सारा वदल जाये।
मगर ईमानमे हरगिज़ न मेरे दाग़ लग जाये॥
नहीं मैं तुमसे डर कर क़ौलका ईमान दे दूंगा।
मैं अपने मुल्क पर अपनी ये प्यारी जान दे दूंगा॥

जमा०---अरे, वो हवाई पत्ते! क्यों हवाके जोशमें उड़ा जाता है।

"वहेगा ख़ून तेरा टर्कोंके हुक्मे अदूली पर।
ये तेरी रूह होगी मौतमें सर होगा शूली पर॥"

नैअरे०---ओ मुसल्मानों! यहूदी वदमाश एक मुसलमान वादशाह का ख़ून करता है और तुम कुछ नहीं वोलते।

खिलाफ होते हो उससे जिसका हरदम खाके जीते हो।
मुसलमान होके मुसलिम वादशाहका ख़ून पीते हो॥

सा०---सरकार। आपको अपनी वेगुनाहीका सवूत पेश करना चाहिये।

नैअ०---मेरी वेगुनाहीका सवूत उस ख़ुदाके पेशे नज़र है।
है उसकी मुझपर रहमत जिसने पाला और पोसा है।
मुझे ऐसी मुसीवतमें ख़ुदाका ही भरोसा है॥

जमा०---एक शर्तपर अव भी तेरी जां वख्शी की जा सकती है।

नैअरे०---वह शर्त?

जमा०--शर्त यही है कि शांतिसेनको तुमने कहां छिपाकर रखा है यह हमें वता दो। उस मर्दूदको गिरफ्तार करा दो।

उग्र०—(पास जाकर) नैअरे आलम ! क्या ऐसी शर्तं पाकर तुम्हें चूकना चाहिये ।

नै०—ओ कमीने ऐसी शर्त पर मुझे थूकना चाहिये। तुम यह समझते हो, कि मुसलमान फौजके बदल जानेसे मैं उस शेरको पा जाऊंगा। मगर नहीं, मैं अपनी जान देकर भी उसे बचाऊंगा।

'मुसलमानोंको शांतिसेनसे वादा खिलाफी है।
बचानेके लिये उसको मुसलमां एक क़ाफी है॥

जमा०—अभी कमसिन है तू इससे समझदारीमें कच्चा है।
तुझे समझाऊं क्या तू तो अभी नादान बच्चा है॥

नैअ०—समझते हो मुझे तुम दिलमें ये नादान बच्चा है।
मैं हूं बच्चा मगर फिर भी मेरा ईमान सच्चा है॥

जमा०—बहादुरो, इसको गिरफ्तार कर लो।

नैअरे०—ख़बरदार! मुझे गिरफ्तार करना है तो लड़कर गिरफ्तार करो।

जमा—अच्छा तो तैयार हो जा।

नैअरे०—जो आज्ञा।

(दोनोंका लड़ना नैअरे आलमका यहूदीकी तलवार काट कर गिरा देना उग्रसेनका पिस्तौल मारना नैअरे आलमका हाथ जख्मी करना और गिरफ्तार करना)

नैअरे०—शर्म नहीं आती है, एक बच्चेको इतने बहादुर मिलकर शिकार करते हो, तलवारकी लड़ाईमें पिस्तौलका वार!

जमा०—चुप बदज़बान ! सिपाहियो, जाओ, और उसके ख़ेमेसे शांतिसेनको घसीटते हुए ले आवो ।

(सिपाहियोंका जाना)

जमा०—अब देखता हूं तेरा ईमान कहां तक सच्चा रहता है ।

नै०—मेरा ईमान ताजिन्दगी क़ायम रहेगा । अरे इसी ईमान के बदौलत दुश्मने ईमानका ख़ून बहेगा ।

हम अपने मुल्ककी खिदमतमें ये हस्ती मिटाते हैं ।
खुदाके नाम पर हम आज अपना सर कटाते हैं ॥८

(सिपाहयोंका शांतिसेनको पकड़ कर लाना)

शांति०—कौन । नैइअरे आलम !! गिरफ्तार !!!

नै०—हां मेरे बुजुर्गवार । मैं हो गया लाचार ।

उग्र०—क्यों शाँतिसेन ! अब क्या इरादा है ?

शाँ०—शाँतिसेन पहले भी मरनेके लिये तैयार था और अब भी तैयार है ।

उग्र०—अच्छा घबडाओ नहीं । तुम्हारे इरादेको मैं अभी पूरा किए देता हूं ।

जमा०—हां हां बहुत ठीक है । शांतिसेन आपका गुनहगार है और नैइअरे 'आलम हमारा शिकार है । दोनों' एक साथ तलवारें उठायें और जहन्नुम पहुंचायें ।

उग्र०—बेशक ! ऐसा ही करो ।

जमा०—(तलवार निकाल कर) नैअरे आलम अब तुम्हें कौन बचाता हैं ।

(पिस्तौलोंका फायर होना दोनोंके हाथोंसे तलवारें गिर पड़ना—
मन्त्री बुद्धिसेनका मय फौजके दाखिल होना)

मन्त्री—मैं बचाता हूं ।

न यह समझो कि ज़ालिम ही हमेशा फतह पाता है।
अनाथ और बेकसों को जानको ईश्वर बचाता है॥

उग्र०—कौन ? मन्त्री !!

मन्त्री—हां हां तुम्हारा जुल्म तोड़नेका यन्त्री ।

उग्र०—तू भी बुढ़ापेमें जान खोने आया है ?

म०—जान खोने नहीं बल्कि बुढ़ापेका जौहर दिखाने आया हूं।

"तुम जैसे जवांमर्दोंमें बुड्ढेकी शान है ।
बुड्ढा हूं मैं लेकिन मेरी हिम्मत जवान है ॥"

मन्त्री—(मुसलमानी फौजके सर्दारसे) बतलाओ कि तुमने किस क़सूर पर नैइअरे आलमको गिरफ्तार किया ?

साला०—शहंशाह टर्कोंने अपने शाहनामेसे नैइअरे आलमको गुनहगार ठहराया है ।

मन्त्री—वह शाहनामा कहां है ?

साला०—(पत्रदेखकर) यही है ।

मन्त्री—(पत्रदेखकर) यह शाहनामा जाली है । (फाड़कर फेंक देना) असली शाहनामा यहा हैं (पत्र दिखाता है)

सालार—(शाहनामा पढ़ता है)

शाहंशाह नैइअरे आलम !

हमारी बादशाहत टर्कोंसे

यहूदी डाकू भागे हुए हैं और वो हिन्दोस्तान रवाना हो रहे हैं
इन डाकुओंके सर्दारका नाम ज़मानिशाह है उसे जल्दी
गिरफ्तार करो और टर्कीमें हाज़िरे दर्बार करो ॥

"टर्की सुलतान"

साला०— ओ पाजी मुसलमानोंसे यह दग़ाबाजी ! बहादुरो इसे कर लो गिरफ्तार ।

उग्र०—तलवार उठा मुर्दार ।

साला०—हो जा होशियार ।

(युद्ध होना)

मन्त्रीका नैय्यरे आलम और शांतिसेनको बन्धन मुक्त करना ज़मा-
निशाका भागना नैय्यरे आलमकी रस्सीसे गिरफ्तार
होना—उग्रसेन और यहूदी फौजका गिरफ्तार
होना सब लोगोंका भारत वर्षकी जय—बोलना।

ड्राप

तृतीय अंक

प्रथम दृश्य ।

स्थान—जंगलमें कैदखाना ।

(उग्रसेन दीवार फांद कर आता है ।)

उग्र०—आह ! यह मैंने क्या किया ? मैं क्या था और क्या होगया मैं वही था कि जो फूलोंकी सेजमें सोता था । मगर आज एक तिननेकी चटाई भी नसीब नहीं होती । मैं वही हूं कि जिसने अमूल्य वस्त्रोंके सिवाय फटा कपड़ा आंखसे भी नहीं देखा था । मगर आज यह तन पर फटा कुर्त्ता है और फटी धोती ।

तनको ढकनेके लिये तन पर लंगोटी भी नहीं ।
सुखसे खानेके लिये मिलती है रोटी भी नहीं ॥

हाय मैं क्या हो गया था, मेरा ज्ञान कहां चला गया था । मैं दीवाना था ? जरूर !! अगर ऐसा न होता तो अपना राज अपने हाथोंसे क्यों गमाता । इस मुल्कका सम्राट होकर

कैदखानेमें क्यों आता? मगर हाय! मैं ऐसा क्यों हुआ मुझे ऐसा किसने किया? यह बताने वाला कोई नहीं है।

(आवाजके साथ सत्यका निकालना)

सत्य---यह मैं बताऊंगा।

उग्र०—हैं तुम कौन?

सत्य—मैं सत्य हूं जो इस संसारको अपने बलपर चलाता हूं।

उग्र—अच्छा तो मुझे बताओ कि मेरी हालत ऐसी क्यों हुई?

सत्य---तूने अपने हाथोंसे देशको मिट्टीकर अपनी मिट्टी ख़राब की।

उग्र०---हर्गिज नहीं। मैंने देशको तबाह किया इसका प्रमाण बताओ। (धर्मका प्रकट होना)

धर्म—प्रमाणके लिये इधर आंखें उठाओ।

उग्र०—तुम कौन हो?

धर्म—मैं धर्म हूं जो अधर्मियोंको नीचा दिखाता हूं।

उग्र—अच्छा तो प्रमाण दो कि मैंने देशको कैसे मिटाया है।

धर्म—अरे ओ बदहवास इन्सान! जवाब दे, कि स्त्रीसे प्रेम छुड़ाकर अपने पुत्रको पागल किसने बनाया?

उग्र—मैंने।

धर्म—स्वयं क्षत्री होकर अपने क्षत्री भाई शांतिसेनको युद्धमें किसने हराया।

उग्र—मैंने।

धर्म—देशके असली शत्रु जमानिशाह यहूदीको अपना दोस्त किसने बनाया?

उग्र---मैंने।

धम---तो बस !

"जो कहता है वह मरता है यह दुनियाँ कर्मस्थल है।
यह जो कुछ भोगते हो तुम तुम्हारे कर्मका फल है॥

उग्र—यह माना कि यह अनर्थ मुझसे हुआ है मगर इसका जवाब दो, मुझसे यह कर्म कराने वाला शैतान कौन था।

देश—वह अभिमान था। (देश प्रकट होकर)

उग्र---आप कौन हैं ?

देश---मैं देश हूं। जिसे ख्वार किया, लाचार किया, हर तरहसे बेकार किया।

मिटाता था मुझे तू,पर मेरा निस्तार हो गया।
कृपा परमात्माने की, मेरा उद्धार हो गया॥

उग्र—क्षमा करो ऐ वृद्ध स्वरूप देश, मुझे क्षमा करो। मैं नहीं जानता था कि मै तुम्हें तबाह कर रहा हूं नहीं तो ऐसा अपराध मैं कभी नही करता। देखो, मैं तुम्हारे भयसे कांप रहा हूं। कारण कि तुम देवता हो, और मैं पापात्मा दुराचारी इन्सान हूं। तुम ज्ञानी हो मैं अज्ञानी हूं। इस लिये मुझे क्षमा करो।

मेरे अन्यायोंसे तुम अपने दिलको साफ़ करो।
मैं पैर पड़ता हूं मेरा क़सूर माफ़ करो॥

देश—अरे भोले इन्सान ! इसमे तुम्हारा क्या कसूर है यह सब कुछ उस अभिमानका फितूर है।

दोष तुमको देने वाला मूर्ख है अज्ञान है।
तुम नहीं इस पापकी जड़ केवल वह अभिमान है।

उग्र—अगर ऐसा है, तो मुझे आपसे क्यों शत्रुता थी ?

देश—सुनो ! अभिमानने द्वेष वश होकर मुझे मिटा देनेकी कसम खाई थी, और इसीलिये हमारी सारी शक्तियां इस युद्धमें सहायता लेकर आई थीं। तुम विश्वास रक्खो कि वह तुमसे और शांतिसेनसे नहीं, बल्कि मुझसे और अभिमानसे लड़ाई थी। अब तो समझे।

उग्र—हां, हां, समझा, और अच्छी तरह समझा।

देश—क्या समझा ?

उग्र—यही समझा, कि—

"आज तक मुझपर असर अभिमानका मज़बूत था।
मेरे सरपर यही भारतका **"भयंकर-भूत"** था॥

तीनों—हां हां ठीक है।

उग्र—मगर देवता ! अब यह बताओ, कि मैं अपने पापोंका प्रायश्चित किस तरह करूं ?

देश—देखो ! अगर तुम्हें प्रायश्चित करना है, तो राज्य कामना छोड़कर साधुवेश धारण करो और जिस देश पर अत्याचार किया है, उसीका उद्धार करो। इसीसे तुम्हारे पापोंका प्रायश्चित हो जायगा और दिलका मैल धो जायगा।

साधू बनो तो साधना साधो शरीरकी।
बनकर गरीब छोड़ दो आदत अमीरकी॥

थोड़े चनोंसे छोड़ो आदत पूड़ी व खीरको।
इस देशके कारण, बनो सूरत फकीरकी ॥
सत्याग्रहका शस्त्र हो और धर्म मंत्र हो।
कोशिश करो ऐसी कि यह भारत स्वतंत्र हो ॥

उग्र०---मैं ऐसा ही करूंगा। और सारी दुनियांको दिखा दूंगा, कि जो मनुष्य समयके फेरसे हज़ारों बुराइयां कर सकता है; वही ठीक समय आनेपर किस तरह सुधर सकता है। जो उग्रसेन अबतक असत्यवादी और अभिमानी था, वही अब कितना ज्ञानी और सत्यवक्ता है।

"मैं बूढ़े देशके ख़ातिर यह अपनी जान हारूंगा।
बिगाड़ा जिसको था मैंने उसे मैंही सुधारूंगा ॥"

सब---धन्य है धन्य है। बोलो देश भगवानकी जय।

(पुष्प वर्षा—पर्दा गिरता है)

आफिसका कमरा ।

(प्रोप्राइटरका प्रवेश)

प्रो०---तबाह कर डाला इंडियन लेडोने मुझे तबाह कर डाला। दौलतके लिये हरबार मेरा खून निचोड़ती है। रुपया मेरा खर्च होता है और रिश्ता मि० गुप्तासे जोडती है।

(जड़ बुनियाद आकर)

"मिष्टर गुप्ताने इस मौजोको मतवाला कर दिया;
कहके वहनोई मुझे आखिरमें साला कर दिया ॥"

प्रो०---यारो ! यह औरत है या आस्मानी बला है ?

जड़---यह हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामला है ॥

प्रो०---जड़बुनियाद !

जड़---फरियाद ! फरियाद !!

प्रो०---क्यों क्यों, क्या हुआ ?

जड़---अपने रुपयोंके लिये होटलवाला मुझसे लड़ पड़ा।

प्रो०---हाय ! हाय !! होटलका बिल कहांसे चुकाउं, पासमें तो पाई भी नहीं है।

जड़---सरकार मकान बेच डालिये ।

प्रो०---अबे उल्लूकी दुम । अगर मकान बेच डालूं तो अपने

खानेका खर्च क्या तेरे कलेजेसे निकालूं।

जड़---अरे, नहीं नहीं नहीं! खानेका खर्च कलेजेसे निकालना है तो अपने कलेजेसे निकालिये। मेरा कलेजा तो इन चार भले मानसोंके नाम पर ख़ैरात दे डालिये।

प्रो०---क्यों बेटा! मकान बेचवाना तो अच्छा लगता था, मगर कलेजा देना अखरता है।

जड़---यह हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामला है।

प्रो०---अच्छा ले, यह पैसे ले और एक इङ्गलिशमैन खरीद ले आ।

जड़---साहब, इङ्गलिशमैन इण्डियामें नहीं होता वह तो विलायतमें मिलता है।

प्रो०---अबे गधे! इङ्गलिशमैन आदमी नहीं, इङ्गलिशमैन अखबार ले आ।

जड़---अब आया समझके दर्मियानमें। क्यों साहब! इङ्गलिश-मैन न मिले. तो कलकत्ता समाचार लेता आऊं?

प्रो०---छिश...कलकत्ता समाचार मेरे किस कामका?

जड़---हां, हां, क्योंकि वह तो काले आदमियोंके प्रेससे निकलता है।

प्रो०---अबे, जाता है या खड़ा है।

जड़---यह हिन्दुस्तानी नहीं बल्कि अंग्रेजी मामला है।

(प्रस्थान)

प्रो०---बस, मैंने पक्का इरादा कर लिया, कि आज इस इंडियन लेडीको निकाल दूंगा और इस बदमाश गुप्ताको जेलमें

डाल दूंगा।

"बस आज इस इंडियनमेनसे हिसाब अपना खरा करूंगा।

इस साइकलमें हुआ हैं पञ्चर हवा कहां तक भरा करूंगा॥

नैनी०—(आकर) डीयर! तबीयत कैसी है?

प्रो०—मेरी तबीयत अच्छी है।

नै०—आज रुखाईसे बात क्यों करते हो?

प्रो०—दिमाग़का पुर्जा बिगड़ गया है।

नै०—तुम्हारे कहनेका मतलब क्या है?

प्रो०—मेरे कहनेका मतलब मि०सी० आर गुप्ता है।

नै०—यानी।

प्रो०—ओ, शैतानकी नानी। शौहरको छोड़कर यारोंसे छेड़ खानी, फिर मुझसे बातें बनानी।

नै०—देखो, जबान संभालो। जो कहना है खुलासा कह डालो।

प्रो०—खुलासा यही है, कि रुपया मेरा बिगड़ता है और इश्क मि०गुप्तासे लड़ता है। यह मुझसे नहीं देखा जाता।

नै०—अच्छा, तो तुम्हारा इरादा क्या है?

प्रो०—बस मेरा इरादा यही है, कि तुम अपना टीनपाट संभालो और अपने क़दम इस घरसे बाहर निकालो।

नै०—अरे, ओ बेईमान! तू जानता नहीं, कि मैं इंगलिशर्मा औरत हूं। तुझे खाली थोड़े ही छोड़ूंगी। मैं तेरे ऊपर दावा करूंगी और आईन इजलासमें तेरा सर तोड़ूंगी।

प्रो०—अरो! जा बड़ी आई सर तोड़नेवाली,इस इजलासका मैंजि

स्ट्रेट इण्डियन लेडी नहीं है,बल्कि पेपर इंगलिशमैंन है।

जड़०—(आकर) हां हां साहब ! पेपर इङ्गलिशमैंन है।

प्रो०—अबे ! तुझे किसने बुलाया।

जड़०—अभी किस उल्लूके पट्ठेने कहा था कि पेपर इङ्गलिशमैंन है

प्रो०—तू पाजी है बड़ा बेवकूफ है और गधा है।

गुप्ता०—(आकर) हैं हैं मि० प्रोप्राइटर यह क्या झगड़ा है।

जड़०—यह हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामिला है।

प्रो०—वेल मि० गुप्ता तुम एजेंसीका हिसाब करके फौरन मेरे यहां से निकल जावो।

गुप्ता०—साहब तीन महीनेकी तनखाह चुकावो।

प्रो०—यह सब हम कुछ नहीं जानते तुम हिसाब न करोगे तो हम तुमको पुलिसके हवाले कर देंगे।

गु०—अरे, ये धमकी किसी भोलेभाले ब्राह्मणको देना। जानते नहीं, कि मैं बनियेका बच्चा हूं।

प्रो०—अच्छा, तो मैं अभी पुलिसको बुलाता हूं। (प्रस्थान)

गु०—अरे जा, जा, तेरे पुलिस बुलानेसे होता क्या है ?

जड़०—मिस साहबा ! सम्हल जाइये यह हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामिला है।

नै०—मि० गुप्ता, यह जडबुनियाद सच कहता है।

गुप्ता०—तो अब क्या करूं ?

नै०—अरे, जल्दी टेक्सी लाओ और दिल्ली एक्सप्रेसमें सवार हो जावो।

गुप्ता०—अच्छा तो मैं टैक्सी लाता हूं। (जाना)

नै०—जड़बुनिहाद! हमारा सामान बांधो।

जड़०—बहुत अच्छा। (जाना)

नै०—मैं भी कैसी चालाक औरत हूं। कि पहिले मर्दको छोड़ा, तो प्रोप्राइटरसे रिश्ता जोड़ा। जब इसकी हालत बिगड़ी तो मि० गुप्ताके मालपर नज़र पडी। अरे, इस समयमें भी कैसी सत्ता है कि एक सतीका पहला दूसरा और यह तीसरा विवाह होता है।

गु०—यह न्यू लाइटकी सभ्यता है।

जड़०—यह हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेज़ी मामला है।

गु०—टैक्सी आगई?

जड़०—सामान भी लद गया।

नै०—तो अब किसको मुश्ताकी है।

जड़०—सिर्फ कलकत्तेसे आपका पार्सल होना बाकी है।

नै०-अच्छा तो आजसे घरको और इस कलकत्तेको अलविदा है।

गु०—यह न्यूलाइटकी सभ्यता है।

जड़०—यह हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामला है।

तीनोंका प्रस्थान—प्रोप्राइटरका पुलिसके साथ प्रवेश

प्रो०—लीजिये। जमादार साहब, पकड़ लीजिये।

जमा०—क्या पकड़ लूं, भाई यहां कोई हो भी।

प्रो०—(देखकर) अररर, यह तो यहांसे फरार हो गया। जमादार साहब, आपको मैं जिसको पकड़नेके लिये लाया

थे, वह तो गायब हो गया।

जमा०—गायब हो गया। चलो मामला ख़लास हुआ।

प्रो०—अरे, आप ऐसा क्यों कहते हैं?

जमा०—अरे भाई ठीक कहते हो। अगर कहीं वह पकड़ा जाता झूठा सबूत जुटाना पड़ता तो उसके ऊपर मुकद्दमा चलाना पड़ता आख़िर यह सब मुसीबत ही थी न?

प्रो०—साहब। मुसीबतके धोखे न रहिये। आपको उसे जरूर पकड़ना होगा।

जमा०—ऐसा है तो आपको उसके ऊपर वारण्ट करना होगा।

प्रो०—मैं अभी उसके ऊपर वारण्ट करवाता हूं।

जमा०—करवाइये, करवाइये, मैं अभी पकड़नेके लिये आता हूं।

(प्रस्थान)

(पर्दा गिरता है)
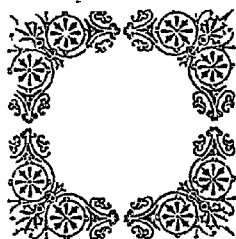
जंगल—रास्ता

(स्वार्थावलम्ब और रूपसेनका प्रवेश)

रूप०—कहाँ है ? कहाँ है ? मुझे पागल बनाने वाली, मुझे प्रेम, सिखाने वाली मेरे हृदयकी रूपवती कुमारी रती कहाँ है ?

स्वा०—अरे भाई, तुम्हारी रतीने तो कर दी यह दुर्गति मगर फिर भी रतीकी याद नहीं छूटती ?

रूप०—मित्र ? क्या मुझे अब रती न मिलेगी।

स्वा०—अरे रती तो मिलेगी, मगर मेरी फैशनेबुल जोरू कहाँ मिलेगी ?

रूप०—क्या तुम्हारी स्त्री भी तुम्हारे पास नहीं ?

स्वा०—उसके मिलनेकी कोई आशा नहीं।

रूप०—शायद तुम्हें भी विरहाग्निने सताया है ?

स्वा०—अजी, मुझे तो जोरूकी जुदाईका बुखार चढ़ आया है।

रूप०—मेरा दिल कहता है कि रतीकी मृत्यु नहीं हुई।

स्वा०—और मेरा दिल कहता है कि नैनी अभी कलकत्ता छोड़कर कहीं नही गई।

रूप०—दिलके जो अरमान थे दिलमें हमारे रह गये।

स्वा०—औरतें गायब हुईं हम तुम कुंवारे रह गये ॥

रूप०—किया था प्यार रत्नोको यह दिल फिदा करके ।

हाय इस भाग्यने मारा मुझे जुदा करके ॥

स्वा०—मेरी औरत भगी गुप्ता जीको भंडुवा करके ।

रांड़ने छोड़ दिया पण्डितको रंडुवा करके ॥

रूप०—जिसके लिये मैंने राज्य छोड़ा, समाज छोड़ा, सिंहासन और ताज छोड़ा, अपने पिता पर प्रहार किया, मित्र द्रोही होना स्वीकार किया, वही रत्नी न मिली।

हाय इस नीच रूपसेन पर कृपा कर दे ।

मेरे अपराधोंको परमात्मा क्षमा कर दे ॥

(उग्रसेनका प्रवेश)

उग्र०—हां, हाँ, क्षमा कर दे । कुमार रूपसेन तू अपने पापी पिता को क्षमा करदे ।

रूप०—कौन ? मेरे पिता ?

उग्र०—हां पुत्र ! तुम्हारा अन्यायी पिता ।

स्वा०—बापरे । मैं तो मरा ।

रूप०—पिता जी मेरे अपराधोंको क्षमा कीजिये क्योंकि मैंने प्रेम के वशीभूत होकर आपसे शत्रुता की थी ।

उग्र०—पुत्र इसमें तुम्हारी कोई ग़लती नहीं थी यह तो सब पापात्मा अभिमानकी चालाकी थी ।

स्वा०—सरकार ! इस सेवककी तरफसे भी अपने दिलको साफ़ कीजिये और मेरा क़सूर माफ़ कीजिये ।

उग्र०—पंडितजी ! इसमें किसीका दोष नहीं है क्योंकि अवश्य-मेव भोगतव्यम् कर्मफल शुभा शुभम् ।

स्वा०—स्वार्थम मूलमन्त्रस्य परमार्थम सर्वस्वनाशनम् ।

उग्र०—पुत्र रूपसेन ! उस परमात्माको अनेक धन्यवाद है कि जिसने मेरे हाथोंसे तुम्हारा सर्वनाश कराकर फिर तुम्हें मुझसे मिलाया अब स्वार्थावलम्बके साथ शीघ्र राज्यमें जाओ और सिंहासनकी शोभा बढाओ ।

रूप०—पिताजी ! जिसके लिये मैंने राज्य सुख त्यागकर वैराग्य लिया , जब वह रतीही नहीं रही तो रूप सिंहासनपर कैसे बैठेगा ?

उग्र०—नहीं पुत्र तुम भूलते हो । कुमार रूपसेन सिंहासनपर बैठेगा और रतीके साथ बैठेगा ।

रू०—तो क्या रती अभीतक जिन्दा है ?

उग्र०—हां हां जिन्दा है । जिस समय रतीके मरनेका वक्त आया था तो तुम्हींने मेरे पिस्तौल मारकर उसे बचाया था ।

रूप०—मुझे कुछ भी याद नहीं ।

स्वा०—अरे याद क्यों नहीं मैंने भी तो पिस्तौलका घोड़ा चढ़ाया था ।

उग्र०—उस समय तुम प्रेममें दीवाने थे । इसीलिये यह बात भूल गई ।

रू०—हे परमात्मा तेरी लीला अपार है ।

स्वा०—ऐसी बेहोशी पर हजार धिक्कार है ।

उ०—अब तुम्हारे लिये शांतिसेन और रतीकुमारी दोनों ही व्याकुल होरहे है। इसलिये राज्यमें जाकर उन लोगोंका क्लेश मिटाओ और अपने कलंकी पिताकी अब कीर्त्तिको उज्वल बनाओ।

रूप०—मुझे आपकी आज्ञा स्वीकार है।

उ०—पंडितजी! आप भी जाइये।

स्वा०—सेवक तो सरकारका तावेदार है।

उ०—अब मैं जाता हूं और किसी घोर जगलमें बैठकर परमात्मा के नामसे अपने प्रायश्चितोंको दूर करनेका उपाय करता हूं। तुम्हारे लिये अन्तिम आशीर्वाद।

(प्रस्थान)

रूप०—अ:हा अब मुझे मालूम हुआ कि

भला हो या बुरा हो फिर भी अपना अन्न दाता है।
पिता ही पुत्रके संकट समय पर काम आता है॥

स्वा०—हम हैं नौदिनके भूखे पर नहीं कोई खिलाता है॥
पड़े हैं पेटमे बल और कलेजा मुंहको आता है॥

इसीलिये तो कहा है कि स्वार्थम मूलमन्त्रस्य परमार्थम् सर्वस्व नाशनम्। (प्रस्थान)

(पर्दा पड़ता है)

चौथा दृश्य !

स्थान—गुप्ताका मकान

(नैनीका गाते हुए आना)

गाना—

हाय मज़ा दुनियांका मैंने न पाया।
तीन मर्दोंको शौहर बनाया। मगर फिर भी न दिलको
चैन आया आख़िरी इश्कसे इस दिलको बचायें क्यों कर।
हाय जो हाल है दिलका वो सुनायें क्यों कर॥
क्या कहें किससे कहें कोई तो सुनता ही नहीं।
अपनी फूटी हुई तक्दीर बनायें क्यों कर॥
हुआ घरसे दौलतका सफाया॥ हाय मज़ा।

हाय हाय पतिको छोड़कर तीन मर्दोंसे व्याह हुआ। धर्म कर्म तबाह हुआ मगर हमारे लिये तो वही रफ्तारगी जो पहले थी सो अब भी है। एक या'औरोंके'लिये चाय विस्कुट और केक है।

लेकिन हमारी मुर्गीकी बस टांग एक है॥

अरे जड़ बुनियाद!

जड़०—सरकार।

नैनी०—क्या करता है?

जड़०—जूते साफ़ करता हूं

नैनी०—अच्छा! यहां आवो!

जड़०—आया। (आकर) कहिये।

नैनी०—देखो। आज तक मैंने तुम्हें नौकर रखा था मगर अब तुम मुझे नौकर रख लो।

जड़०—यह किस लिये?

नैनी०—इसलिये कि हमारा दिवाला निकल गया है।

जड़०—मिस साहिबा! यह हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामिला है।

गुसा—(आकर) नैनी! नैनी! मुझे बचावो।

नैनी०—क्यों क्यों क्या मामिला है।

गुसा०—प्रोप्राइटरने मेरे ऊपर वारंट किया है। पुलिस इंस्पेक्टर दर्वाजे पर खड़ा है।

नैनी०—अरे हाय हाय। हिन्दुस्तानी घाघरा होता तो तुम्हें छिपा भी लेती मगर इस अंग्रेजी गौनमें छिपनेको जगह कहां।

जड़०—जी हां। यह हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रजी मामला है।

गु०—अरे मैं तो मारा जाता हूं।

जड़०—मैं कफन सिलाकर लाता हूं (प्रस्थान)

गुसा—नैनी, मैं दूसरे दर्वाजेसे निकल जाता हूं। कोई पूछे तो कह देना कि गुसा भाग गया।

नै०—अच्छा जाओ।

जड़०—(आकर) सरकार।

गु०—क्या है मुर्दार।

जड़—इस दरवाजेसे कांग्रेसवालोंका मजमा आ रहा है।

गु० —गजब हो गया।

नौ०—कांग्रेसका मजमा क्यों आ रहा है।

गु०—अरे उसका भी तो रुपया मैंने हजम कर लिया है।

नौ०—हे करतार!

प्रो०—(आकर) कर लो गिरफतार।

कांग्रेस कमेटीके सदस्य—(आकर) यही है पब्लिकको धोखा देनेवाला।

प्रो०—यही है एजेन्सीका रुपया लेनेवाला।

जमादार—क्यों मिस्टर सी० आर० गुप्ता क्या विचार है।

गु०—सेवक जेल चलनेको तैयार है।

नौ०—हाय हाय मैं क्या करूं।

जड़—विधवा आश्रममें जाकर हरी नामको माला फेरो।

नौ०—पेट कौन पालेगा।

जड़०—पेटका खर्चा तो चर्खा निकालेगा।

नौ०—अच्छा तो मुझे वहीं पहुंचाओ।

जड़०—मेरे साथ आओ।

नौ०—चलो। "इस सुहागिन पर रंडापेका हुआ अधिकार है।
ऐसे फेशन पर सदा धिक्कार है धिक्कार है॥

(जड़ बुनियादका प्रस्थान)

गु०—क्या मैं जानता था कि मुझे जेल जाना बदा है।

जड़०—यह हिन्दुस्तानी नहीं अंग्रेजी मामला है।

गु०—"मेरी सब चालाकियोंका अब देवाला हो गया।
दिल तो काला था ही मेरा मुंह भी काला हो गया॥

(प्रस्थान)

पर्दा गिरता है।

पांचवां दृश्य

स्थान—आख़िरी दर्बार
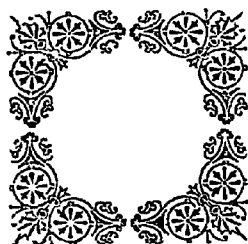
(मन्त्री—शांतिसेन—नैय्यरे आलम—रूपसेन—रती सब उपस्थित हैं—सिंहासन लगा हुआ है। ताज रखा है)

मं०—आज बड़े हर्षका समय है कि जिस रूप और रतीके लिये इतना घोर विप्लव मच गया वही दोनों प्रेमी पुरुष इस शुभ स्थानमें उपस्थित हैं। अतएव शांतिसेनजी आप अपनी कन्याका कुमारके साथ पाणि ग्रहण करायें और कुमारको उग्रनगरका राजा बनायें।

शां०—जो आज्ञा ! (रूपवतीका हाथ मिलाकर)

जबतक हो रविकी कला, गगन उदय हो इन्दु।
अविचल हो दाम्पत्यका, प्रेम सुधारस "बिन्दु" ॥

सब—धन्य है ! धन्य है !! राजकुमार रूपसेनको धन्य है !!!

मंत्री—(कुमारको सिंहासनपर बैठाकर)

प्रमुदित हो पुरकी प्रजा, हर्षित रहे समाज।
रूप राशि के शीश पर, अर्पण है यह ताज ॥

सब—जय हो ! जय हो !! राजा रूपसेनकी जय हो !

स्वा०—सरकार। विवाह भी कर लिया और ताज भी पहन लिया मगर इस ब्राह्मण को तो कुछ न दिया।

शां०—भला तुम्हें क्या चाहिये ?

स्वा०—सरकार ! मुझे विवाह के लिये एक कन्या चाहिये ?

मं०— तुम्हारी स्त्री क्या हुई ?

स्वा०—वह तो भाग गई !

मं०—यह कैसे ?

स्वा०—यह ऐसे !! "उसको अंग्रेजी पढ़ाई हमने देदे कर रक़म।

फैशनेबुल बन गई तो कर लिया दूजा खसम ॥

टापते ही रह गये स्वारथके वशमें पड़ के हम।

स्वार्थम् मूल मंत्रस्य परमार्थम सर्वस्व नाशनम् ।

शां०—अच्छा तो आपके योग्य मेरे यहां एक कन्या है।

स्वा०—उसका नाम क्या है ?

शां०—उसका नाम है चम्पा।

स्वा०—क्या कहा चम्पा हे भगवान् अगर चम्पाकी हो जाय अनु-कम्पा तो ब्राह्मण फूलकर हो जाय पम्पा।

शां०—मगर आपको एक काम करना होगा।

स्वा०—वह क्या ?

शां०—चम्पाका विवाह करके स्वार्थका० मन्त्र छोड़ना होगा।

स्वा०—अरे महाराज ! विवाहतो कराइये इसको मैं छोड़ दूंगा।

शां०—कर्मचारी, जावो, और महलसे चम्पाको बुला लाओ।

कर्मचारी—जो आज्ञा. (प्रस्थान)

मंत्री —अच्छा मै जाता हूं और नगरमें राज्योत्सवका प्रवन्ध कराता हूं। (प्रस्थान)

शां०—पधारिये। कर्मचारीका चम्पाको लेकर आना

शां०—आइये महाराज! चम्पा और स्वार्थकाहाथमिलाकर

यह ब्राह्मण ब्राह्मणीकी नाव भवसागर में छोड़ी है।

सदा आधार ईश्वरके यह वर कन्याको जोड़ी है॥

स्वा०—दहीका मैं वड़ा हूं और ये वेसनकी पकौड़ी है।

वहादुर वीर भारतका मैं घोडा हूं ये घोड़ी है॥

सब—धन्य है, धन्य है।

शां०—पण्डितजी! अब आप अपना स्वार्थ मंत्र त्याग कीजिये।

स्वा०—जो आज्ञा।

हाय स्वार्थरथमें पड़े तो कर चुके खोटे करम।

छिन गई हिन्दूका औरत खो गया हिन्दू धरम॥

आप सबके सामने हम तोड़ते अपनी कसम।

परमार्थम् मूल मन्त्रस्य स्वार्थम सर्वस्व नाशनम्

(देश—अभिमानका प्रवेश)

देश०—क्यों अभिमान अब भी हारेको नहो।

अभि०—इस हार जीतका मध्यस्थ कौन है!

देश—मध्यस्थ इसका सत्यताका मुख्य मन्त्र है।

व्यापक है जो सभीमें नाम उसका "स्वतन्त्र" है॥

अभिमान—वह कहां है?

देश—वह यहां है। आवाजके साथ स्वतन्त्रका प्रगट होना

स्वतन्त्र—हमेशा जीत है उसकी जिसे एक सत्य प्यारा है।

खुले शब्दोंमें मैं कहता हूं कि अभिमान हारा है॥

अभि०—ऐ स्वतंत्र देवता। मैं तुम्हें संसार व्यापी जानता हूं इस लिये भारत वर्षको अपना सिरभीझुकाकर अपनी हार मानता हूं

स्वतं०—संसार वालोंको इससे उपदेश ग्रहण करना चाहिये।

हो चुका अभिमान कैदी एक कच्चे सूतका।

सरझुका है आज भारतके "भयंकर भूतका"

सब—जय हो! जय हो! स्वतन्त्र भगवानकी जय हो!!!

ड्राप

स्वतन्त्र—होचुका अभिमान कैदी एक कच्चे सूतका।
सर झुका है आज भारतके भयंकर भूतका॥

देखिये [पृष्ठ संख्या १६६

नाट्य ग्रन्थ-मालाका प्रथम पुष्प—

पाप रेखायें दुखीके अश्रुओंसे धुल गईं।

बन्द थी आंखें अभीतक हिन्दकी वह खुल गईं॥

नाटक क्या है? आजकलका सच्चा चित्र है। इसकी प्रत्येक घटनायें विचित्र हैं। यह नाटक अन्धेरेमें भटकते हुए देशवासियोंको पवित्र मार्ग दिखानेके लिये एक जलती हुई मशाल है। इसके प्रत्येक दृश्य आपको चकित कर देंगे और आपके हृदयमें देशानुराग कूट-कूटकर भर देंगे। इसके हास्य-रस युक्त शिक्षाप्रद दृश्य हंसाते हंसाते आपकी नस-नसमें देशाभिमानकी बिजली दौड़ा देंगे। इसमें नाट्य कला-कौशलकी भरमार है, यानी यह रंगमंचका शृङ्गार है। नाट्य संस्थाओं और पुस्तकालयोंके लिये यह नाटक बहुत ही लाभप्रद है। हिन्द, स्वतन्त्रता, मिस्टर फैशन नवीनता, सत्यपाल, अत्याचार, दुर्भिक्ष, रोगराज, अन्यायसिंह प्रभृति पात्रोंकी बातें सुन मुर्दा दिलोंमें भी एक विचित्र परिवर्तन हो जायगा। बढ़िया एण्टिक कागज पर छपी हुई कई सुन्दर चित्रोंसे सुसज्जित पुस्तकका मूल्य १)

नाट्य ग्रन्थमालाका द्वितीय पुष्प—

छोड़ घरकी नारी जो, निज कर्मका मारण करें।
क्यों न उनकी नारियां, वेश्या-वृत्ति धारण करें॥

नाटक क्या है? वर्तमान समयका चित्र दिखाने वाला अद्‌भुत चमत्कारिक आइना है। इसके हरएक दृश्य आपका चित्ताकर्षित करेंगे और समयानुकूल बिना रुलाये और हंसाये न रहेंगे। यदि आप सरस्वतीकी पतिपरायणता और स्वामि-भक्ति, कमलावतीका धर्मपालन तथा भ्रातृ-स्नेह, हीरालालके वेश्या गमन का नतीजा, दुष्ट अभयचन्द तथा उसके साथियोंका भीषण अत्याचार और अन्त परिणाम, मुन्ना वेश्याका प्रेम-जाल तथा उसके गुप्त विचार, राय भड़कचन्द बहादुरके गृहकी विचित्र कहानी, नाटकके नायक रामदासकी कर्तव्य परायणता तथा महान आदर्श स्वामि-भक्ति और उसका पुरस्कार देखना चाहते हों तो एकबार इस पुस्तकको अवश्य अवलोकन करें। अनेक रंग बिरंगे चित्रोंसे सुसज्जित पुस्तकका मूल्य १।) रेशमी जिल्द १॥)

प्रहसन-वाटिका प्रथम पुष्प—

रेशमी रूमाल

नाटक

प्रेमही एक रत्न हैं और प्रेममय संसार है।
प्रेमका करते जो आदर, उनका बेड़ापार है॥

नाटक क्या है? मनोरञ्जनकी पूर्ण सामग्री है। प्रेमकी साक्षात प्रतिमा है। करुण-क्रन्दनका आश्चर्यकारी पर्वत है। अनेक नाट्य गुणोंसे यह नाटक परिपूर्ण है। मिष्टर शेटोका अहंकार पूर्ण बर्ताव; निताईको वृद्धावस्थामें शादीकी लालसा, शान्तिका प्रशंशनीय प्रेम, रूमाल पर कल्पित आडम्बर, जामिनी नामपर सन्देह कर परस्पर पति-पत्नीमे फूटका बीज, नपरा नामक दासीका भीषण षडयन्त्र, अन्तमें रेशमी रूमाल तथा जामिनीका भण्डाफोड़ आदि दृश्य देखकर आप चकित हो जांयगे। इस प्रहसनको कलकत्तेकी प्रायः सभी कम्पनियां समय समयपर खेल कर जनताका खूबही मनोरंजन करतीं और साथ ही लाखों रुपये पैदा करती हैं। इसकी बंधाई, छपाई और कवरका चित्र ही देखकर आपका दाम वसूल हो जायगा। रंग बिरंगे चित्रोंसे सुसज्जित पुस्तकका मूल्य ॥)

प्रहसन वाटिकाका द्वितीय पुष्प—

धर्मावतार !

तेरे सीनेमें हिन्दू-धर्मका घुसना छुरा होगा।
बुराई गर करेगा तू तेरे हक में बुरा होगा॥

❋ ❋ ❋ ❋

कहां है वे जो कहते हैं कि हिन्दू धर्म हेटा है।
वही कह दें कि ये मुसलिम है या राक्षसका बेटा हैं।

धर्मावतारका दूसरा नाम 'लट्ठमार' है। घुरहू चमारका 'इहौ परमेसरके माया है' और पं० पवित्राचार्यका 'यह भी हिन्दू धर-मका ज्ञान है।" नामक पद समय-समयपर बड़ा ही आनन्द लाता है। इस प्रहसनमें अछूतोद्धारका अनेक सिध्दान्तों द्वारा रोचकताके साथ समर्थन किया गया है। पण्डित पवित्राचार्य का पाखण्ड घुरहू चमारको देहाती भाषा तथा उसका हिन्दू धर्म पर आदर्श प्रेम। मुसलमान गुण्डेकी छीछालेदर। आर्यसमाज और पवित्राचार्यका शास्त्रार्थ, पवित्राचार्यकी कन्या सुशीलाका जातिच्युत होनेपर घुरहूके साथ जातिके उत्थान को बीड़ा उठाना और सफलीभूत होना। प्रहसन बड़ाही मजेदार है, शिक्षाके साथ ही-साथ इसमें मनोरंजन भी कूट-कूटकर भरा है। अनेक रंग विरंगे चित्रोंसे परिपूर्ण पुस्तकका मूल्य ॥)' मात्र।

स्त्री चरित्रका भण्डाफोड़—

रमणी-रहस्य

उपन्यास क्या है, मानो शिक्षाओंका जीता जागता चित्र हैं। यह पुस्तक हिन्दी साहित्यमें बिलकुल नई, बेजोड़ और अपने ढंगकी निराली है। इसकी घटना बड़ी मनोरञ्जक और वर्णन-शैली अत्यन्त हृदयग्राही है। यह आश्चर्यजनक व्यापारोंसे भरा और लोमहर्षण भीषण काण्डोंमें डूबा हुआ इतना दिलचस्प और अनूठा उपन्यास है कि पढ़ते-पढ़ते कभी आश्चर्यित, रोमाञ्चित और कभी पुलकित हो जाना पड़ता है। इसमें चोरी, बदमाशी डकैती, जालसाजी, खून खराबी तथा जासूसी आदि अनेक रोवें खड़े कर देनेवाली घटनायें आदिसे अन्ततक भरी हैं।

इसमें रमणी रहस्यका पूरा भण्डाफोड है,एक ओर प्रेम और सतीत्वकी साक्षात प्रतिमा सुशीला और दूसरी ओर निष्ठुरता तथा जालसाजिनी पथ-भ्रष्टा सुन्दरीका चरित्र बड़ीही उत्तमतासे चरित्र किया गया है। दोनोंकी समतामें आकाश पातालका अन्तर है, यह बड़ीही अद्भुत और विचित्र घटनाओं से बताया गया हैं। ऐसी रहस्य भरी और भेद-भरी पुस्तकको पढ़कर लेखककी लेखनी चूम लेनेको जी चाहता है। हमारी निजी सलाह है कि इस पुस्तकको एकबार अवश्य पढ़ें। लगभग ५५० पृष्ठ और रंग बिरंगे १४ चित्रोंसे परिपूर्ण पुस्तकका मूल्य ३॥) रेशमी जिल्द ४।)

वीरताका अलौकिक अलंकार—

वीर रमणी ।

यह एक प्रेमरस, वीरता, और निष्ठुरतासे चुहचुहाता हुआ कल्पित ऐतिहासिक उपन्यास है। उपन्यासोंमें शायदही कोई उपन्यास इसकी बराबरी कर सके। यह उपन्यास शृंगार करुणा, विभत्स, करुण-क्रन्दन, परोपकार और प्रेमका भण्डार कहा जा सकता है। प्रेमीको प्रेमलीला, विलासीकी विलासिता, अत्याचारीका भयंकर अत्याचार, दुखियोंका आर्त्तनाद, बहादुरकी बहादुरी एवं रमणियोंकी धर्म परायणता, धैर्य तथा उनकी वीरता देख आप प्रसन्न हो जायंगे। यह उपन्यास ऐतिहासिक भाव को लेते हुए कल्पित रूपमें परिणत किया गया है। फ्रान्समें नेपोलियनको, इंगलैण्डमें क्रामवेलको, अमेरिकामें जार्जवाशिंगटनको, इटलीमें ग्यरीवाल्डीको, राजस्थानमें प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रतापसिंहको और महाराष्ट्रमें जो सम्मान छत्रपति शिवाजीको प्राप्त है वही सम्मान हमारे इस उपन्यासमें वीरवर वच्छलसिंहको है। इस वीरकी कार्य्य कुशलता देखकर आप दंग हो जायंगे। वीर रमणियोंके करमे रक्त-रञ्जित तलवारें एवं दुष्टों के कटे सर देखकर आपके रोंगटे खड़े हो जायंगे। अनेक रंग-बिरंगे चित्रोंसे परिपूर्ण पुस्तकका मूल्य १।)

आदर्श रमणी-रत्न-मालाका नवम पुष्प—

सती सुलोचना।

यह आर्यावर्त्त के दक्षिण स्थित लंका द्वीप के वीराग्रगण्य विजयी सम्राट रावण के सुयोग्य पुत्र महापराक्रमी इन्द्रजीत मेघनाद की पत्नी या नागलोक के राजा की कन्या "सती सुलोचना" है। यह उस बहादुर की स्त्री है, जिस के भय से तीनों लोक और चौदहों भुवन थर-थर कापते थे, जिस की प्रचण्ड वीरता के कारण इन्द्रादि देवताओं को सम्राट रावण का गुलाम होना पड़ा था। यह पुस्तक उसी की प्रिय पत्नी के अगाध पातिव्रत का द्योतक है। इसमें सती सुलोचना के उन पाण्डित्य पूर्ण विचारों का धारा प्रवाह है, जिस में भारतीय नारियां स्नान कर पवित्र हो सकती है। सुलोचना पतिपरायणता, नारी-कर्तव्य सती-धर्म और विश्व-प्रेम की जगमगाती हुई उज्वल और अमूल्य प्रतिमा है। इसके पढ़ने से इतिहास, पुराण और उपन्यास आदि अनेक विषयोंका आनन्द आता है। इस के पढ़ने से पुरुष वीर, धीर, संयमी और सदाचारी होंगे तथा स्त्रियाँ पतिव्रता और धर्म परायण बनकर अपने कुल की मर्यादा को गौरवान्वित करेंगी। पुस्तक बहू-बेटियों और बालक-बालिकाओं को उपहार में देने योग्य सर्वाङ्ग सुन्दर है। अनेक रंग बिरंगे चित्रों से सुशोभित पुस्तका मूल्य १)

स्वास्थ्य लाभका विचित्र अविष्कार

जल चिकित्सा !

या

हाइड्रो पैथी

लीजिये ! अब आपको वैद्यों, डाक्टरों और हकीमोंका मुंह न ताकना पड़ेगा। उन महाप्रभुओंकी कदम पोशीमें अपने धनकी धारा-प्रवाह न करना पड़ेगा। आप स्वतः मिट्टी, जल, उत्ताप (आग या धूप) वायु और आकाशकी सहायतासे जर्मन डाक्टर लुईकूने, विलसन, जूस्ट, फादरनिय, अमेरिकन डाक्टर लिण्डलेयर योगी रामचरक और महात्मा गान्धी आदि द्वारा दिखाये हुए पथके आधार पर मामूली सर्दी, बुखारसे लेकर दुसाध्य क्षयकास कैन्सर, न्यूमोनिया, डिपथोरिया, टाइफायड इत्यादि अनेक भीषण बीमारियोंकी स्वाभाविक चिकित्सा बिना दवायी और बिना चीर फाड़के सहज ही कर सकेंगे। हजारों प्रशंसा पत्र इस पुस्तक पर प्राप्त हुए हैं। अनेक प्रशंसा पत्र पुस्तक के अन्त में भी दिये गये हैं। पुस्तक प्रत्येक मनुष्योंके लिये उपयोगी है। यदि आप स्वास्थ्यमय जीवन चाहते हैं तो इस पुस्तको जरूर मंगाइये। मूल्य १॥) तीनों भागका ३॥) मात्र।

रुपये कमानेकी मशीन ।

इस पुस्तकमें खुशबूदार तेल, साबुन, पोमेटस, लाईमजूस, कास्मेटिक पोमेन्ट, खुशबूदार टिकिया, ओटो, सेन्ट, लवेण्डर, गुलाब जल, कोलन, वाटर, फूलोंसे इत्र निकालना, सब प्रकारकी रोशनाइयां मारकिङ्ग इन्क, वार्निस, पालिश, पेपर, दाँतमञ्जन, खिजाव, सुगन्धित पौडर, ताम्बुल विहार, पानका मशाला, मशालेकी सुपारी, शर्बत चांदी सोनाकी कलई, काला नमक और अनेक प्रकारकी ताक़ती और नामर्दोंकी धातु-पुष्ट दवा इत्यादि बनानेकी विधियां लिखी गई है। इस पुस्तककी प्रशंसा भारतके प्रायः प्रत्येक पत्रोंने मुक्त कण्ठसे की है। जो लोग टके-टकेकी नौकरीके लिये गली-गली मारे-मारे फिरते हैं, वे यदि इस पुस्तकमें बतलायी विधिके अनुसार तेल साबुन इत्यादि बनाकर व्यापार करें तो सैकड़ों रुपया महीना मजेमें पैदा कर सकते हैं। यह पुस्तक अमीरों और शौकिनोंके भी बड़े कामकी है। इस पुस्तक द्वारा आज अनेकों सज्जन अपना निजी व्यापार खोल बैठे हैं और काफी आमदनी कर रहे हैं। कितने ही खुद अपने लिये साफ और शुद्ध तेल-साबुन एवं दवा बनाकर लाभ उठा रहे हैं। हमारा आपसे अनुरोध हैं कि इस पुस्तकको मगाकर आप अपने पास अवश्य रखिये। इस पुस्तकके सहारे आप द्वारा दूसरेका भी भला हो जायगा। शीघ्रता करें, बहुत कम कापियां बची है, मूल्य १॥) रेशमी जिल्द २)